|| श्री शासनपति महावीराय नमः ||
|| गुरुदेव प्रभु श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरिगुरुभ्यो नमः ||

धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रतीक

शाश्वत धर्म

पुण्य सम्राट

संस्थापक–श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. | मार्च–2020

दिव्याशीष–लोकसंत जैनाचार्य श्रीमद्विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. | हिन्दी मासिक

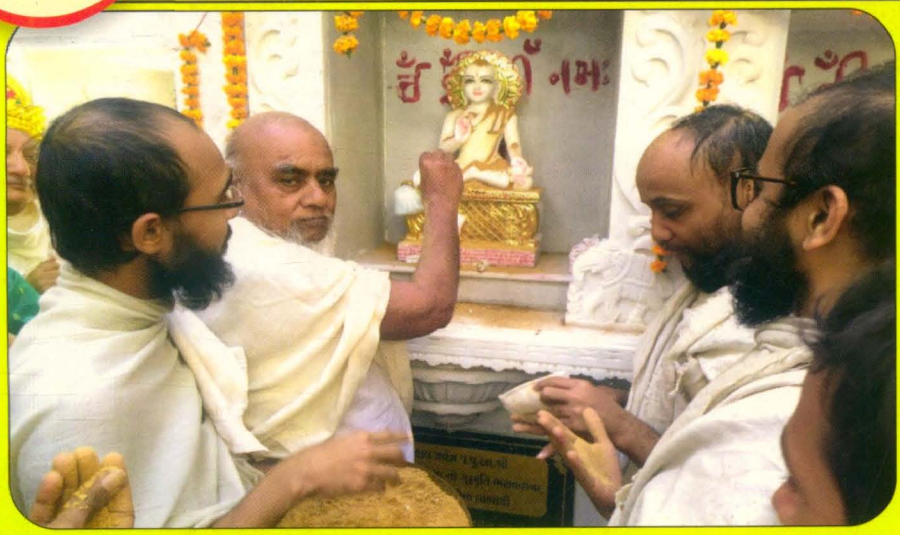

दिनांक 6/02/2020 को पाटण (गुजरात) में 'श्री सागर जैन आश्रम' हुई गुरु प्रतिष्ठा में निश्रा प्रदान करते हुए–गच्छाधिपति जैनाचार्य श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. एवं आचार्यदेव श्री कुलचन्द्रसूरिजी म.सा. ।

भाण्डवपुर तीर्थ पर आयोजित समारोह में जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा. से ओघा प्राप्त करते दीक्षार्थी श्री आजादकुमार जैन ।

विशिष्ट सहयोगी

1. श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी जैन ट्रस्ट, चैन्नई (तमिलनाडु)
2. श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट मंडल, विजयवाड़ा (आंध्रप्रदेश)
3. श्री सांचा सुमतिनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, मदुराई (तमिलनाडु)
4. श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट, त्रिचनापल्ली (तमिलनाडु)
5. श्री सुविधिनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, मैसूर (कर्नाटक)
6. श्री पार्श्वनाथ राजेन्द्र जैन श्वे. ट्रस्ट, गुंण्टुर (आंध्रप्रदेश)
7. श्री राजेन्द्रसूरि जैन श्वेताम्बर ट्रस्ट, सायला (राजस्थान)
8. श्री सायला जैन श्रीसंघ, सायला (राजस्थान)
9. श्री जैन श्वे. त्रिस्तुतिक संघ नारोली (ता. थराद, गुजरात)
10. श्री शंखेश्वर पार्श्व राजेन्द्र जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, दावणगेरे (कर्नाटक)
11. श्री जैन श्वेताम्बर त्रिस्तुतिक संघ, बागरा, जिला – जालोर (राज.)
12. श्री कुंथुनाथ राजेन्द्र जैन चेरिटेबल ट्रस्ट, सरसी, जिला – रतलाम (म.प्र.)
13. श्री अजितनाथ जैन श्वेतांबर त्रिस्तुतिक श्रीसंघ, बर्डियागोयल (त. जावरा, म.प्र.)
14. श्री अमराईवाड़ी श्वेताम्बर जैन मूर्तिपूजक संघ, बलियावास, अहमदाबाद
15. श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ राजेन्द्र यतीन्द्र जयन्तसेन वाटिका पिपलौदा (रतलाम) म.प्र.)

श्री राजेन्द्रसूरि कीर्ति मन्दिर तीर्थ ट्रस्ट

हमारे गौरव

ट्रस्टीगण महाप्रभावक गुम्मीलेरू तीर्थ

राजस्थान

राष्ट्रसंत श्री के पूज्य माता-पिता स्वरूपचंदजी धरू एवं पार्वतीदेवी

जैन रत्न श्री गगलदासभाई हालचंदभाई संघवी, अहमदाबाद

शा.तगराजजी जेठमलजी हिराणी रेवतड़ा, बैंगलोर

शा. किशोरचंदजी खिमावत खिमेल, मुम्बई

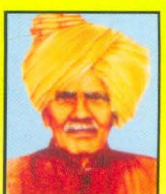

शा.जेठमलजी लादाजी चौधरी गढसिवाणा, बैंगलोर

शा. मिश्रीमलजी उकाजी सालेचा धाणसा, बैंगलोर

संघवी सांकलचंदजी इन्द्रजी वेदमुथा बैंगलोर

श्री शांतिलालजी रामाणी गुढाबालोतरा, नेल्लोर

शा. माणकचंदजी छोगाजी बालर बैंगलोर

श्री पुखराजजी पूनमचन्दजी जोटा दाधाल

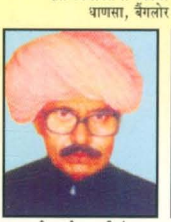

शा. हजारीमलजी गजाजी बंदमुथा

मांगीलालजी शेषमलजी रामाणी गुढाबालोतरा, नेल्लोर

शंकरलालजी आईदानजी गांधी नेल्लोर

चंपालालजी बालचंदजी चरली

श्री घेवरचंदजी एल. जोगानी, मुम्बई भीनमाल

श्री शेषमलजी गुलाबचंदजी जैन बागरा

हमारे गौरव

श्री हीराचंदजी कानाजी गुंटुर (सियाणावाला)

श्री लालचंदजी सोनाजी संघवी धाणसा (राज.) विजयवाड़ा

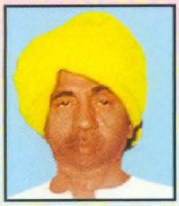
स्व. सोलंकी चन्दनमलजी हीराजी आहोर विजयवाड़ा

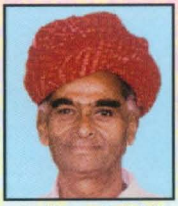
श्री शांतिलालजी सोलंकी जालोर विजयवाड़ा

श्रीमती मोसंबीबाई पति स्व.श्रीचम्पालालजी तखतगढ, मुम्बई

श्री बाबूलालजी गुण्टूर

कबदी जीतमलजी कुंदनमलजी सायला

भंडारी वस्तीमलजी खीमाजी विजयवाड़ा, आहोर

शा. रिखबचंदजी सरूपाजी सोफाडीया, रेवतडा

भंडारी पीरचंदजी केवलचंदजी बागरा

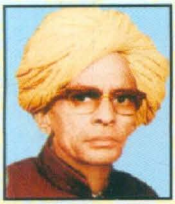
स्व. शा ओटमलजी गोराजी वेदमुथा, रेवतडा

शा. पारसमलजी हस्तीमलजी भंडारी, सायला

स्व. शा. गुमानमलजी धुकाजी मोदी, धानसा

मुथा उदयचंदजी जवाजी धाणसा

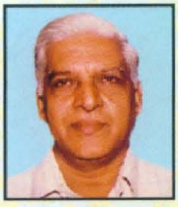
शा पुखराजजी फूलचंदजी दुरगानी, मोदरा, विजयवाड़ा

शा. घेवरचंदजी हंजाजी संघवी, धाणसा

शा. सरेमलजी गेनाजी सियाणा, विजयवाड़ा

शा. छगनराजजी मांडोत गुन्दुर

शा मोहनलालजी गोवानी चोरायु

शा. नरसाजी आसाजी बाफणा कोरा (राज.)

शा प्रतापचंदजी किसनाजी कटारिया संघवी अमरसर, सरत

श्री शा. कालूचंदजी हंजाजी संकलेचा, मेंगलवा/मदुराई

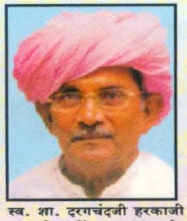
स्व. शा. दरगचंदजी हरकाजी सकलेचा मेंगलवा/मदुराई

स्व. श्री मिश्रीमलजी भंडारी जोधपुर/चैन्नई

श्री उत्तमचंदजी दरगचंदजी संकलेचा, मेंगलवा/मदुराई

345

हमारे गौरव

शा. नरेन्द्रकुमारजी रायकचंदजी पोरवाल
बागरा

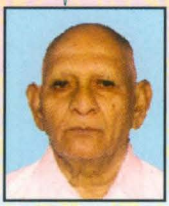
श्री चंदनमलजी जेठमलजी
बागरा

श्री सुखाराजजी केसाजी
मेंगलवा

श्री रतनचंदजी कुन्दनमलजी
मेंगलवा

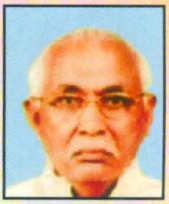
श्री नथमलजी खुमाजी
बागरा

श्री जेठमलजी कुंदनमलजी
मेंगलवा

श्री सांवलचंदजी कुंदनमलजी
मेंगलवा

श्री दूधमलजी मानकचंदजी
मेंगलवा

श्री बाबुलालजी सरेमलजी
मोदरा

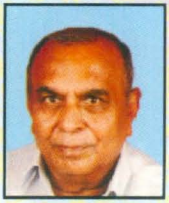
श्री छगनराजजी भानाजी गांधी
सियाना

शा.मुमेमलजी वरदीचंदजी वाणीगोता
आहोर (राज.)

श्री संघवी मानमलजी वीरमाजी
दादाल

श्री कांतिलालजी मूलचंदजी नानावत
आहोर

शा. उकचंदजी हिमताजी हिराणी
रेवतड़ा

शा. ओपचंदजी जवाजी ओस्तवाल
सायला

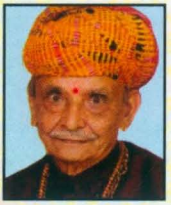
स्व.श्री एम. फूलचंदजी शाह
दावणगिरी

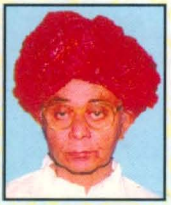
शा. मोडमलजी जोईताजी बाफना
थलबाड नेल्लोर

स्व. श्रीमती बदामीबाई मोडमलजी
बाफणा–थलवाड़, नेल्लोर

मुथा थानमलजी कानाजी
आहोर विजयवाड़ा

स्व. सुखराजजी पिताजी कटारिया
संघवी धाणवसा विजयवाड़ा

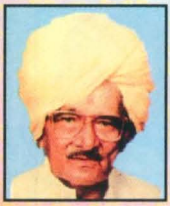
संघवी भेरमलजी जेठाजी
मारवाड में अमरसर (सरत) विजयवाड़ा

सेठ भगराजजी कुनणमलजी
सांचोर

शा. फुलचन्दजी सुखराजजी गांधी
सियाणा यादगीरी

श्री राणमलजी हिमताजी
दादाल

श्री पुखराजजी नेकाजी कटारिया
संघवी, धानसा

सा सांवलचंदजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

हमारे गौरव

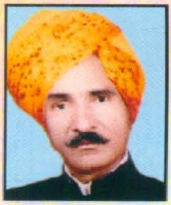
स्व.सा तिलोकचन्दजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा नरसीगमलजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

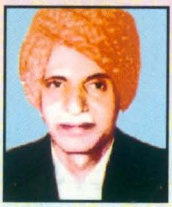
स्व.सा पुखराजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

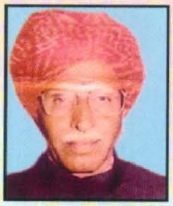
स्व.सा परकचंदजी प्रतापजी
वाणीगोता अमरसर (सरत)

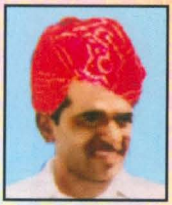
संघवी शा. मिश्रीमलजी विनाजी
पटियाल धाणसा/बैंगलोर

श्री फुलचन्दजी सांकलचन्दजी
कोशेलाव

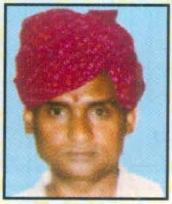
डूंगरचंदजी सोलंकी
सायला (राज.)

मीठालाल मनोहरलालजी झोरा
दाघाल-कोयम्बतूर

श्री उम्मेदमलजी हरकचंदजी
बाफना, पाँथेड़ी

श्री मंवरलालजी कुन्दनमलजी
संघवी, मोदरा (राज.)

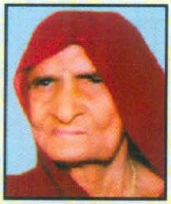
पातीबाई वस्तीमलजी
कबदी, सायला

श्री ओटमलजी वर्धन
सायला

श्री जुगराजजी नाथाजी कबदी
सायला

श्री हेमराजजी कबदी
सायला

श्री हस्तीमलजी गांधीमूथा
सायला

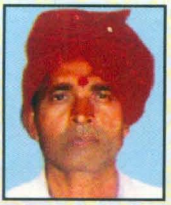
श्री घेवरचंदजी गांधीमूथा
सायला

श्री चम्पालालजी गांधीमूथा
सायला

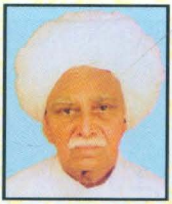
शा. धर्मचंदजी मिश्रीमलजी संघवी
आलासन

श्री देशमलजी सरेमलजी
मोदरा/बैंगलोर

शा. श्री स्व. हीराचन्द
फुलाजी गांव चुरा

श्रीमती पचनीदेवी दूधमलजी
कबदी, सायला

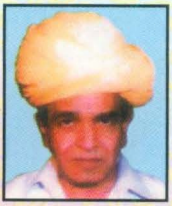
श्री दूधमलजी पूनमचंदजी
कबदी, सायला

श्री हस्तीमलजी केवलचन्दजी
फोलामुथा, सायला

श्री रमेशभाई हरण
भीनमाल, राजस्थान

श्री उगमराजजी तौलचंदजी
कटारिया संघवी, धानसा (हैदराबाद)

हमारे गौरव

शा. खुशालचंदजी गेबाजी
डामराणी मेंगलवा (हैदराबाद)

शा. जावंतराजजी
पाथेडी

शा. बगराजजी नरसाजी
झोटा, दाधाल

भंवरलालजी कानुगा
जालोर

श्री तिलोचन्दजी झोटा
(हैदराबाद)

सत्रु अग्रवाल
जालोर

पुखराजजी समताजी
गांधीमुथा, सायला

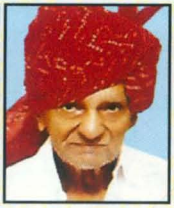
धर्मचंदजी चंदाजी
नानेसा, आकोली

शा. धींगड़मलजी भंवरलालजी
पटवारी, मांडवला/तिरुचि

कमलाबाई धींगड़मलजी पटवारी
चैन्नई, मांडवला

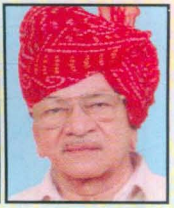
शा. निहालचंदजी धुलाजी
कातरेला, आहोर/मुंबई

गुजरात

वोरा अमृतलालजी डूंगरजी
अहमदाबाद

शा. तिलोकचंदजी चुन्नीलालजी छाजेड़
नैनावा

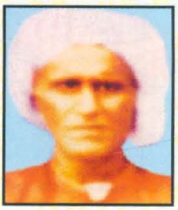
वोरा चिमनलालजी नथुचंदभाई

मोरखिया मणिलाल प्रेमचंदभाई
मुम्बई

श्री बाबूलालजी नाथाजी भंसाली
दाहोद

श्री चिमनलालजी पीताम्बरदासजी
देसाई

वेदलीया हालचंद भाई
भाणजी भाई, भोरडुवाला, डीसा

संघवी मुलचन्द भाई
त्रिभुवनदास, थराद

महाजनी ताराबेन
भोगीलाल सरूपचन्द, थराद

देसाई छोटालाल अमूलख भाई

संघवी धुड़ालाल अमृतलाल
(वकील)

शाह श्री राजमल भाई डूंगरजी भाई
थराद

संघवी श्री हीरालालजी कागजीभाई
थराद (लाटीवाला)

देसाई श्री हालचंदजी उजमचंदजी
थराद

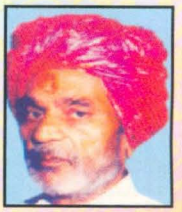
श्री नरपतलाल वीरचंदजी संघवी
थराद

हमारे गौरव

वोहरा श्री प्रेमचंदभाई जीतमल भाई थराद

संघवी चिमनलाल खेमचंद थराद

संघवी पूनमचंद खेमचंद थराद

संघवी वीरचंद हठीचंद थराद

वोहेरा श्री माणकलाल भूदरमल दूधवा (गुज.)

मोरखीया अमृतलालजी चुन्नीलाल लाखणी

दलपतभाई खेमचंद महाजनी

श्री मफतलालजी हंसराज वारिया, (वड़गामड़ा) डीसा

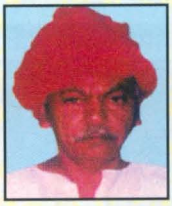
अदाणी अमृतलाल मोहनलाल थराद

श्री चन्दूमल मफतलालजी वोहेरा, दुधवा (गुजरात)

मध्यप्रदेश

श्री शांतिलालजी भंडारी झाबुआ

श्री मदनलालजी सुराना रतलाम

श्री इन्दरमलजी दसेड़ा जावरा

स्व.मणिलालजी पुराणिक कुक्षी

स्व. समरथमलजी तळेरा कर्मड़वाला, उज्जैन

श्री सुजानमलजी जैन राणापुर (म.प्र.)

संघ शिरोमणी राजमलजी तलेसरा, पारा

भण्डारी चम्पालालजी रामाजी, पारा

श्री गट्टूलालजी रतिचंदजी सालेचा औरा, पारा

श्री कांतिलालजी केसरीमलजी भंडारी, पारा

स्व. भव्य हिमांशु लुणावत दाहोद (गुजरात)

स्व. श्री सुभाषजी भण्डारी मनावर (मेघनगर वाले)

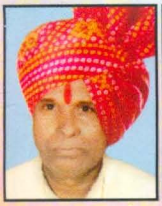
श्री समरथमलजी पगारिया पारा जि. झाबुआ (म.प्र.)

श्री चांदमलजी वरदीचंदजी तांतेड़, लेडगांव

स्व.श्री कन्हैयालालजी सेठिया, कुशलगढ़

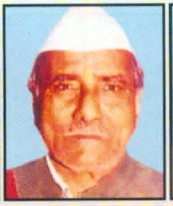
दलाल स्व. श्रीबाबूलालजी मेहता, कुशलगढ़

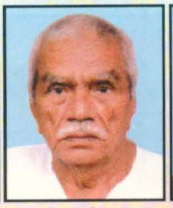
श्री मानसिंहजी राजगढ़

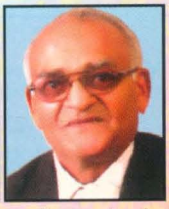
स्व. श्री बाबुलालजी भारतीय खाचरौद

हमारे गौरव

कालूरामजी औरा
टोपीवाले, रतलाम

जैन भूषण स्व. श्री वर्धमानजी
राठौर (बड़नगर)

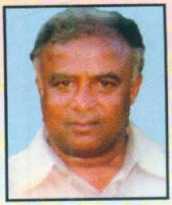

स्व. श्री प्रकाशचंद्र लुणावत
(बामनिया वाले)

कर्नाटक

श्री भंवरलालजी तिलोकचन्दजी
वाणीगोता, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री मनोहरमलजी फूजाजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री हिराचंदजी पुखराजजी
वाणीगोता, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री शेषमलजी ताराजी
कांकरिया, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री इंदरमलजी नेनमलजी
संघवी, बीजापुर (कर्नाटक)

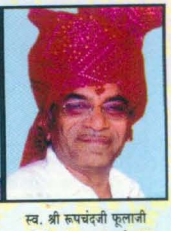

स्व. श्री रूपचंदजी फूलाजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.भंडारी भुरमलजी भानाजी
मेंगलवा, (बीजापुर)

स्व. श्री दिनेशकुमार भुरमलजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री प्रतापचंदजी समनाजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री सुखराज प्रतापचंदजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री कुंदनमलजी फुलाजी
संकलेचा, मेंगलवा (कर्नाटक)

श्री उम्मेदमलजी प्रतापजी
कंकुचौपड़ा, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री नागराजजी वालचंदजी
पाटनी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.श्री मोहनलालजी मुलचंदजी
चौवाटिया, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री कुन्दनमलजी
फुलाजी सकलेचा (बीजापुर)

श्री धनराजजी नेनमलजी
संघवी, आलासन (बीजापुर)

श्री मुलचंदजी खुमाजी
बाफना, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री देवीचंदजी हजारीमलजी
काबदी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.श्री रिखबचंदजी भभुतमलजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री डुंगरचंदजी हजारीमलजी
कबदी, बीजापुर (कर्नाटक)

शाह सोहनलाल
मित्राचंदजी बीजापुर

सुमेरमलजी अनाजी
वाणीगोथा, बीजापुर/भीनमाल

शा. श्री वस्तीमलजी सोनाजी
बाफना, बीजापुर (सायला)

॥ विश्वपूज्य प्रभु गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी गुरुभ्यो नमः ॥

धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रतीक

शाश्वत धर्म

मार्च – 2020 संस्थापक-श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. हिन्दी मासिक

संस्थापक :
स्व. गुरुदेव श्रीमद् विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

दिशा निर्देशक :
स्व.पू. लोकसंत जैनाचार्य श्रीमद्
विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा.

सम्पादक :
सुरेन्द्र लोढ़ा
E-mail : shaswatdharmajain@yahoo.in

कार्यालय :
शाश्वत धर्म
ठि. गुरु श्रीमद् राजेन्द्रसूरि शताब्दी मार्ग
धानमंडी, मंदसौर (म.प्र.)458002

शाश्वत वर्ष 68 अंक 3
वीर सं. 2541 राजेन्द्र सं.109 विक्रम सं. 2073

इस अंक का मूल्य	-	15रु.
एक वर्ष का शुल्क	-	150रु.
पांच वर्ष का शुल्क	-	600रु.
दस वर्ष का शुल्क	-	1100रु.

शाश्वत धर्म संचालन समिति

श्री शांतिलाल रामानी	(संयोजक)
श्री रमेशभाई धरू	(परिषद अध्यक्ष)
श्री सुधीर लोढ़ा	(महामंत्री)
श्री ओ.सी. जैन	(न्यासी)
श्री विनोद संघवी	(न्यासी)

आदि

भारत सरकार का पंजीयन क्र. 13067/57
स्वामी अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के लिए सुरेन्द्र लोढ़ा, गुरु श्रीमद् राजेन्द्रसूरि शताब्दी मार्ग, धानमण्डी, मंदसौर द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित।
मुद्रक -छाजेड़ प्रिन्टरी प्रा.लि., रतलाम

संचालक- अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद्

प्रेरक प्रसंग

खबरदार ! जो मेरा दर्द मिटाया

उपाध्याय श्री यशोविजयजी म. सिद्ध योगी श्री आनंदघनजी के समकालिन थे । संसर्ग ने उपाध्यायजी को भी योगी बना दिया था। उपाध्यायजी के शिष्य श्री मणिउद्योतजी महाराज थे जो भी योगी साधक थे। एक दिन श्री मणिउद्योतजी की पीठ में फोड़ा हो गया।

चिन्ता नहीं करने के कारण उसमें पीव पड़ गया। कीड़े भी पड़ गये।

इस कारण

असह्य पीड़ा हो गई। उनने काऊस्सग्ग के द्वारा पीड़ा का सामना किया। जब वे रात्रि में काऊस्सग्ग में खड़े थे

तब

एक विशिष्ट देव उधर से निकला उसने ज्ञानबल से जान कर प्रकट होकर महाराजश्री से पीड़ा मिटाने की आज्ञा मांगी ।

महाराज श्री मणिउद्योतजी ने तत्काल कहा–

'खबरदार जो मेरी पीड़ा मिटाई। मुझे तो प्रत्येक क्षण अनंत कर्मों का नाश करने का लाभ मिल रहा है। इस लाभ का मैं कैसे त्याग करूँ ? तू यदि मेरा हितैषी है तो बिना कुछ किये, चुपचाप चला जा।'

'देव ने वंदन किया व चला गया।'

'मुनि मणिउद्योतजी कर्म को चकनाचूर करते रहे।'

इसे कहते हैं आत्म स्वभाव में रमण करना ।

– सुरेन्द्र लोढ़ा

अनुक्रमणिका

1.	कर्मवादी यानी पुरुषार्थवाद (कविरत्न डॉ. दिलीप धींग)	09
2.	शांति और क्रांति के अग्रदूत दादा गुरुदेव (धीमी गतिवाल)	11
3.	जिन शासन की वर्णमाला (साध्वी श्री तृप्तिदर्शनाश्रीजी)	14
4.	सम्पादकीय (सुरेन्द्र लोढ़ा)	16
5.	अशुभ वचनयोग (35)(स्व. श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.)	18
6.	अध्यक्षीय पाती (वाघजीभाई वोरा)	20
7.	अध्यक्षीय संदेश (रमेशभाई धरू)	21
8.	प्रश्नोत्तरी	22
9.	चिन्तन का चित्रांकण (श्रीमद् विजय नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. की डायरी के पृष्ठ)	23
10.	शाकाहार याने दीर्घायु होने का वरदान (जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयरत्न सूरीश्वरजी म.सा.)	24
11.	बीता सो बीत गया (आगमवेत्ता साध्वी वैभवश्रीजी 'आत्मा')	26
12.	महाराजा श्रेणिक (मुनिराज डॉ. श्री सिद्धरत्न विजयजी म.सा.)	28
13.	गणधरवाद (लेखांक 74) (स्व.श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.)	30
14.	धारावाहिक उपन्यास (लेखांक-4) (स्व.श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरिश्वरजी म.सा.)	32
15.	जैन इतिहास के अधखुले पृष्ठ (संशोधक-मुनिश्री चारित्ररत्न विजयजी म.सा.)	34
16.	कब होगा मेरा मोक्ष (गुरुदेवश्री के शिष्य मुनिश्री निपुणरत्न विजयजी)	36
17.	श्री शत्रुंजय महातीर्थ-मुख्य 17 उद्धार (पुण्य सम्राट ज्ञानाञ्जनम् पर्व-पाटण)	38
18.	श्री जयंतसेन जयनाद (प्रस्तोता-मुनिराज प्रशमसेन विजयजी म.सा.)	39
19.	सभी जीवों का समावेश नौ प्रतिप्रतियों में (शांतिलाल सगरावत, मन्दसौर)	41
20.	भारतीय संस्कृति का जीवन्त त्यौहार-होली (अचलचन्द जैन)	42
21.	नवकार एवं पच्चखाण कहने से क्या लाभ मिलता है (विनय कुमार छिपानी)	44
22.	काव्य कुंज	45
23.	मङ्गलाचरण और उसकी परम्परा (आनन्द कुमार जैन)	49
24.	श्री राजेन्द्रसूरिजी म.सा. के चातुर्मास (संकलन-मुनिराज श्री तारकरत्न विजयजी म.सा.)	54
25.	गुजराती संभाग	56-71
26.	कुमकुम सने पगलिये	72-86
27.	परिषद प्रांगण से	87-92
28.	श्री संघ सौरभ	93-104
29.	जैन विश्व	105-106
30.	शाश्वत धर्म के संरक्षक	107-108

कर्मवाद यानी पुरुषार्थवाद

(कविरत्न डॉ. दिलीप धींग)

जैन दर्शन या इसके कर्म - सिद्धान्त में भाग्यवाद का समर्थन नहीं है। जैन ग्रंथों में शुभाशुभ कर्मों का शुभाशुभ फल बताया गया है- सुचिण्णा कम्मा सुचिण्ण फला भवंति। दुचिण्णा कम्मा दुचिण्ण फला भवंति। यह न्यायपूर्ण भी है। कोरी भाग्यवादिता से अकर्मण्यता और अकर्मण्यता से बेरोजगारी, गरीबी और आर्थिक अवनति की स्थितियाँ पैदा होती हैं। भाग्यवादिता से व्यक्ति की योग्यता और रचनात्मकता भी क्षीण हो जाती है। सच्चा भाग्यवान वह है, जो प्रशस्त भाव से पुरुषार्थ करता हुआ सन्मार्ग पर चलता है। इसे मैंने काव्य में यूँ पिरोया-

जिसके हाथों में सम्यक् श्रम, पाँव सुपथ पर गतिमान है।
और हृदय में प्रेम करुणा, बेशक वह नर भाग्यवान है।

जैन दर्शन शुभाशुभ परिणाम को कर्मजनित और कार्मण- वर्गणाओं की शक्ति के अनुसार मानता है। यह सब गणित और भौतिकी के नियमों की भाँति सम्पन्न होता है। इस कार्य में किसी ईश्वर या ईश्वरीय शक्ति के हस्तक्षेप का प्रश्न ही नहीं उठता । जब अपने भाग्य की बागडोर ईश्वर या किसी दैवीय शक्ति को सौंप दी जाती है, तो समाज में जड़ता और निष्क्रियता बढ़ जाती है।

जैन धर्म ने कर्मफल और जीवन-विकास में ईश्वरीय हस्तक्षेप का केवल सैद्धान्तिक दृष्टि से ही प्रतिपाद नहीं किया, अपितु व्यवहार क्षेत्र में भी उससे असहमति रखी। उसकी अच्छी परिणति जैन धर्मानुयायियों की सम्पन्नता में हुई और समाज में कोरी भाग्यवादिता के खिलाफ स्वर बुलन्द हुए। इसीलिए यह कहा जाने लगा कि ईश्वर भी फल उसी को देता है जो पुरुषार्थ करता है। यह जैन धर्म के पुरुषार्थवाद की जीत है। कर्मवाद पुरुषार्थवाद का ही दूसरा नाम

है। मेरी एक क्षणिका है-

कहते हैं जो जैसा करता, वैसा ही वो भरता है।
कर्मवाद तो पुरुषार्थ की शिक्षा देता है।

भाग्य कोई आकाश से नहीं टपकता है। जिसे आज सौभाग्य, पुण्य या पुनवानी कहा जा रहा है, वह इस जीवन या पूर्वभव में किये गये शुभ कार्यों और सत्पुरुषार्थ की निष्पत्ति है। इसलिए, सम्यक् पुरुषार्थ कभी नहीं छोड़ना चाहिये। उद्यम (पुरुषार्थ) फलदायी होता है- जावज्जीवं न छुट्टेज्जा उज्जमं फलदायगं। इस भाव को मैंने एक चतुष्पदी में इस प्रकार गूंथा -

श्रमजल से अगर सींचे तो, माटी से सोना उगता है।
पुरुषार्थ के भव्य क्षितिज पर, सिद्धि का सूरज उगता है।

जिसके पुरुषार्थ की ज्योति मन्द हो जाती है, उसके पूर्वकृत अच्छे कर्मों का फल भी मन्द हो जाता है। इसके विपरीत जो सतत् पुरुषार्थशील है, उसके बुरे कर्मों का फल मन्द हो जाता है। ठाणांग सूत्र (4/4/312) में कर्मफल की चौभंगी में कहा गया है- शुभ कर्म का शुभ विपाक, शुभ कर्म का अशुभ विपाक, अशुभ कर्म का शुभ विपाक और अशुभ कर्म का अशुभ विपाक।

कर्म सिद्धान्त में बताया गया है कि अप्रमत्त साधक अपने अशुभ कर्मों के फल को उद्वर्तन, अपवर्तन, संक्रमण, उपशमन, उदीरणा और निर्जरा के द्वारा मन्द, मन्दतर और समाप्त कर सकता है। ठीक इसी प्रकार शुभ कर्मों के फल को अधिक फलदायी बनाया जा सकता है। कर्मवाद का सिद्धान्त पुरुषार्थ द्वारा भाग्य में सकारात्मक परिवर्तन की वैज्ञानिक और दार्शनिक व्याख्या करता है। मेरे इस काव्यमय सन्देश के साथ इस लघु लेख को विराम देना चाहूँगा-

दुष्कर्मों की, दुर्भाग्य की, साजिश विफल करें।
आओ ! सत्पुरुषार्थ से, जीवन सफल करें।

◆◆◆

शान्ति और क्रान्ति के अग्रदूत
दादा गुरुदेव
(धीमी गतिवाला)

क्रियोद्धार का दादा गुरुदेव ने जो संकल्प किया था, वह पूर्ण करने का समय आ गया था। शुद्ध हृदय, शांतिवादी हृदय क्रांतिकारी हृदय को आचार में शिथिलता हमेशा कचोटती रहती है, श्रद्धा और ज्ञान के अनुसार आचरण का उसका पूरा प्रयास रहता है। क्रियोद्धार आचार शुद्धि करने का इतना प्रभावक तरीका है कि उससे स्वयं की आत्मशुद्धि तो होती ही है, समग्र का शुद्धिकरण भी उससे होता है। घाणेराव इत्र विवाद के बाद दादा गुरुदेव के जो कदम आगे बढ़े थे उसने एक क्रांति तो कर ही दी थी, समाचारी शुद्धि की। नौ कलमनामें का, नियमों का, समाचारियों का यति संघ में पालन हो रहा था। लेकिन श्री पूज्य पद उसका परिग्रह और उसके कारण शुद्ध साध्वाचार में आई शिथिलताएं, इन सबसे भी मुक्त होना था और सबको मुक्त करना था । यह कमी एक क्रांति पुनः मांग रही थी और वह कार्य क्रियोद्धार क्रांति से पूर्ण होने वाला था।

नवल कलमी क्रांति से यतिओं में पर्याप्त सुधार हुआ था। प्रमुख यतिगण यतिओं से शुद्धाचार पालन करवाने का ध्यान रख रहे थे। नये दफ्तरी देवसागरजी, महेन्द्रविजयजी, मोती विजयजी तीनों ने सख्त हिदायत दे दी थी कि जो इन समाचारियों का पालन नहीं करेंगे उन पर अनुशासनात्मक कार्यवाही की जाएगी और उन्हें यति संघ से निष्कासित भी किया जा सकता है। इस चेतावनी का अनुकूल असर हुआ था वैसे ही प्रतिकूल असर भी हुआ। कुछ मायाचारी, सुविधा भोगी और मांत्रिक तांत्रिक शक्तियों के जानकार यति कठोर अनुशासन और अपनी सुविधाओं के छिन जाने से उत्तेजित हो गये थे। नये श्रीपूज्य श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी के प्रति उनके हृदय में द्वेष और घृणा की चिंगारियां उत्पन्न हो गई थी, उनसे बदला लेने की कुत्सित भावना जाग्रत हो गई थी। जावरा श्रीसंघ व नये श्रीपूज्यजी को अपनी मांत्रिक शक्तियों से परेशान करने का षड़यंत्र उन्होंने रच लिया जिससे कि नियमों के पालन की ओर से सबका

ध्यान हटाया जा सके।

पहले ये यति जावरा पहुंचे। उस समय दादा गुरुदेव खाचरोद में बिराज रहे थे। यतिओं ने जावरा पहुंचकर पहले वहां कुछ सीधे भावुक श्रावकों को अपने असर तले ले लिया। ये यति अत्यंत विनम्र भाव दर्शा रहे थे, चिकनी चुपड़ी बातों से अपनी उदारता का प्रदर्शन कर रहे थे। इनकी अत्यधिक विनम्रता देखकर जावरा के प्रबुद्ध व जागरुक श्रावक छोटमलजी पारिख आदि चौंक पड़े। उन्हें खतरे की गंध आ गई। अतएव इन यतिओं के क्रियाकलाप पर सख्त नजर रखी जाने लगी। आखिर मंत्र प्रयोग से कुछ अनहोनी घटित कर देने के इनके षडयंत्र का भंडाफोड़ हो गया। इस भंडाफोड़ से जावरा का श्रीसंघ अत्यंत क्षुभित हो गया। अतः इन हीनाचारी यतिओं ने रातों रात जावरा से पलायन करने में ही अपनी खैर समझी। लेकिन उनका मालिन्य समाप्त नहीं हुआ था, वहां से वे खाचरौद पहुंच गये। इन पतित यतिओं ने दादा गुरुदेव पर अपनी मंत्र शक्ति का दुष्प्रयोग किया, पर क्या इससे दादा गुरुदेव भयभीत होने वाले थे ? यहां भी ये यति मुनिश्री प्रमोद विजयजी एवं गुरुभक्त वजीर श्री हमीरविजयजी की चौकन्नी नजरों से बच नहीं सके, यहाँ भी उन्हें असफलता ही हाथ लगी। इन घटनाओं की बातें मालवा के ग्राम नगरों तक तीव्रता से पहुंच गई। अतः इन यतिओं ने मालवा से ही पलायन कर देने में अपना हित समझा।

स्वयं में, स्वयं के गच्छ में व अन्य गच्छों में भी प्रभु वीर के बतलाए शुद्ध मार्ग में जो भटकाव आया था उसके शुद्धिकरण के लिए क्रियोद्धार करने का शुभ मुहूर्त दादा गुरुदेव ने संवत् 1925 आषाढ़ कृष्णा दसमी का निकाला। क्रियोद्धार अपने-अपने ग्राम नगरों में करवाने के लिए कई स्थानों का आग्रह होने लगा। जावरा, मंदसौर, खाचरोद, रतलाम आदि श्रीसंघों का बहुत आग्रह था। जावरा श्रीसंघ के साथ-साथ जावरा नवाब व वहां के दीवान का अत्यधिक आग्रह हुआ और जावरा को यह क्रांतिकारी लाभ लेने का सौभाग्य प्राप्त हो गया। दादा गुरुदेव ग्राम नगरों में प्रभु वीर के आत्म सुख देने वाले शुद्ध आचार मार्ग पर अपने उपदेशामृत का जनता को पान करवाते हुए जावरा पहुंचते हैं।

जावरा में अपार उत्साह छाया हुआ था। जगह-जगह तोरण द्वार लगाये गये थे। भव्य सामैया होता है। चारों ओर

विशाल जनमेदिनी, मालवी पगडियों और सलमां सितारों की टोपियों की साज सज्जा दिखाई दे रही थी। जुलूस समापन के बाद दादा गुरुदेव की प्रभावोत्पादक प्रवचन गंगा बहती है जिसमें स्नान करके सभी के हृदय में पावनता का संचार होता है। प्रवचन के बाद सभा विसर्जित हो जाती है। दादा गुरुदेव पाट पर बिराजमान हैं। वजीर हमीर विजयजी, पारिख छोटमलजी व अन्य दो चार श्रावक सामने बैठे हैं, मुनिश्री धनविजयजी व प्रमोदरुचिजी अपने स्वाध्याय चिंतन में रत हैं। तभी मुनिराज धनविजयजी की निगाह पाट के नीचे रखे कुल्हड़, मिट्टी के पात्र पर जाती है। किसी कुविचारी यति ने इस शुभ अवसर पर खलल डालने के लिए यह मंत्र यंत्र तंत्र का कुत्सित प्रयोग किया था। परंतु दादा गुरुदेव की शुद्धता व आध्यात्मिक शक्ति के आगे ऐसे प्रयास कैसे सफल हो सकते थे ? इस यंत्र को देखकर दोनों मुनि घबरा उठते हैं, छोटमलजी पारिख को पसीना आ जाता है। दादा गुरुदेव कहते हैं कि घबराने की कोई आवश्यकता नहीं है। ईर्ष्या, क्रोध, लालसा और यशकामना में डुबे व्यक्ति ऐसा कार्य करते हैं, पर इससे कुछ होने जाने वाला नहीं है। पर सबकी घबराहट को दूर करने के लिए दादा गुरुदेव नवकार मंत्र गिनते हुए उस मिट्टी के पात्र पर दृष्टिपात करते हैं और देखते ही देखते वह मिट्टी का पात्र टूटकर बिखर जाता है। इस तरह दादा गुरुदेव ने एक बार फिर सिद्ध कर दिया कि नवकार मंत्र की अमोघ शक्ति के आगे सभी संकट चूर-चूर हो जाते हैं, सभी दुषित मंत्र निस्तेज हो जाते हैं। इस घटना ने जावरा का वातावरण बदल दिया। दादा गुरुदेव पर आस्था अधिक दृढ़ हुई तो दुराशयी यतिओं पर जबर्दस्त नाराजगी पैदा हो गई। प्रयोग करने वाले यति इस बदले हुए वातावरण को देखकर जावरा से नो दो ग्यारह हो गये। दूसरे दिन श्री महेन्द्रविजयजी नामक अनुभवी एवं वृद्ध यति दो तीन यतिओं के साथ आये, वे क्रियोद्धार महोत्सव देखने आये थे। जब व्याख्यान के समय उन्होंने यह घटना सुनी तो वे बोले यह निरंकुश यतिओं का उत्पात है लेकिन उनकी दाल गलने वाली नहीं हैं, आप निश्चित रहें । यह सुनकर सब आश्वस्त हुए। सबका ध्यान अब क्रियोद्धार की ओर केन्द्रित था। कैसा होता है ? क्या होता है ? हम भी इंतजार करें । ◆◆◆

जिन शासन की वर्णमाला

(साध्वी श्री तृप्तिदर्शनाश्रीजी)

ऐ-ऐरावत क्षेत्र- जंबूद्वीप में भरतक्षेत्र, ऐरावत क्षेत्र और महाविदेह क्षेत्र । 15 कर्मभूमियाँ होती है। 5 भरत+5 ऐरावत + 5 महाविदेह । 5 ऐरावत = जंबूद्वीप 1 + घातकीखंड-2, अर्धपुष्करावर्त द्वीप-2 इस प्रकार 5 ऐरावत क्षेत्र है। जहाँ असि, मसि, कृषि का व्यापार होता है उसे कर्मभूमि कहते हैं। ऐरावत क्षेत्र में भी भरतक्षेत्र के समान ही सब कुछ होता है। वहाँ पर भी छः आरे होते हैं और वर्तमान में 5 वाँ आरा चल रहा है। जैसे 5 वें आरे के अन्त में भरतक्षेत्र में गाँव श्मशान जैसे हो जाएंगे, वर्षा अनुकूल नहीं रहेगी, दुष्काल पड़ेगा, कुमति-कदाग्रही लोग रहेंगे। अन्त में 1 साधु, 1 साध्वी, 1 श्रावक और 1 श्राविका शेष रहेगी और अग्नि की वर्षा हो जाएगी और पाँचवा आरा समाप्त हो जाएगा। उसी प्रकार ऐरावत क्षेत्र में भी होगा। वहाँ पर भी वर्तमान, अतीत, अनागत चोवीसी होती है। अभी वहाँ जंबूद्वीप में प्रभु जिनेशनाथ का शासन चल रहा है। ऐरावत क्षेत्र में भी अभी तीर्थंकर का विरह है।

ओ-ओली :- अर्थात् नवपद आराधना- यह एक शाश्वत पर्व है।

वर्ष में दो बार इसकी आराधना होती है। इसमें नवकार के नवपद का ध्यान, जाप होता है। श्रीपाल-मयणा ने नवपद की आराधना उज्जैन खाराकुंआ में की थी। जिसके प्रभाव से श्रीपाल का कोड़ रोग चला गया था। ओली में आयंबिल की तपस्या होती है। आयंबिल 3 प्रकार के होते हैं- उत्कृष्ट, मध्यम और जघन्य । उत्कृष्ट आयंबिल - एक ही धान बिना नमक का होता है। मध्यम- बिना नमक का होता है। जघन्य - नमक, कालीमिर्च, हींग युक्त होता है। वर्तमान में कितने ही साधु-साध्वी भगवंतों की 100-200-300 वर्धमान तप की ओलीयां समाप्त हो चुकी है और चल भी रही है। धन्य है ऐसे तपस्वी महात्माओं को...

औ-औदारिक शरीर :- जीव के 5 शरीर होते हैं। औदारिक, वैक्रिय, आहारक, तैजस, कार्मण। उसमें से एक शरीर औदारिक है। मनुष्य और तिर्यंच का शरीर औदारिक होता है। औदारिक शरीर वाला ही मोक्ष में जा सकता है। खून, माँस, हड्डी आदि सात

धातुओं से औदारिक शरीर बनता है। लेकिन वैक्रिय शरीर में खुन, माँस, हड्डी आदि सात धातुओं से औदारिक शरीर को जलाने से राख हो जाता है किन्तु वैक्रिय शरीर पारा की तरह बिखर कर उड़ जाता है उसे जलाना नहीं पड़ता है।

क-कर्मः- जीव के द्वारा जो भी अच्छा या खराब कार्य किया जाता है उसे कर्म कहते हैं।

जीव अगर शुभकार्य करता है तो उसे पुण्य का बंध होता है और अशुभकार्य करता है तो उसे पापकर्म का बंध होता है। शुभाशुभ कर्मों के अनुसार उनको फल मिलता है। अपने जीवन में जो कुछ भी सुखद या दुःखद परिस्थिति बनती है वह अपने ही पूर्वबद्ध कर्मों का फल है। जीव जैसा करता है वैसा फल मिलता है। कर्म 8 प्रकार के होते हैं- ज्ञानावरणीय आदि। अतः कर्म बांधते समय बहुत सचेत रहना चाहिए। पाप करके कभी भी उसकी अनुमोदना नहीं करना चाहिए बल्कि पश्चात्ताप करना चाहिए। अनुमोदना करने से निकाचित कर्म बंधता है जिसको भुगतना ही पड़ता है।

ख-खंधक मुनि- खंधकमुनि के पूर्वभव में उन्होंने अपनी स्त्रीओं को स्वयं की कला दिखाने के लिए एक बड़ा खरबुजा मंगाया और स्वयं के तीर से उस खरबुजे की अखंड छाल निकाली, कई भी ब्रेक नहीं हुई। उस कला को देखकर स्त्रीओं ने उनकी बहुत प्रशंसा की और कहा कि हम में से किसी को भी ऐसी कला नहीं आती है। इस प्रकार की प्रशंसा सुनकर उसको बहुत अहंकार आ जाता है। पाप की अनुमोदना एवं अहंकार करने से वह पाप निकाचित बंद जाता है 99 लाख भव बाद उनका जन्म राजकुमार खंधक के रूप में होता है। गुरु के उपदेश से वैराग्य आया और संयम ग्रहण किया। मासक्षमण के पारणा का दिन था। बहनोई के गाँव में गोचरी लेने जाते है। बहनोई ने राजकुमार को देखा और शंका हुई कि मेरी रानी का यह जार पुरुष लगता है। ऐसा विचारकर सैनिकों को वहाँ भेजा। मुनि ने पारणा भी नहीं किया था। गौचरी लाकर खड़े ही थे। सैनिकों ने जीते जी उनकी शरीर की चमड़ी उतारी। वह खरबुजे का जीव मरकर उनका बहनोई बनता है। इस भव में उस बहनोई ने खंधकमुनि की चमड़ी उतरवाई। समभाव से सहन करने से सारे कर्मक्षय हो जाते हैं और मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है। ◆◆◆

सम्पादकीय

प्रिवेडिंग तथा कोरियोग्राफी पर हर जगह बंदिश लगाओ

(सुरेन्द्र लोढ़ा)

पश्चिमी या भारत की ईतर सभ्यताओं का विपरीत प्रभाव सम्पूर्ण जैन समाज के रीति-रिवाजों पर हो रहा है। पूर्व में इस कारण जो विकृतियाँ आई वे सुधार से बहुत दूर हैं, अब नई कुरीतियां अपना कब्जा जमाती जा रही हैं। इनका विरोध समाज के कई स्तरों से हो रहा है लेकिन लगता है कि बुरे-रिवाज संक्रमण रोग हैं तथा वे फैलते ही जा रहे हैं।

यों देखा जाय तो सोश्यल मिडिया ने समाज में कई अश्लीलताओं को जन्म दे दिया है। मोबाइल पर वाट्सएप जैसे एप पर अपना ग्रुप बनाना तथा उसमें पति-पत्नी के सम्बन्धों की दिशा में अधिक से अधिक खुलापना दिखाने की होड़ चल रही है। नई पीढ़ी यह भूलती जा रही है कि इस प्रतिस्पर्धा के कारण जो लिहाज-शर्म का घेरा टूट रहा है, वह न केवल मित्रों बल्कि समाज तथा परिवार के वरिष्ठों के सामने भी प्रकट हो रहा है। इसे अच्छा नहीं माना जा रहा है। इसी का एक रूप प्रि-वेडिंग फोटोग्राफी के स्वरूप में पनप रहा है जो अवांछनिय है।

हम उस युग को लौटाने का उल्लेख नहीं कर रहे हैं, जिसमें महिलाएँ घूंघट में रहती थीं तथा संयुक्त परिवार में सास, जेठानी आदि वरिष्ठों जैसे के तेवरों को सहन करने के लिये बाध्य रहती थीं। उस समय पति भी अपनी सीमाओं में गतिविधि रखते थे। अब समय में परिवर्तन हुआ है, नारी स्वतंत्रता पर बल दिया जा रहा है, नारी की शक्ति तथा उर्जा का उपयोग भी होने लगा है, इन वर्षों में वह पढ़ाई तथा जॉब की ओर बढ़ी है। पर्दा प्रथा तो समूल इतिहास की वस्तु हो गई है, घूंघट भी गये गुजरे जमाने का तथ्य हो गया है। उस युग को लौटाने की विचारणा बुद्धिहीनता की सीमा में आ गई है लेकिन युग के नये मूल्यों को जीवन को स्वच्छन्दता तथा बेशर्मी की ओर ले जाने की अनुमति नहीं दी जा सकती।

इन सभी तर्कों को रेखांकित इसलिये किया जा रहा है कि

शादियों के कार्यक्रमों में प्रदर्शन के लिये प्रिवेडिंग के चित्र टांगे जाना शालीनता नहीं कहे जा सकते, जिन जोड़ों को आशीर्वाद देने के लिये अतिथि पहुंचते हैं, उनके एक-दूसरे की बाहों में झुलते हुए के चित्र पहिले से ही वहाँ सजे हुए रहते हैं। चित्रों को देखने में ही कई अतिथियों को शर्म आती है। ये चित्र फोटोग्राफ करवाने तथा कार्यक्रम स्थल पर लगाने का कार्य परिवारजनों की सहमति से होता है।

विवाह से पूर्व लड़के-लड़की आपस में एक-दूसरे को समझने, देखने, एक-दूसरों की आदतों से परिचित होने के अवसर का उपयोग करें यह तो ठीक है लेकिन इस बहाने के नाम पर फोटोग्राफर के साथ पर्यटन केन्द्रों पर जाने, वहाँ फोटोग्राफर के निर्देशन में विभिन्न मुद्राओं में आने व चित्र उतरवाने की प्रवृत्ति पूर्णतः भोंडा आचरण है।

यह उन परिवारों में हो रहा है जो धनाड्य हैं तथा हजारों रुपये व्यर्थ में पानी की तरह बहाने में कोई संकोच नहीं करते हैं। इस प्रिवेडिंग फोटोग्राफी को समाज के स्तर पर नापसंद किया गया है तथा कई स्थानों पर सामाजिक संगठनों ने इस पर बन्दिश भी लगाई है। यह भिन्न तथ्य है कि ये बिन्दशें कितनी कारगर हुई हैं ?

इसके साथ ही महिला संगीत का अपशुकुनी प्रदर्शन होने लगी है। इसके लिये फिल्मी नृत्य व संगीत सीखने के लिये कोरियोग्राफर के यहाँ एक-दो महिने पूर्व से ही सम्भ्रान्त परिवारों की महिलाएँ फीस देकर जाने लगती हैं। वहाँ बंद कमरों में कोरियोग्राफर एक्शन सिखाने के नाम पर कमर में हाथ डालकर नाच-गानों का प्रशिक्षण देते हैं। यह भी एकदम आपत्तिजनक है।

इन कुप्रथाओं का प्रचलन बढ़ रहा है तथा समाज में विकृतियां बढ़ रही है। समाचार पत्रों ने खबर दी है कि कोरियोग्राफर के साथ मुंबई में बड़े घरानों की तीन शादीशुदा महिलाएँ भाग गई (वे जैन समाज की थीं, ऐसा नहीं कह सकते हैं) जिस तरह हमारा जीवन बुराइयों का घर बनता जा रहा है, उससे स्पष्ट है कि कोई भी संक्रामक रोग कभी भी आ सकता है।

अतएव समग्र जैन समाज को अपने यहाँ स्थानीय स्तर पर निर्णय कर प्रिवेडिंग तथा कोरियोग्राफर पर बन्दिश लगाना चाहिये तथा उसका पालन करवाना चाहिये। ◆◆◆

प्रवचन

अशुभ वचनयोग (35)

स्व. पुण्य सम्राट युग प्रभावक लोकसंत जैनाचार्य
श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

दूसरा नियम बीच में बात न काटने की सलाह देता है। बात वही काटता है, जिसमें आत्मविश्वास का अभाव होता है, जो बोलने वाले के अनेक तर्कों का एक साथ उत्तर नहीं दे सकता, इसलिए बीच में बोलकर एक-एक तर्क को क्रमशः निपटाना चाहता है, इसलिए सुनने वाला यदि बीच-बीच में बोलता रहे तो उससे क्रम टूट जाता है। अपनी बात प्रभावशाली ढंग से वह प्रकट नहीं कर पाता, इसलिए सुनने वाला जब बीच में ही बोल उठता है, तब वह झुंझला जाता है। बोलने वाले में ऐसी कोई झुँझलाहट न हो, इसके लिए किसी की भी बात बीच में काटने के नियम का पालन बराबर किया जाना चाहिए।

बोलने से सनातन धर्म का उल्लेख करते हुए प्राचीन शास्त्रों में लिखा है-

सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयाद न ब्रूयात् सत्यमप्रियम् ।
प्रियञ्च नानृतं ब्रूयादेष धर्मः सनातनः।।

सत्य बोले पर मीठा बोले। अप्रिय (कटु) सत्य न बोलें और प्रिय सत्य भी ऐसा न बोलें, जो अतथ्य हो। बस, यही बोलने का सनातन धर्म (नियम) है।

कटु सत्य से कैसी-कैसी हानियाँ होती है ? सो कुछ उदाहरणों से स्पष्ट किया जा रहा है -

(1) पत्नी ने पूछा- 'आज रसोई कैसी बनी है ?'

इस पर प्रशंसा करने के बदले पति बोल उठा- 'यदि रसोई बनाने वाले होती तो उसकी छुट्टी कर देता (उसे नौकरी से हटा देता)।' इससे पत्नी ने

समझा कि मेरी कद्र इस घर में नौकरानी से अधिक नहीं है। वह नाराज होकर बैठ गई। बड़ी मुश्किल से उसे मनाया गया।

(2) एक पत्नी ने पूछा- 'जब मैं पीहर जाती हूँ, तब आपको मेरी याद आती है या नहीं ?' इस पर पति ने कहा- 'जब सामने कोई काम नहीं होता, तब तुम्हारी याद जरूर आती है, अन्यथा नहीं।' यह सुनकर पत्नी रूठकर पीहर चली गई।

(3) एक आदमी ने अपने मित्र को अपनी बनाई हुए कविता दिखाई। पूछा- 'कैसी है ?'' मित्र ने कहा- '' अभी तो तुम्हें मात्रा गिनना भी नहीं आता, इसलिए कविता लिखना बन्द कर दो।' इस पर नाराज होकर आदमी ने मित्र से मिलना-जुलना ही बंद कर दिया।

(4) एक सेठानी ने मुनीम से अपने बच्चे के विषय में पूछा- 'यह कैसा लगता है ?' मुनीम ने कहा- 'ठीक बन्दर के बच्चे जैसा लगता है।'

मुनीम ने मजाक में बात कही, किन्तु सेठानी को बुरा लग गया। उसने सेठ को कहकर मुनीम को नौकरी से अलग करवा दिया।

चाणक्य ने लिखा है :-

अग्निदाहादपि विशिष्टं वाक्पारुष्यम् ।।

कठोर वाणी आग से भी अधिक जलाती है- आग से अधिक कष्टदायक होती है।

इसी प्रकार एक अन्य नीतिकार ने लिखा है:-

वाक्पारुष्यं शस्त्रपातादपि विशिष्यते ।।

- नीतिवाक्यामृतम्

वचन की कठोरता शस्त्र के प्रहार से भी बढ़कर होती है। कोई शस्त्र इतनी निर्दयता से प्रहार नहीं करता, जितना कठोर वाक्य । फिर शस्त्र का प्रहार जो घाव करता है, उसे मरहमपट्टी से ठीक किया जा सकता है, परन्तु वचन के प्रहार से मन घायल होता है, जिसका कोई इलाज नहीं। (क्रमशः)

◆◆◆

वाघजीभाई वोरा
राष्ट्रीय अध्यक्ष, श्रीसंघ

आओ इस चमक की वृद्धि करें

प्रत्येक चैत्र शुक्ला पूर्णिमा त्रिस्तुतिक जैन संघ के लिये चातुर्मास पर्व होता है। स्व. राष्ट्रसंत/लोकसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा. ने यह परम्परा प्रारंभ की थी, वे इस दिवस पर आयोजित राष्ट्रीय स्तर की धर्मसभा में अपना चातुर्मास घोषित करते थे, साथ ही अपने गच्छ के पूज्य श्रमण व श्रमणी समूहों के लिये श्रीसंघों की विनंतियों पर अपना आदेश प्रदान करते थे, जिसके अनुसार श्रमण तथा श्रमणी वर्ग चातुर्मास व्यतीत करने की तैयारी करते थे। इस अवसर को एक पर्व का स्वरूप दिया गया तथा यह धर्मसभा ऐतिहासिक रूप में आयोजित होती रही है इसमें देश भर के त्रिस्तुतिक श्रीसंघ अपने स्थानीय श्रीसंघों के निर्णयानुसार विनंतियां लेकर उपस्थित होते रहे हैं। ऐसा आयोजन त्रिस्तुतिक श्रीसंघ की एक मौलिक परम्परा है।

पूज्य पुण्य सम्राट लोकसंत/राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्री के देवलोकगमन के पश्चात् उनके पट्टधर गच्छाधिपति जैनाचार्य श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. तथा जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयरत्न सूरीश्वरजी म.सा. पुण्य सम्राट का अनुकरण कर इस उत्तम परम्परा के अक्षुण्ण किये हुए हैं।

गच्छाधिपति जैनाचार्य श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. आगामी चैत्र शुक्ला पूर्णिमा को मंदसौर (मध्यप्रदेश) में आयोजित चातुर्मास पर्व की धर्मसभा में अपने एवं आज्ञानुवर्ती पूज्य साधु-साध्वी समुदाय के चातुर्मासों की घोषणा करेंगे। समस्त श्रीसंघ धर्माराधना के लिये अपने शहर/ग्राम में चातुर्मास करवाने की भावना रखें तथा अपने श्रीसंघ का निर्णय लेकर 8 अप्रेल को मंदसौर पधारें जिससे त्रिस्तुतिक जैन संघ में धर्मोत्तेजन की रोशनी का प्रसार हो।

हमारा सौभाग्य है कि हमें पूज्य गुरुदेव योगीराज जैनाचार्य श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. का मार्गदर्शन सैद्धान्तिक पथ तथा उत्तम आचरण की वाटिका उपलब्ध है । हम सभी को इस परम्परा की जाज्वल्यमान स्थिति को सहस्त्रगुना वृद्धिगत करने में भागीदार बनना है। यही हमारे जीवन की सार्थकता होगी ।

◆◆◆

अध्यक्षीय संदेश

रमेशभाई धरू
राष्ट्रीय अध्यक्ष

ज्ञानपीठ का परीक्षा केन्द्र सुदृढ़ कीजिये

परिषद् धार्मिक शिक्षा प्रसार के उद्देश्य की प्राप्ति के लिये जिस गति से अग्रसर है, वह निर्विवाद रूप से अभूतपूर्व है। धार्मिक संस्कारों को नई पीढ़ी में प्रभावकारी बनाना वर्तमान की सबसे ज्वलन्त आवश्यकता है। सम्पूर्ण विश्व की मानव सभ्यता में भौतिकवाद की विकृतियां बढ़ रही हैं, उनमें राहत देने का कार्य जैन धर्म की शिक्षा तथा उसके अनुसार आचरण की प्रवृत्ति ही विकसित कर सकती है। विशेषतः भारत प्राचीन संस्कृति का देश है। तीर्थंकर भगवन्त श्री ऋषभदेवजी ने जिस सभ्यता का सूत्रपात किया था, उसी ने इस देश को विश्व गुरु की स्थिति तक उन्नत किया। प्रश्न यह है कि श्री ऋषभदेवजी द्वारा प्रणित जैन धर्म का वर्तमान क्या हम सही रूप में संरक्षित कर पा रहे हैं। यदि नहीं तो हमें समय की चुनौती को स्वीकार करना होगा। लोकसंत/राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा. ने हमें हमारा सद्मार्ग दिखाकर जो उपकार किया, उसी का स्वरूप आज श्री यतीन्द्र जयन्त ज्ञानपीठ के माध्यम से परिलक्षित है।

श्री यतीन्द्र जयन्त ज्ञानपीठ को संस्थापित कर उस के माध्यम से राष्ट्रसंत/लोकसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा. ने सप्त वर्षीय पाठ्यक्रम प्रारंभ करवाया था, इसके लिये पाठ्यक्रम निर्धारित किया था एवं पाठ्यक्रम के अनुरूप पाठ्य पुस्तकों की रचना तथा प्रकाशन करवाया था।

इस आधार पर वार्षिक परीक्षाएँ प्रारंभ करवाई थीं। इस वार्षिक परीक्षाओं में छात्र सुविधापूर्वक भाग ले सकें, इसके लिये परीक्षा बोर्ड का गठन कर परीक्षा केन्द्रों की पूरी देश में स्थापना संभव की थी। प्रतिवर्ष यह परीक्षा बोर्ड परीक्षाएं ले रहा है। इस वर्ष की परीक्षाओं की तैयारी भी इसी माह प्रारंभ हो रही है।

परीषद् शाखाओं को चाहिये कि यदि अपने यहां परीक्षा केन्द्र नहीं है तो उसकी स्थापना करे तथा यदि वर्तमान में परीक्षा केन्द्र हैं तो अधिकाधिक छात्रों को परीक्षा में सम्मिलित किया जाना सुनिश्चित करें। आशा है सभी शाखाएं सक्रिय होंगी ।

◆◆◆

प्रश्नोत्तरी

जीव विपाकी कर्म किसे कहते हैं ?

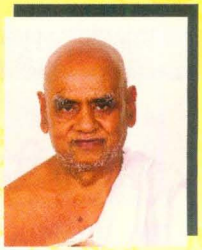

उत्तरदाता
स्व. जैनाचार्य श्रीमद् विजय
जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा.

प्रश्नकर्ता
जैनाचार्य श्रीमद् विजय
नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा.

प्रश्न – जीव विपाकी कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर– जिस कर्म का फल जीव में हो, उसे जीव विपाकी कर्म कहते हैं ?

प्रश्न – जीव विपाकी कर्म प्रकृति के कितने भेद हैं ?

उत्तर– अठहत्तर ज्ञानवरणीय पाँच, दर्शनावरणीय नो, मोहनीय अट्ठाईस, अन्तराय पाँच, गोत्र दो, वेदनीय दो, तीर्थङ्कर नाम कर्म एक, उच्छवास नाम कर्म एक, बादर एक, सूक्ष्म एक, पर्याप्त एक, अपर्याप्त एक, सुस्वर एक, 1 ये 26 प्रकृतियां उदय की अपेक्षा से है। बंध की अपेक्षा से 25 होती है। दुस्वर एक, आदेय एक, अनादेय एक, त्रसत्रिक (त्रस बादर, पर्याप्ता), एक स्थावर एक, प्रशस्त विहायोगति एक, अप्रशस्त विहायोगति एक, सुभग एक, दुर्भग एक, गति चार जाति पाँच इस प्रकार से अठहत्तर हुए ।

प्रश्न – पुद्गल विपाकी कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर– जिसका फल मुख्यरूप से पुद्गल में हो उसे पुद्गल विपाकी कहते हैं?

प्रश्न – पुद्गल विपाकी कर्म प्रकृति के कितने भेद है ?

उत्तर– 36 हैं वे इस प्रकार हैं 5 शरीर, 3 अङ्गोपाङ्ग, 6 संहनन, 6 संस्थान, वर्ण, गंध रस, स्पर्श, शुभ-अशुभ, स्थिर, अस्थिर, अगुरु लघु, उपघात, पराघात, निर्माण, आतप, अघोत साधारण और प्रत्येक = 36 ।

प्रश्न – भवविपाकी कर्म प्रकृति किसे कहते हैं ?

उत्तर– जिस कर्म के उदय से जीव संसार में रूका रहे उसे भव विपाकी कहते हैं।

प्रश्न – भवविपाकी कर्म प्रकृति के कितने भेद हैं ?

उत्तर– चार 1. नरकायु, 2. तिर्यगायु, 3. मनुष्यायु और 4. देवायु ।

◆◆◆

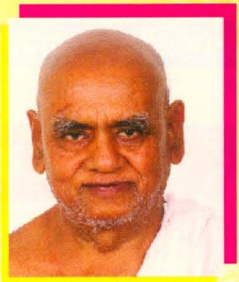

त्रिलोकीनाथ की शरण

गच्छाधिपति जैनाचार्य
श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. की डायरी के पृष्ठ

दिनांक 20.02.2017

उपाधि पैदा करने की प्रवृत्ति करता है। दृष्टि रागी बनकर कुछ भी उपद्रव करता रहता है।

चौबीस घण्टे उसका दिमाग फितूरता में विचरता रहता है, न स्वयं का, न पद का हित कभी सोच पाता है, इसी तरह उसका जीवन व्यतीत होता है, ऐसी मनोवृत्ति से भरा जीवन अनेक प्रकार की कर्म बन्धन युक्त कार्य प्रणाली रहती है, अन्त उसका बुरा है।

दिनांक 21.02.2017

काया आत्म साधना करने का आलम्बन है। आलम्बन एक आराधना है। आधार लेकर आत्म साधना में काया का उपयोग करने वाली आत्मा निश्चय से अनंत संसार की यात्रा का अंत करके इस मानव काया से पंचमी गति का अधिकार पा लेता है। काया के विपरीत होती है माया। माया नहीं चाहिए।

दिनांक 22.02.2017

मूल मजबूत और पक्का चाहिये, मूल मजबूत और पक्का होगा तो सभी को कार्य में सर्व तरह से पूर्ण सफलता प्रदायक बनेगा। मूल को पकड़ के रखने वाला जीवन को जीवन्त रख सकेगा। मूल में अगर भूल है, कमी है, कच्चापन है, शिथिलता है तो सर्वत्र हानि ही हानि है। ध्यान दें आत्मतत्त्व पाने के लिये किस मूल को ग्रहण करना है सोच लें।

दिनांक 23.02.2017

मालिक बिना अंधेरा ! मालिक कौन ? जीव को जाज्वल्यमान सा नक्षत्र की तरह चमकाता है, याने कर्म रज के कादव से, कर्म श्रृंखला के बन्धन से मुक्त रखने वाले त्रिलोकी नाथ, सन्मार्ग दाता परम कृपावन्त सच्चे सन्त को मालिक बनाया, इन का शरण स्वीकारा वही जीव अष्ट कर्मदल से सम्यग दर्शन के सर्व श्रेष्ठ प्रकाश की तरह जीव को प्रकाशमय बनाने वाले ये मालिक ही आधार है अन्य सर्व अन्धार है।

◆◆◆

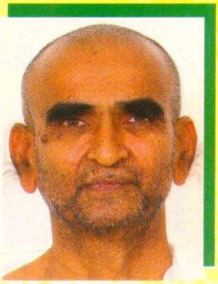

शाकाहार याने दीर्घायु होने का वरदान

(जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा.)

अज्ञान सभी दुःखों का मूल है, अज्ञान के कारण ही मानव सद्चिन्तन से अलग होकर अपना भला-बुरा सोचने में असमर्थ है तथा मन एवं इन्द्रियों का गुलाम बन लक्ष्यहीन जीवन जी रहा है। विज्ञान की दुहाई देने वाले सत्य को जानते एवं मानते हुए भी नकार रहे हैं उनका जीवन प्रदर्शन, विज्ञापन एवं शीघ्रतिशीघ्र लाभ पाने की भावना से दीर्घकालीन दुष्प्रभावों को समझने में असमर्थ होता जा रहा है, आज का मानव विवेक शून्य बन आँखे होते हुए भी ठोकर खा रहा है तथा अमूल्य मानव जीवन को विषय कषायों की तृप्ति के क्षणिक आनन्द में व्यर्थ गंवा, सच्चे सुख से वंचित हो रहा है और दीर्घकाल तक स्वस्थ रहने की कला भूल रहा है, स्वस्थ रहने के लिए शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक संतुलन आवश्यक होता है परन्तु संतुलित आहार की प्रेरणा देने वालों का चिंतन क्षणिक लाभ तक ही सीमित हो रहा है वे जानते हैं कि मानसिक स्थिति का मनुष्य की स्वस्थता में बहुत बड़ा योगदान होता है, फिर भी वे उसे नकार रहे हैं जो आहार हमारी मानसिकता को बिगाड़ता है वह कैसे संतुलित आहार माना जा सकता है ? यह सभी बुद्धिमान व्यक्तियों के लिए चिंतन का प्रश्न है, माँसाहार हेतु मारे जाने वाले पशुओं के स्वास्थ्य का परीक्षण होता है ? कहीं वे असाध्य रोगों से पीड़ित तो नहीं होते ? कहीं मांस के साथ जानवरों के रोग एवं मवाद तो मांसाहार करने वालों के शरीर में प्रवेश नहीं करते ? जहर उबालने से अमृत नहीं बन जाता।

'जैसा खाये अन्न वैसा होये मन':- क्या जानवर हँसते-हँसते अपनी इच्छा से मरता है ? जिस निर्दयता, क्रूरता, बेरहमी से उनको मारा जाता है, मांसाहार के साथ मांसाहारियों के शरीर में प्रवेश कर भविष्य में अनेक असाध्य रोगों का कारण बनते हैं, उनकी मानसिकता को विकृत बनाने में सहायक होते है।

मांसाहार में रोग के कीटाणुओं की उत्पत्तिः– चैतनाशील जीवों में मृत्यु के पश्चात् हानिकारक कीटाणुओं की उत्पत्ति अधिक एवं शीघ्र होती है इसी कारण मृत्यु होने के पश्चात् मृतक को जल्दी से जल्दी जलाया अथवा दफनाया जाता है क्या पशुओं का वध करते ही मांस का भक्षण कर लिया जाता है ? अगर नहीं तो क्या तब तक उसमें हानिकारक कीटाणु उत्पन्न होकर आसपास के वातावरण को दुषित नहीं करते ?

विपरीत गुण वाले रक्त का दुष्प्रभाव रोगी को जब रक्त की आवश्यकता होती है तब डॉक्टर उस रोगी के ग्रुप का ही रक्त क्यों देते हैं ? क्या मांसाहारी ऐसा दावा कर सकते हैं कि मांस के साथ जिस खून का अंश पेट में जाता हैं, वह उनके ग्रुप का ही होता है? क्या विपरीत गुण वाला रक्त एवं मांस शरीर में हानि तो नहीं पहुंचाएगा ?

शाकाहार पर व्यक्ति जीवन भर रह सकता है, मनुष्य की शारीरिक रचना शाकाहार के लिए ही उपयुक्त है, मांसाहार के लिए नहीं । शाकाहारी संरचना वाला मानव यदि मांसाहार करेगा तो जल्दी रोग ग्रस्त होगा।

स्वास्थ्य की दृष्टि से मांसाहार से लाभ कुछ भी नहीं तथा हानियाँ अधिक होती है। अतः हमें स्वयं निर्णय करना चाहिए कि हमारा खानपान कैसा हो। शरीर को स्वस्थ, तंदुरस्त, दीर्घायु रखने के लिए हमें शाकाहार का ही सेवन करना चाहिए। (क्रमशः) ◆◆◆

25 की संख्या का महत्व

1. 25 कुसुमांजलि कौन से पूजन में आती है ? **(अर्हत्महापूजन)**
2. 25 नरकावास एक दिशाविदिशा के चौथी नरक के कौन से प्रतर में है ? **(वर्च –4)**
3. 25 सौ गाँवों की मुख्य नगरी कौन सी थी ? **(श्वेताम्बिका)**
4. 25 शुभ भावना का वर्णन किसमें आता है ? **(प्रवचनसारोद्धार)**
5. अशुभ भावना का वर्णन किसमें आता है ? **(प्रवचन सारोद्धार)**

अतिथि रचना

बीता सो बीत गया

(आगमवेत्ता साध्वी वैभवश्रीजी 'आत्मा')

इस सृष्टि चक्र में ऐसा एक भी क्षण नहीं आया, जो क्षण भर से ज्यादा ठहर पाया हो। ऐसा एक भी पल नहीं आया, जो पल भर से अधिक रूक पाया हो। यहाँ 'समय' हर समय बदलता है और समय के आयाम में सब कुछ बदलता है। समय में ही सब समाए हुए हैं, यही तो कारण है कि हम 'काल' को 'समय' कहते हैं। 'सह मय' कहते हैं। संपूर्ण अस्तित्व की समाहिति का नाम 'समय' है।

अस्तित्व का तुरीय आयाम (Fourth Dimension) समय है। जिसे देखा, छुआ, सूंघा, चखा व पकड़ा नहीं जा सकता, उसे 'समय' कहते हैं। समय की पकड़ संभव ही नहीं। बहती धार को रोकना कदाचित् संभव हो जाए तब भी समय की धार न रुकी है, न रूकती है, न ही कभी रूकेगी। जो रूके हैं, रूकना चाहते हैं, वे भी रुक तो नहीं पाते किन्तु रुकने की चाहत के कारण धोखा खा जाते हैं। ठहरने की चाहत ही 'मिथ्या' है, पर मिथ्या को उपजाना मन की पुरानी आदत है।

'मन' वह जिसे समय की स्मृतियों को संजाने की आदत है। वही है जो परिचित है अतीत से, बीते युग की बातों से। मन की आदत है- वर्तमान को अतीत के आईने से देखने की। मन का संचार सर्वत्र है। जो बीता उस समय में भी वह गति कर सकता है, जो आया नहीं उस समय की भी वह कल्पना कर सकता है। जो 'है' उससे फिसल-फिसल जाता है, हमारा मन । मन ने ही सदियों को संजोया, पुरखों का परिचय कराया, सभ्यताओं की नदी को मुहानों का ज्ञान कराया। मन एक साधन मात्र है। जैसे देह के लिए नेत्र, ठीक वैसे ही आत्मा के लिए मन। इस मन को कहाँ ले जाना है? यह निर्णय 'आतमदेव' का है, हमारा अपना है। हम 'मन' नहीं है, मन के स्वामी हैं, निज के नाथ हैं। मालिक हैं, खुद-खुदा हैं परन्तु मन की, अतीत की बातों के मोह से न जुदा है। 'मन' फोटोग्राफर की तरह उन स्मृतियों को कैद करके रखना चाहता है, जो उसे मनभावन है, उसकी पसंदगी व चाहत से भरी है। पुरानी मनभवान यादों से चिपका मन हर स्थान को हर वर्तमान क्षण को अतीत के चित्रों से तौलता है। मन के यही खेल जीवन की कथा को व्यथा बना डालते हैं।

अतीत के सुखों की स्मृतियाँ तो वर्तमान को दुःखों से भरती ही है।

अतीत के दुःखों की यादें भी वर्तमान को दुःखों से भर देती है। बीती बातें हर हाल में सताती है, चाहे वे रंगीली रही हो, चाहे वे दर्दीली रही हो। अतीत की बातों का नशा 'प्रमाद' है। वह हमें गफलत में डालता रहता है, गाफिल बनाए रखता है । अतीत के रेखाचित्र जानने योग्य तो हैं किन्तु उन आदर्शों का अनुगमन (following) संभव नहीं है। आदर्श बातें कितनी भी लुभावनी क्यों न हो, प्रेरणादायक क्यों न हो किन्तु उनकी प्रतिकृति (Photocopy) संभव नहीं है। सृष्टि का हर कण नया है। उसे निर्भ्रान्त चित्त से देखा जाना योग्य है। यद्यपि अधिकांश लोग ऐसा कर नहीं पाते। हम में से अधिकांश लोग मन के गलियारों में भटकते हुए अपनी जिन्दगी जाया करते रहते हैं। पुरानी यादों के मोह में निज भाव भुलाकर जीना, वस्तुतः जीना नहीं है। समझदार इंसान अतीत से सीख लेता है किन्तु उसकी स्मृतियों में खोया नहीं रहता। वह जानता है कि जो बीता, वो बीत ही गया।

Let bygones be byognes

आज आप यदि आर्यरक्षित की माता जैसी माता बनकर पुत्र को साधु बनने नहीं भेज सकते। किन्तु पाठशाला तो भेज सकती हो ना ? क्या दशा है ? हमारी पाठशाला की ? आपके कितने बच्चे पाठशाला में आते है ?

कान्वेन्ट स्कूल में आपके बच्चे नहीं जाते तो मारकर भी भेजते हो। उस शिक्षा को आपने आवश्यक समझा है। धार्मिक अध्ययन आवश्यक नहीं ।

माता शत्रु पिता वैरी, येन बालों न पाठित ।
सभा मध्ये न शोभन्ते, हंस मध्ये बको यथा ।।

वह माता शत्रु और पिता वैरी है जो बच्चों को धर्ममय संस्कार अच्छा शिक्षण न देते हो। जैसे हंसों के बीच बगुले की हँसी होती है, वही हालत पण्डितों की सभा में अनपढ़, कुसंस्कारी की होती है।

न्यास से एक पक्ष जीतता है, व एक पक्ष हारता है, पर समाधान से दोनों पक्ष का निर्णय होता है। माँ ही ऐसी है, जो न्याय नहीं समाधान करती है।

परिवार में भोजन के समय दादा-दीदी ने सभी को पूरा लड्डू रखा, लेकिन छोटे बच्चे को आधा लड्डू रखा, बच्चा पूरा लड्डू खाने की जिद करता है। माँ आती है, आधे लड्डू में घी मिलाकर पूरा लड्डू बनाकर कहती है- छोटे बच्चे को छोटा लड्डू और बड़े को बड़ा लड्डू। बच्चा शांत हो जाता है, इस प्रकार माँ समाधान करती है।

'W' तो केवल चौड़ा होगा, लेकिन माँ का 'M' सदा ऊंचा होगा। अतः समूची दुनिया में माँ ऊंची है।

-जूली 'जयणा' गोलेचा ◆◆◆

महाराजा श्रेणिक

(मुनिराज डॉ. श्री सिद्धरत्नविजयजी म.सा.)

अभयकुमार के साथ वे सुलसा के पास सांत्वना देने आये। सांत्वना भरे वचनों से नाग एवं सुलसा के दिल को धीरज बँधाया। इस घटना से सुलसा का अर्न्तहृदय वैराग्य की ओर उन्मुख हो गया। संसार से उदासीन होकर वह धर्मध्यान करने में जुट गई। पति का प्यार स्त्री का सर्वस्व होता है। चेलणा कुछ दिन तक माता-पिता के विरह, बहन के साथ वंचना एवं उनसे छुपकर भाग आने की घटना से मन में दुखी व उदासीन सी रही, किन्तु श्रेणिक का उन्मुक्त स्नेह एवं अन्तरहृदय का पूर्ण विश्वास जब उसे प्राप्त हुआ तो पिछली सब चिन्ताएँ अपने आप धुल गई। शीतल जल का सिंचन पाकर जैसे कमल खिल उठता है वैसे ही चेलणा का हृदय कमल खिल उठा वह आनन्द एवं उल्लास के साथ इन्द्र-इंद्राणी की भाँति जीवन का सुख भोगने लगी। सुख - दुख, हर्ष-विषाद जीवन में धूप-छाया की तरह आते हैं। कोई भी व्यक्ति न सदा सुखी रहता है और न सदा दुखी। सुख की शीतलधारा बहती-बहती प्रकृति के नियम के अनुसार स्वयं सूखने लगती है। हाँ, यदि पुण्य-प्रबल रहे तो पुनः जलप्रवाह प्राप्त कर ज्यों धारा का वेग बढ़ता है, त्यों सुख की धारा भी वेगवती हो सकती है, किन्तु एक समान स्थिति में बहुत दिन तक नहीं चलती। चेलणा के जीवन में सब प्रकार की सुविधाएँ, सुख का साम्राज्य और पति का सम्पूर्ण प्यार - सौभाग्य का समुद्र ठाठें मार रहा था, पर भाग्य ने उसके साथ ऐसा व्यंग्य किया कि वह एक बार अचानक अत्यन्त दुखी और चिंतित हो गई। पहली बार उसे जीवन में अनेक दुस्वप्न आने लगे। गर्भ प्रभाव के कारण उसके मन में बुरे-बुरे विकल्प उठने लगे और अनेक प्रकार के अशुभ स्वप्न भी आने लगे।

गर्भ-प्रभाव जन्य विकल्प (दोहद) के कारण चेलणा अत्यन्त चिंतित और उदासीन रहने लगी। उसका कमलसा विकस्वर मुख मुरझा गया, आँखों का तेज लुप्त हो गया और चेहरे पर कालिमा सी छाने लग गई। श्रेणिक

चेलणा की यह दशा देख एकदम चिन्तित हो गये। उन्होंने आग्रह करके पूछा-'तुम्हें क्या कष्ट है ? क्या चिन्ता है?' कुछ दिन तक तो चेलणा बात को टालती रही, पर जब चिन्ता का प्रवाह को रोक नहीं सकी तो उसने नीचा मुँह करके आँखों में आँसू भर के महाराज से कह दिया- 'महाराज ! मेरे गर्भ में जो शिशु आया है, वह बहुत ही दुष्ट और अनार्यवृत्ति का प्रतीत होता है। जैन कुल में जन्मी, धर्म के पवित्र संस्कारों में पली, मुझ जैसी नारी के मन में इतना अपवित्र और इतना घृणित विचार आज तक कभी नहीं आया, और वह फूट - फूटकर रोने लगी।

श्रेणिक ने उसे सांत्वना दी, अपने प्यार की कसम खिलाई और उसका हाथ अपने हाथ में लेकर कहा- 'देवी ! इतनी बुद्धिमती और चतुर होकर भी अज्ञान व असंस्कारी स्त्री की तरह क्या कर रही हो, मन में जो भी विचार है, प्रकट करने से पहले ही रोना, बात कहने से पहले ही हँसना-ये दोनों ही मूर्ख के लक्षण हैं। जो भी बात है, यदि पति के सामने भी तुम स्पष्ट नहीं कर सकोगी, तो फिर किसके सामने कहोगी ? क्या स्त्री के लिए पति से भी अधिक विश्वसनीय और उससे भी अधिक अपना कोई होता है ? (क्रमशः)

◆◆◆

धन्य है गुरु शिष्य

कुर्मारपुर नगर में वहां के राजा की भक्ति के वश होकर श्री सिद्धसेन दिवाकर अपने आचार में शिथिल बनकर प्रतिदिन पालखी में बैठकर राजसभा में जाने लगे। एक दिन एक वृद्ध मनुष्य ने सूरिजी की पालखी उठायी। वृद्ध धीरे-धीरे चल रहा था। यह देखकर पालखी में बैठे सिद्धसेन दिवाकरजी ने कहा- 'स्कन्धस्तव बाधति' हे वृद्ध ! क्या तेरा कंधा दुःखता है ? पालखी उठाने वाले वृद्ध ने उत्तर दिया- ' न तथा बाधते स्कन्धो, यथा बाधति बाधते' तुम्हारा बाधति प्रयोग (बाध् धातु आत्मने पद होने से 'बाधते' रूप होता है परन्तु श्री सिद्धसेन सूरि जैसे विद्वान ने भी अनुपयोग से अशुद्ध प्रयोग किया अतः उसके प्रति व्यंग्य करते हुए कहा) जैसी पीड़ा देता है वैसी पीड़ा स्कन्ध नहीं देता। सिद्धसेनसूरिजी पालखी से नीचे उतर पड़े। पालखी उठाने वाला वह वृद्ध अन्य कोई नहीं किन्तु स्वयं को आचार मार्ग से स्खलित होता हुआ जानकर अपने पर उपकार करने हेतु पधारे हुए गुरुदेव श्री वृद्धवादी सूरीश्वरजी को देखकर वे लज्जा से उनके चरणों में झुक पड़े। सिद्धसेन सूरीश्वर जैसे राजमान्य समर्थ विद्वान पुरुष की यह कैसी सरलता और शिष्य को मार्ग पर लाने के लिये प्रसंगोचित शिक्षा देने वाले गुरु महाराज का यह कैसा अप्रतिम वात्सल्य ।

लेखांक - 74

प्रवचनकार

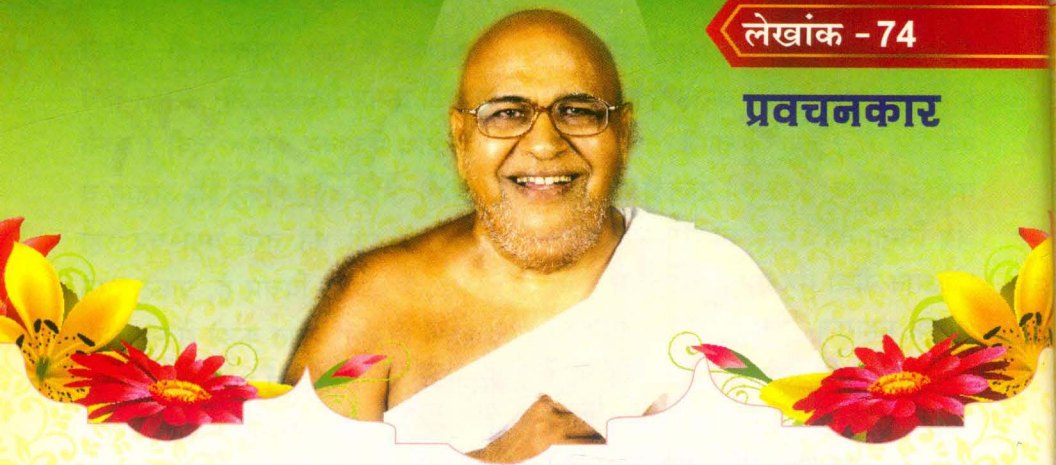

गणधरवाद

(स्व. मनीषी लोकसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.)

सारांश यह है कि इस भव में भी ऐसी कोई वस्तु नहीं है, जो सर्वथा समान या असमान ही हो, तो फिर परभव में वैसा कैसे बन सकता है ? यथार्थतः बात ऐसी है कि संसार की समस्त वस्तु सदृश भी है असदृश भी, नित्य भी है और अनित्य भी इत्यादि। इस प्रकार वे अनेक विरोधी धर्मों से युक्त हैं।

समस्त विश्व के पदार्थों के साथ सत्त्वादि धर्मों के कारण समानता होने पर भी जैसे युवक की अपनी भूतकालीन बाल्यावस्था और भावी वृद्धावस्था के साथ सर्वथा समानता नहीं होती, वैसे ही जीव की भी अस्तित्व आदि धर्मों के कारण समस्त वस्तुओं के साथ समानता होने पर भी परभव में सर्वथा समानता नहीं होती, किन्तु समानता एवं असमानता दोनों होती है।

एक जीव पूर्व में मनुष्य हो, किन्तु वह मरकर जब देव होता है, तब तत्वादि धर्मों के कारण अपनी पूर्वावस्था के साथ एवं समस्त विश्व के साथ उसकी समानता होने पर भी देवत्व आदि धर्मों की अपेक्षा उसकी पूर्वावस्था के साथ जैसे असमानता है, उसी प्रकार वही मनुष्य जीव रूप से नित्य है और मनुष्यादि रूप से अनित्य है। इसलिए जैसे जीव समान और असमान धर्म वाला है, वैसे ही नित्य और अनित्य भी है। इसी प्रकार उसमें अन्य भी विरोधी धर्मों की सिद्धि होती है, जिससे पर भव में जीव में सर्वथा सादृश्य नहीं माना जा सकता है।

परभव में वही जाति नहीं है

सुधर्मा- आर्य ! मेरे मत में भी कारण के साथ कार्य का सर्वथा सादृश्य नहीं है, किन्तु जब मैं यह कहता हूँ कि पुरुष मर कर पुरुष होता है, तब मात्र जाति का अन्वय है, ऐसा प्रतिपादन करना दृष्ट है। अर्थात् जाति परिवर्तित नहीं होती, यही मेरा तात्पर्य है।

महावीर- लेकिन जब तुम परभव को कर्म जन्य मानते हो, तो कर्म के हेतु विचित्र होने से कर्म को भी विचित्र मानना ही पड़ेगा एवं कर्म के फल को भी विचित्र मानना पड़ेगा। अतः यह नहीं कहा जा सकता कि उसी जाति का अन्वय पर भव में भी रहता है।

इसके अतिरिक्त यदि जाति समान ही रहती हो, तो समान जाति में भी जो उत्कर्ष- अपकर्ष परिलक्षित होता है, वह घट नहीं सकता। जो इस भव में सम्पत्ति शाली पुरुष हो, वह परभव में भी वैसा ही रहना चाहिए तथा जो इस भव में दरिद्री हो, वह परभव में भी दरिद्री होना चाहिए । इस प्रकार परभव में उत्कर्ष एवं अपकर्ष को अवकाश नहीं रहना चाहिए और यदि वैसा होता हो, तो दानादि फल निष्फल - वृथा होगा। अर्थात् दानादि को निष्फल ही मानना पड़ेगा किन्तु दानादि को निष्फल तो माना नहीं जा सकता, क्योंकि परलोक में मुझे देव ऋद्धि प्राप्त हो, मेरा उत्कर्ष हो आदि भावना से ही लोग सत्कर्य में प्रवृत्त होते हैं। यदि सत्कार्यों का कुछ भी फल नहीं हो, तो फिर लोग दानादि में प्रवृत्ति किसलिए करते हैं ?

दूसरी बात यह है कि यदि जाति सादृश्य का एकान्त आग्रह रखा जाए, तो वेद में जो यह कहा है कि श्रृगालों वै एष जायते यः सपुरिषो दह्यते- जिसे मल-मूत्र के साथ जला दिया जाता है, वह श्रृगाल होता है- इसमें विरोध आता है। उक्त वेद वाक्य से तो यह सिद्ध होता है कि पुरुष मरकर श्रृगाल हो सकता है। तथा अग्निहोत्रं जुहुयात् स्वर्गकामः- स्वर्गाकांक्षी अग्निहोत्र करे और अगिन्ष्टोमेन यम राज्यमपि जयति अग्निष्टोम से (मनुष्य) यम राज्य को जीतता है- इत्यादि वाक्यों में जो मनुष्य को स्वर्ग प्राप्ति और देवत्व प्राप्ति की बात आती है, उसका भी विरोध हो जाएगा। इसलिए परलोक में जाति सादृश्य का आग्रह नहीं रखना चाहिए। (क्रमशः) ◆◆◆

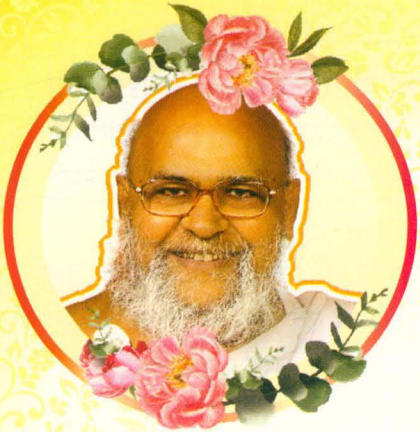

(लेखांक-4)

धारावाहिक उपन्यास

किस्मत की बात

स्व. पुण्य सम्राट युग प्रभावक लोकसंत जैनाचार्य
श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

सेविका के शब्द रानी के कर्ण कुहरों में पड़े और वह किनारे पर आ गई। उसने बोला- 'मैं भी स्नान करने में कितनी मग्न हो गई। अपना तो ठीक है किन्तु स्वामी का तो ध्यान रखना था। मेरे कारण वे अभी तक भूखे हैं। मुझे शीघ्रता करनी चाहिए।' ऐसा सोचते - सोचते वह तीव्र गति से नदी तट पर बने कक्ष में गई। वस्त्र बदले और रथ पर सवार होकर महल की ओर चल दी। राजमहल में पहुंचकर प्रतीक्षारत राजा को भोजन कराया।

एक दिन रानी पद्मावती गवाक्ष में खड़ी बाहर की ओर देख रही थी। एकाएक उसकी दृष्टि समीप के वृक्ष पर बने घोंसले पर पड़ी। वहां चिड़ा-चिड़ी अपने एक बच्चे के साथ आनंद के साथ किलौल कर रहे थे। वह दृश्य रानी को बहुत अच्छा लगा और काफी देर तक वह वहीं खड़ी देखती रही। इस दिन के बाद रानी नियमित रूप से चिड़ा-चिड़ी और उनके बच्चों को घंटों निहारा करती। कभी-कभी वह चिड़े के इस परिवार से अपने परिवार की तुलना भी करने लगती। ऐसा करते समय उसे अजीब सी अनुभूति होती।

ऐसे ही एक दिन जब रानी गवाक्ष में खड़ी होकर देख रही थी कि कहीं दूर से एक पत्थर आया और घोंसले में बैठी चिड़ी को लगा। पत्थर का आघात कुछ गहरा था। चिड़ी कुछ देर तड़फी और फिर हमेशा के लिए शांत हो गई। रानी पद्मावती इस घटना से विचलित हो गई। उसे ऐसा अनुभव हुआ कि यह घटना उसके जीवन में घटित होने वाली है। उसे इस प्रकार पीड़ित

देखकर राजा वीरधवल ने उसे काफी समझाया। उसे यह भी स्मरण दिलाया कि इस अवधि में उसे सदैव प्रसन्नचित रहना चाहिए। उसके प्रत्येक प्रकार के व्यवहार का प्रभाव उसके होने वाले बच्चों पर पड़ता है। रानी ने स्वयं भी सम्हलने का प्रयास किया किन्तु उसे बार-बार चिड़िया की मृत्यु का दृश्य स्मरण हो आता था। जैसे-तैसे उसने अपने आपको इस घटना से उबारा। अब वह पहले की भांति ही प्रसन्नचित्त रहने लगी।

रानी ने देखा कि कुछ दिनों तक तो घोंसले में चिड़ा और उसका बच्चा दोनों रहे किन्तु कुछ दिनों बाद घोंसले में एक चिड़िया नियमित रूप से आने लगी और कुछ दिन बाद वह भी उसी घोंसले में रहने लगी। जब चिड़ा-चिड़ी और बच्चा घोंसले में होते तो बच्चा घोंसले के बाहर आकर इधर-उधर फूदकता रहता। रानी को इस समय बच्चा दयनीय स्थिति में दिखाई देता। वह मन ही मन विचार करती कि विमाता का कुप्रभाव मनुष्यों में ही नहीं पक्षियों में भी देखने को मिलता है। उसने एक दिन यह भी देखा कि चिड़ा-चिड़ी ने उस बच्चे को अपने घोंसले से बाहर निकाल दिया है। इससे रानी का कोमल हृदय आहत हो गया। पीड़ा से वह कराह उठी। उसे लगा कि यह घटना उसके आने वाले जीवन का संकेत है। उसने इस घटना की जानकारी अपने पति राजा वीरधवल को दी। राजा ने उसे समझाया कि वह इस प्रकार दुःखी न हो। अपने मानस पटल पर इस प्रकार के कुविचारों को जन्म न दें।

'स्वामी ! कहीं ऐसा न हो कि इस घटना की आवृत्ति हमारे जीवन में भी हो जावे। मेरे बाद मेरे बच्चे का आप पूरा ध्यान रखेंगे और पुनर्विवाह नहीं करेंगे।' रानी ने भाव विव्हल होकर अपने पति से कहा।

'तुम भी कैसी, पागलों जैसी बात कर रही हो। मेरा प्रेम तुम्हें मुझसे अलग नहीं कर सकता। अपने दिमाग से ऐसे विचार निकाल फेंको। हमारे साथ ऐसा कुछ नहीं होगा, जैसा तुम सोच रही हो।' राजा ने कहा।

रानी पद्मावती अपने पति की बात सुनकर उस समय चुप हो गई किन्तु उसके हृदय के अन्दर एक फांस रह गई जो सदैव चुभती रहती थी। इस विषय पर वह अपने पति से और बात भी करना नहीं चाहती थी। (क्रमशः)

◆◆◆

गतांक के आगे

धर्म का मूल क्या है ?

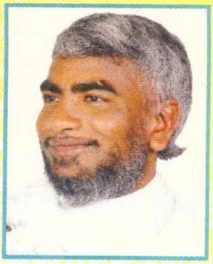

संशोधक–मुनि श्री चारित्ररत्नविजयजी म.सा.

मेरी जयन्त विमान के देवभव की आयु पूरे बत्तीस सागर की थी। अतः मैंने तुम छहों के पश्चात् जयन्त विमान के च्यवन कर विदेह जनपद के महाराजा कुम्भ की महारानी प्रभावती देवी की कुक्षि में गर्भ रूप से उत्पन्न हो गर्भकाल समाप्त होने पर कन्या के रूप में जन्म ग्रहण किया है।

हे राजाओं ! क्या आप लोग अपने इस भव से पूर्व के भव को भूल गये हो, जिसमें कि हम सातों ही जयन्त नामक अनुत्तर विमान में कुछ कम बत्तीस सागर जैसी सुदीर्घावधि तक साथ-साथ देव बनकर रहे हैं। वहाँ हम सातों ने प्रतिज्ञा की थी कि हम देवलोक के च्यवन करने के पश्चात् परस्पर एक-दूसरे को प्रतिबोधित करेंगे। आप लोग अपने उस देव भव को स्मरण करो।' भगवती मल्ली के मुखारविन्द से अपने दो पूर्वभवों का विवरण सुनकर वे छहों राजा विचारमग्न हो गये। विचार करते-करते शुभ परिणामों, प्रशस्त, अध्यवसायों, लेश्याओं की विशुद्धि एवं ज्ञानावरणीय आदि कर्मों के क्षयोपशम से ईहा, अपोह, मार्गण, गवेषण करने से उन छहों राजाओं को संज्ञि जाति- स्मरणज्ञान हो गया। जितशत्रु आदि छहों राजाओं को जातिस्मरण ज्ञान होते ही मल्ली भगवती को विदित हो गया कि इन्हें जातिस्मरण ज्ञान हो गया है। इन्हें पुराने भव का सब कुछ याद आ गया है। मल्ली भगवती ने तत्काल गर्भगृहों के सभी द्वारों को खुलवा दिया। द्वार खुलते ही जितशत्रु आदि छहों राजा भगवती मल्ली के पास आये और पूर्वभवों के वे सात मित्र एक स्थान पर सम्मिलित हो गये। तदनंतर भगवती मल्ली ने उन छहों राजाओं को सम्बोधित करते हुए कहा- 'देवनुप्रियों ! मैं तो संसार के भवभ्रमण रूपी भय से उद्विग्न हूं, अतः प्रव्रजित होउंगी। अब आप लोगों का क्या विचार है, क्या करना चाहते हैं, आप लोगों का हृदय कितना सशक्त,

कितना समर्थ है?

भगवती मल्ली का प्रश्न सुनकर उन जितशत्रु आदि छहों राजाओं ने उनसे निवेदन किया है देवानुप्रिये ! जब आप प्रव्रजित हो रही हैं, तो फिर हमारा अन्य कौन सहायक होगा? कौन हमारा आधार होगा और कौन हमें उन्मार्ग से बचा सन्मार्ग में लगायेगा? अतः जिस प्रकार आप आज से पहले के तीसरे भव में हमारे धुराग्रणी, मेढ़ि अथवा मार्गदर्शक बनकर रहे, उसी प्रकार इस भव में भी आप ही धर्ममार्ग में प्रवृत्ति कराने वाले हमारे धुरागृणी रहें, पथप्रदर्शक रहें। हे देवानुप्रिये ! हम भी भवभ्रमण से भयभीत है, हम लोग भी आपके साथ प्रव्रजित, दीक्षित होंगे।

छहों राजाओं की बात सुनकर भगवती मल्ली ने कहा- 'यदि आप सब संसार के भय से उद्विग्न हैं और मेरे साथ प्रव्रजित होना चाहते हैं, तो अपने-अपने घर जायें और अपने-अपने ज्येष्ठ पुत्र को राजसिंहासन पर आसीन कर एक-एक सहस्त्र पुरुषों द्वारा उठाई जाने वाली शिविकाओं में आरूढ़ हो मेरे पास लोट आयें।' उन छहों राजाओं ने भगवती मल्ली की बात को स्वीकार किया भगवती मल्ली उन छहों राजाओं को साथ लेकर महाराज कुम्भ के पास गई। उन छहों राजाओं को महाराज कुम्भ के चरणों में झुकाकर उनसे प्रणाम करवाया। (क्रमशः)

◆◆◆

ध्यान दीजिये

शाश्वत धर्म का प्रकाशन प्रत्येक मास की 3 तारीख को होता है। दिनांक 10 तक आपको अंक प्राप्त न होने पर दोप. 2.30 से 5 के मध्य कार्यालय पर टेलीफोन नं. (07422) 231614 से सम्पर्क करें । प्रकाशनार्थ लेख, रचनाएँ प्रत्येक मास की 2 तारीख तक मंदसौर कार्यालय पर प्राप्त हो जाना आवश्यक है। प्रकाशनार्थ समाचार एवं चित्र उस मास की दिनांक 15 तक मंदसौर प्राप्त होने पर ही उनको उस मास के अंक में सम्मिलित किया जाना संभव है। समाचार हो सके तो कम्प्यूटर पर टाइप करवाकर भेजें ।

पते पर परिवर्तन या नए ग्राहक की सूचना शाश्वत धर्म के मेल Mail-ID-shaswatdharmajain@yahoo.in पर दी जा सकती है। डाक से लिखित भिजवाने की भी सुविधा है।

शाश्वत धर्म के नए ग्राहक बनने व सहायता राशि भिजवाने हेतु शाश्वत धर्म के करंट अकाउंट नं. 63035775492 स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, शाखा मुखर्जी चौक, मंदसौर में जमाकर रसीद की फोटोकॉपी कार्यालय पर भिजवाएं ।

प्रासङ्गिकम्

कब होगा मेरा मोक्ष ?

(पुण्यसम्राट् गुरुदेवश्री के शिष्य मुनिश्री निपुणरत्न विजयजी)

श्री शत्रुंजय महातीर्थ ! अनंत जीवों की मुक्ति से पावन महातीर्थ.....

जो शाश्वत है, महान है, पवित्र है, अद्वितीय है, अद्भुत है,

भव्य है, दिव्य है, विशिष्ट है, मनोहर है, आकर्षक है, अलौकिक है ।

यहाँ का कण-कण सिद्धि की सौरभ से सुवासित है ।

एक ही दिन में यहाँ कोटि-कोटि आत्माओं ने सर्वकर्मक्षय कर मुक्तिगमन किया है।

* कार्तिक सुदि 15 को 20 क्रोड़ मुनि मोक्ष गये
* फाल्गुन सुदि 20 को 2 क्रोड़ मुनि मोक्ष गये
* फाल्गुन सुदि 13 को 8.50 क्रोड मुनि मोक्ष गये
* चैत्र सुदि 15 को 5 क्रोड़ मुनि मोक्ष गये
* आसो सुदि 15 को 20 क्रोड़ मुनि मोक्ष गये

इससे अतिरिक्त भी अनेक संख्या है, जिन्होंने सिद्धगिरि से सिद्धगति की यात्रा की। इन विराट संख्या को सुनने पर ऐसा लगता है कि उस समय हमारी आत्मा कहाँ होगी ? लेकिन इस भव में मानव जन्म, जैन कुल, धर्मश्रवण, सम्यग्-श्रद्धा आदि दुर्लभ योग को प्राप्त कर हमने धन्यता का एहसास किया, उसमें भी 15 कर्मभूमि क्षेत्रों में एकमात्र ऐसा शाश्वत गिरिराज की प्राप्ति ने भी हमें धन्यातिधन्य बना दिया। भव्य जीव ही गिरिराज की स्पर्शना करता है, ऐसा शास्त्रवचन जब गुरु भगवंतों के मुख से श्रवण किया तब और अधिक धन्यता का अनुभव किया। गिरिराज की यात्रा कर 'मोक्ष प्राप्ति' का अधिकार प्राप्त कर ही लिया। इस भव में मोक्ष नहीं होगा, लेकिन मोक्ष प्राप्ति की योग्यता तो अवश्य प्राप्त हो सकती है। मानो, गिरिराज और गुरुराज का संयोग हमारे लिये मुक्ति संयोग बन गया है। इतने से संतोष नहीं करना है। अब मोक्ष पुरुषार्थ करना है, तभी उपरोक्त संयोग सार्थक होगा। मोक्ष पुरुषार्थ+धर्म पुरुषार्थ कैसे करना, वो जानने के लिये 'सद्गुरु' शरण में जाकर विनयपूर्वक पृच्छा-प्रतिपृच्छा करना चाहिये।

शास्त्रों में मोक्षमार्ग का सुंदरतम निरूपण किया गया है, लेकिन शास्त्रों का अध्ययन 'गुरु निश्रा' में ही विनयपूर्वक होना चाहिये। हम स्वयं हमारी मति से

शास्त्रों के रहस्यों को प्राप्त नहीं कर सकते, अतः गुरु के द्वारा ही शास्त्रोक्त मोक्षमार्ग का सम्यग बोध प्राप्त कर तदनुरूप उसी दिशा में आगे बढ़ना चाहिए। शास्त्रों में वर्णित मोक्षमार्ग का संक्षिप्त बोध इस लेख द्वारा हम जानने का प्रयास करते हैं, विशेष बोध, 'गुरुकुलवास' में ही संभव है।

* सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः (तत्त्वार्थ सूत्र)
* सम्यक्त्वज्ञानचारित्रसम्पदः साधनानि मोक्षस्य (प्रशमरति)
* आश्रवो भवहेतुःस्यात्, संवरो मोक्षकारणम् (वीतरागस्तोत्र)
* तमेव तद्विजेतारं, मोक्षमाहुर्मनीषिणः।। (योगशास्त्र)
* तदेव तैर्विनिमुक्तं, भवान्त इति कथ्यते ।।(अध्यात्मसार)

ऐसे अनेक शास्त्र वचन हैं, जिसके द्वारा मोक्षमार्ग को सहजता से जान सकते हैं। इन वचनों के रहस्यों को समझकर फिर सत्पुरुषार्थ करना है, जिसके द्वारा हम वास्तविक मोक्ष मार्ग की ओर आगे बढ़ सकते हैं। मोहनीय कर्म के प्रभाव से हम सत्यबोध से सदैव दूर रहते हैं, इसलिये जिनाज्ञापालन ही मोहनीय कर्म को परास्त करने का अमोघ आलम्बन (शस्त्र) है। जिसका निर्देशन बिना सद्गुरु प्राप्त नहीं हो सकता है। जैसे दवाई अनेक है, लेकिन हमारे लिये कौन सी उपयोगी है, वो सफल चिकित्सक ही बता सकता है, वैसे ही शास्त्र अनेक हैं, लेकिन हमारे आत्महित के लिये कौन सा शास्त्र उपयोगी है वो निपुण गुरु ही बता सकते हैं।

मोक्षमार्ग प्राप्त करने के पश्चात् तद्नुरूप पुरुषार्थ प्रारंभ करने के पश्चात् भी हम मार्गवर्ती हैं या नहीं, इसका निर्णय भी शास्त्रों के द्वारा ही प्राप्त होता है। जैसे- **उपदेशमाला** ग्रन्थ में लिखा है कि निकट समय में मोक्ष जानेवाले जीव का यह लक्षण जानना कि वो विषयजन्य सुखों में राग नहीं करता और तप, चारित्र, ज्ञान आदि सर्वस्थानों में सदैव पुरुषार्थ करता है। हम भी आराधना बहुत करते हैं, लेकिन वैषयिक सुखों का नियंत्रण भी कितना आवश्यक है वह बात ग्रंथकार बताते हैं (उपदेशमाला - 290) **इन्द्रियपराजयशतक** ग्रंथ में लिखा है कि जैसे-जैसे रागादि दोष दूर होते हैं, जैसे-जैसे विषयों के प्रति वैराग्य होता है, वैसे-वैसे जीवों को मोक्ष की समीपस्थ जानना ऐसे लक्षणों के द्वारा भी हम जान सकते हैं कि हम मोक्ष से कितने दूर हैं।

मोक्ष प्राप्ति के लिये सबसे अधिक आवश्यकता है 'मन की निर्मलता' हमारी सर्व आराधनाओं का लक्ष्य भी यही होना चाहिये कि हमारी मन की मलिनता दूर हो। बाह्य क्रियाओं से ही भीतर की शुद्धि हो सकती है, लेकिन शुद्ध आशयपूर्वक होनी चाहिये। प्रवृति से अधिक परिणति का मूल्य है और प्रवृति का फल परिणति की शुद्धि है।

◆◆◆

श्री शत्रुंजय महातीर्थ-मुख्य 17 उद्धार

(पुण्य सम्राट् ज्ञानाञ्जनम् पर्व-पाटण)

1. भरत महाराजा - इन्द्र के उपदेश से 84 मंडपयुक्त 'त्रैलोक्यविभ्रम' प्रासाद निर्माण करवाया।
2. दंडवीर्य राजा - सौधर्मेन्द्र के उपदेश से दूसरा 'तीर्थोद्धार करवाया।
3. इशानेन्द्र - सीमंधरस्वामी के श्रीमुख से तीर्थमहिमा श्रवणकर यात्रा की, तीसरा 'तीर्थोद्धार' करवाया।
4. माहेन्द्र - तीर्थयात्रा की, जीर्ण प्रसाद देख चतुर्थ 'तीर्थोद्धार' करवाया।
5. ब्राह्मेन्द्र - तीर्थयात्रा की, मंदिरों को जीर्ण देख 'पंचम' 'तीर्थोद्धार' करवाया।
6. चमरेन्द्र - तीर्थयात्रा की, मंदिरों को जीर्ण देखकर षष्टम 'तीर्थोद्धार' करवाया।
7. सगर चक्रवर्ती - अजितनाथ प्रभु के शासनकाल में रजत जिनालय एवं स्वर्ण प्रतिमा के साथ सात्वां 'तीर्थोद्धार' करवाया।
8. व्यंतरेन्द्र - अभिनंदनस्वामी के शासनकाल में प्रभु की प्रेरणा से आठवां 'तीर्थोद्धार' करवाया।
9. चंद्रयशा राजा - चन्द्रप्रभुस्वामी के शासनकाल में नववां 'तीर्थोद्धार' करवाया।
10. चक्रायुध राजा - शांतिनाथ प्रभु के शासनकाल में दसवां 'तीर्थोद्धार' करवाया।
11. राम-लक्ष्मण - मुनिसुव्रतस्वामी के शासनकाल में ग्यारहवां 'तीर्थोद्धार' करवाया।
12. पांडवो ने - नेमिनाथ प्रभु के शासनकाल में बारहवां 'तीर्थोद्धार' करवाया
13. जावड़शा - वि.सं. 108 - वज्रस्वामी के उपदेश से
14. बाहड़ मंत्री - वि.सं. 1213 - कुमारपाल राजा के शासन में श्री हेमचंद्राचार्य के उपदेश से
15. समराशा (पाटण) - वि.सं. 1371 - श्री सिद्धसेनसूरिजी की प्रेरणा से
16. करमाशा - वि.सं. 1587 - (वर्तमान में बिराजमान परमात्मा) श्री विधामंडन सूरिजी की प्रेरणा से
17. विमलवाहन राजा - श्री दुप्पहसूरिजी के उपदेश से होगा ।

विशेष 1 से 12 उद्गार चौथे आरे में हुए, 13 से 16 पांचवें आरे में हुए, 17 वां उद्धार पांचवे आरे के अंत में होगा।

◆◆◆

(संयोजक)
शांतिलाल रामानी

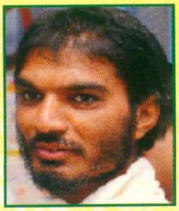

मुनि श्री प्रशमसेनविजयजी
महाराज

विराट व्यक्तित्व

(प्रस्तोता – मुनिराज प्रशमसेनविजयजी म.सा.)

धरू परिवार की पृष्ठ भूमि मारवाड़ से गुजरात तक

धरू वंशीय पूज्य गुरुदेवश्री जयन्तसेन सूरीश्वरजी का पारिवारिक इतिहास मारवाड़ के भीनमाल (राज.) से गुजरात की थराद भूमि तक संचित है। दो हजार वर्ष प्राचीन जैन भूमि थराद (स्थापना संवत् 101) आज भी जैन संस्कृति का गौरवशाली वह स्थल है जिसे देवभूमि के रूप में अंकित करना अतिश्योक्ति पूर्ण नहीं है। दो हजार वर्षों का इसका जैन इतिहास ऐतिहासिक घटनाओं से परिपूर्ण है। इन घटनाओं के माध्यम से थराद ने न केवल समग्र जैन संस्कृति को दिशा दी, परिवेश दिया, अर्थ सम्पन्न किया बल्कि युगान्तरकारी परिवर्तन करने में भी सफलता प्राप्त की। धर्म की आराधना यहां के निवासियों के लिये अपने जीवन व्यवहारों का पर्यायवाची बना। दिव्य विशेषता इस नगर की यह रही कि चाहे इसका नाम थिरपुर से क्रमशः थाराप्रद, थिराप्रद, स्थिराप्रद, थिराद्र तथा थराद बदलता रहा हो लेकिन दो हजार वर्षों के अंतराल में यह कभी भी सम्पूर्ण नष्ट न ही हुआ, नहीं इसके स्थान परिवर्तन में किलोमीटरों की दूरी बनी। यह नगर निरंतर बना रहा तथा अपनी श्री तथा समृद्धि को अभिवृद्ध करता रहा। वैसे किसी युग में भीनमाल वर्तमान में राजस्थान का तहसील मुख्यालय तथा मारवाड़ अथवा मरुधर का अंग गुजरात की राजधानी था। उस समय गुजरात विरान एवं मरुस्थल का रूप लिये हुआ था। छुटपुट बस्तियां थी जहां भावनाशील लोगों का निवास था।

संवत् 101 (ईस्वी सन् 43) में चौहान राजपूत थीरपाल ने भीनमाल से निष्क्रमण किया। इसकी दो

अनुश्रूतियां प्रचलित हैं। फिर भी देवी शक्ति की प्रेरणा ने इस नगर स्थापना की पृष्ठभूमि को तैयार किया थरादवासियों की असीम श्रद्धा आज भी आशापुरी माताजी के प्रति है। उनका मंदिर भी स्थित है तथा इनकी कृपा थराद नगर की स्थापना में निर्विवाद रही। थिरपाल के साथ पूरा कारवां चला।ससला को कुत्ते के पीछे दौड़ते हुए दृश्य को देखकर उनने इसी स्थल पर नया नगर बसाने हेतु माताजी की आज्ञा मानी। माताजी की मूर्ति यहीं मेहमान रूप में बिराजमान कर दी गई, माताजी की नाणदेवीमाता के रूप में पहचाना गया। थीरपाल, वीरवाडिया तथा मोहनदास बैरागी आगे बढ़े। भूमि के वीरता वाली होने का संकेत प्राप्त होने पर चैत्र शुक्ला 14 संवत् 101 को शुभ मुहूर्त्त में तोरण बांधकर ग्राम बसाया। उसी दिन श्री थीरपाल धरु गादी नशीन हुए, वीरवाडिया को मंत्री बनाया तथा मोहनदास को माताजी की सेवापूजा का कार्य सौंपा गया। शहर का नाम थीरपाल धरु के नाम पर थीरपुर रखा गया। साथ आये समूह में से एक अग्रज परिवार में तोरण बांधकर नगर बसाहट की शुरुआत की अतएव उन्हें 'झांपलिया शेठ' परिवार के रूप में जाना गया। थीरपाल चौहान राजपूत थे वे बीसा श्रीमाल गौत्रीय जैन धर्मी थे। उनके वंशज ध्रुव कहलाये जो बाद में धरु हो गया। इतिहास ने थिरपाल को भी धरु उपनाम से ही अंकित किया। शहर का शुभ मुहूर्त ऐसा हुआ कि कुछ समय में ही वह आबाद हो गया। नाणदेवी को राजदेवी के रूप में पूजा जाने लगा। थिरपाल धरु जैन धर्म के अनुयायी थे। उनके साथ आये परिवार भी जैनधर्मी थे अतएव थराद अपनी स्थापना से ही जैन आबादी रहा। यों जैनों के साथ अन्य धर्मी परिवार भी यहां बसे। जैन आबादी का वर्चस्व रहा।

इस कारण जैन आचार्यों, मुनियों, यतियों का यह कर्मक्षेत्र रहा। थराद में हारिलसूरि गच्छ के चन्द्रकुल के प्रसिद्ध आचार्य वटेश्वर सूरि ने नवमी शताब्दी में थीरपुर नाम पर थाराप्रदीय गच्छ की स्थापना की। हरिभद्र सूरि को इस गच्छ का प्रथम आचार्य बनाया गया। इस गच्छ में क्रमशः देवगुप्तसूरि, शिवचन्द्र गणि तथा यक्षदत्त गणि पट्टधर बने। थीरपाल के गढ़सिंह नामक पुत्र तथा जसुबाई व तालाबाई नामक दो पुत्रियां थी। उनकी बहिन हरकुंवरबा थी। थिरपाल के पश्चात् गढ़सिंह ही गादीपति हुए ।

(पूर्ण) ◆◆◆

सभी जीवों का समावेश नौ प्रतिप्रतियों में

(शान्तिलाल सगरावत, मंदसौर)

जीवाजीवाभिगम सूत्र के अनुसार 1. पृथ्वीकायिक, 2. अपकायिक, 3. तेजस्कायिक, 4. वायुकायिक, 5. वनस्पतिकायिक, 6. द्वीन्द्रिय, 7. त्रीन्द्रिय, 8. चतुरिन्द्रिय और 9 पंचेन्द्रिय इस तरह संसारसमापन्नक नौ प्रकार के जीव हैं।

इनकी स्थिति इस प्रकार है-सबकी जघन्यस्थिति अन्तर्मुहुत है और उत्कृष्ट स्थिति में पृथ्वीकाय की बावीस हजार वर्ष, अपकाय की सात हजार वर्ष, तेजस्काय की तीन अहोरात्र, वायुकायिक की तीन हजार वर्ष, वनस्पतिकायिकों की दस हजार वर्ष, द्वीन्द्रिय की बारह वर्ष, त्रीन्द्रिय की 49 दिन, चतुरिन्द्रिय की छह मास और पंचेन्द्रिय की तेतीस सागरोपम है।

सर्वजीव में संसारी और मुक्त दोनों प्रकार के जीवों का समावेश होता है। प्रस्तुत नौ प्रतिप्रत्तियों में सब जीवों का समावेश है।

1.	दो प्रकार के जीव	–	सिद्ध और असिद्ध
2.	तीन प्रकार के जीव	–	सम्यगदृष्टि, मिथ्यादृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि ।
3.	चार प्रकार के जीव	–	मनोयोगी, वचन योगी, काया योगी और अयोगी ।
4.	पाँच प्रकार के जीव	–	नैरयिक, तिर्यंच, मनुष्य, देव और सिद्ध ।
5.	छह प्रकार के जीव	–	औदारिकशरीरी, वैक्रियशरीरी, आहारकशरीरी, तेजसशरीरी, कार्मणशरीरी और अशरीरी
6.	सात प्रकार के जीव	–	पृथ्वीकायिक, अप्कायिक, तेजस्कायिक, वायुकायिक, वनस्पतिकायिक, त्रसकायिक और अकायिक ।
7.	आठ प्रकार के जीव	–	मति ज्ञानी, श्रुत ज्ञानी, अवधिज्ञानी, मनःपर्ययज्ञानी, केवलज्ञानी, मतिअज्ञानी, श्रुतअज्ञानी और विभंगज्ञानी ।
8.	नौ प्रकार के जीव	–	एकेन्द्रीय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, नैरयिक, तिर्यंच, मनुष्य, देव और सिद्ध । ◆◆◆

भारतीय संस्कृति का जीवन्त त्यौहार

होली

(श्री अचलचन्द जैन)

हमारे त्यौहार हमारी संस्कृति एवं सभ्यता की पहचान है। त्यौहार लोगों में परस्पर प्रेम एवं सद्भावना उत्पन्न करते हैं, तथा जीवन में हर्ष और उल्लास का संचार करते हैं जिससे भारतीय संस्कृति जीवन्त हो उठती है।

वेदों में वर्णित चार प्रमुख उत्सवों में होली एक है। रंगों का त्यौहार होली उल्लास और हर्ष का त्यौहार है। फाल्गुन की मस्ती, चंग की थाप पर गूँजते फागगीत एवं विभिन्न रंगों की बौछारें त्यौहार की मस्ती को और अधिक बढ़ा देते हैं। गाँवों में फाल्गुन की गीतों भरी शाम का नजारा पूरे वातावरण को खुशियों से भर देता है। होली की परम्पराएँ भारतीय संस्कृति की वाहक है।

होली चाहे व्रज की हो, या बरसाने की अथवा मारवाड़ की सभी हमारे देश की संस्कृति को जीवन्त करती है। होली स्वछंद और हास- परिहास का त्यौहार है। नाच-गान, हंसी- ठिठोली और मौज-मस्ती की त्रिवेणी है- होली। बसन्त पंचमी के दिन सार्वजनिक चौक में होली के डंडे की रोपणी की जाती है। डंडे की रोपणी के साथ ही होली के फाग गीतों की मस्ती शुरू हो जाती है, जो होली के बाद भी कई दिनों तक जन-जीवन में मिठास घोलती रहती है। होली फाल्गुन मास की पूर्णिमा को मनायी जाती है। फाल्गुन मास की पूर्णिमा वसन्त ऋतु का पूर्ण यौवन है।

होली के मौसम में खेतों में सरसों खिल उठती है। धरती पीली चादर ओढ़ लेती है। घाटी की वादियों में बड़े पैमाने पर टेसू के फूल खिलते हैं जिन की लालिमा होली के रंगों में चार-चाँद लगा देती है।

होली दहन से पूर्व ढोल-ढमाकों के साथ ग्रामवासी दहन स्थल पर जाकर कई परम्पराओं का निर्वहन करते हैं। सबसे

पहले अलग-अलग सात प्रकार के धान से भरे मिट्टी के कलशों को जमीन में गाडने की रस्म निभाई जाती है। होलीका दहन के समय जब होलिका प्रहलाद को अपनी गोद में बिठाकर अग्नि स्नान कराती है, तब बुराई और अधर्म की प्रतीक होलिका को अपमानित करने हेतु गोबर से बनी होलकों की माला पहनाई जाती है। इसके बाद होलिका दहन किया जाता है।

धुलेटी के दिन गाँववाले वहाँ जाकर होली दहन स्थल से जमीन में गाडे हुए कलश बाहर निकालकर उनमें रखे विभिन्न धानों के पकने की मात्रा के आधार पर आगामी वर्ष के शगुन देखते हैं। धुलेटी के दिन प्रातः काल परिवार के लोग अपने छोटे बच्चों को दुल्हे की तरह सजाकर पारम्परिक गीत गाते हुए ढोल-ढमाकों के साथ होलिका दहन स्थल पर ले जाकर उसकी परिक्रमा करवाते हैं और होली दहन की भस्म का टीका लगाते हैं। कुछ लोग दुल्हे बने छोटे बच्चों को पारम्परिक गीत गाते हुए ढोल-ढमाकों के साथ मन्दिर में दर्शन करवाने भी ले जाते हैं। वहाँ से घर आने के बाद गैरियों द्वारा नन्हें द्वारा को ढूँढने की रस्म निभाई जाती है। ढूँढवाले परिवार से गैरिये गोठ के पैसे भी माँगते हैं।

धुलेटी के दिन लोग तरह-तरह के रंगों एवं अबीर -गुलाल से होली खेलते हैं। रंग डालने का यह सिलसिला पुरी तरह से होली के रंगों में रंगा नजर आता है। धुलेटी के दिन दोपहर बाद लोग स्नान कर एवं नये कपड़े पहनकर एक - दूसरे घर मिलने जाते हैं। जहाँ उनका स्वागत गुझिया, नमकीन एवं ठण्डाई से किया जाता है। गुझिया होली की प्रमुख मिठाई है जो मावा और मेदे से बनती है।

धुलेटी के दिन से सप्ताह भर तक गैर नृत्य की धूम रहती है जिसके तहत प्रति दिन शाम को कस्बे के अलग-अलग स्थानों पर गैर नृत्य होता है। अन्तिम दिन शीतला सप्तमी पर शीतला माता के मन्दिर के सामने अथवा पास के चौक में गैर नृत्य होता है।

होली का त्यौहार धर्म-जाति सम्प्रदाय और छोटे बड़ों के बीच भेदभाव को समाप्त करता है। किसी त्यौहार का इससे बड़ा और क्या योगदान हो सकता है ? यही खूब सूरती है- होली की जो एक जीवन्त त्यौहार है, जिसे सब मिलकर मनाते हैं ।

◆◆◆

नवकार एवं पच्चखाण करने से क्या लाभ मिलता है

(श्री विनयकुमार छिपानी)

(1) नवकारसी का पच्चखाण करने से 100 वर्ष का नारकी का आयुष्य क्षय होता है ।

(2) पोरिसी का पच्चाखाण करने से 1000 वर्ष का नारकी का आयुष्य क्षय होता है ।

(3) साठ पोरिसी का पच्चखाण करने से 10,000 वर्ष का नारकी का आयुष्य क्षय होता है।

(4) परिमुड्ढ का पच्चखाण करने से 100,00,00 वर्ष का नारकी का आयुष्य क्षय होता है।

(5) नीवी का पच्चखाण करने से 1,0000000 वर्ष का नारकी का आयुष्य क्षय होता है।

(6) आयम्बिल का पच्चखाण करने से 1 हजार करोड़ वर्ष का नारकी का आयुष्य क्षय होता है।

(7) उपवास का पच्चखाण करने से 10 हजार करोड़ वर्ष का नारकी आयुष्य क्षय होता है।

(8) छठ का पच्चखाण करने से एक लाख करोड़ वर्ष का नारकी का आयुष्य क्षय होता है।

(7) अट्ठम का पच्चखाण करने से दस लाख करोड़ वर्ष का नारकी का आयुष्य क्षय होता है।

(8) इस प्रकार एक - एक उपवास बड़ाने पर दस गुणा फल प्राप्त होता है यानी इतने वर्षों तक के नरक के पाप साफ होते हैं।

(9) 1 सामाईक का फल शुद्ध मुहूर्त में सामाईक का फल 92, 59, 25, 925 बानवे करोड़ उनसाठ लाख पच्चीस हजार नो सौं पच्चीस पल्योपम का लाभ होकर इतने वर्ष का नारकी का आयुष्य क्षय होता है।

(10) अष्ट प्रहरी पोषध का फल 2700 अरब 70 करोड़ 77 लाख 77 हजार 777 पल्योपम से अधिक नारकी का आयुष्य क्षय होता है।

◆◆◆

काव्य कुंज

आत्मकल्याणी जीवन-दर्शन

(श्री शांतिलाल सगरावत, मंदसौर)

सत्कर्म से जीवनानंद
प्राप्त करते आचार्यश्री
का व्यक्तित्व और कृतित्व
का जीवन-दर्शन
आत्मकल्याण कारक है
समभाव साधना
स्व-स्वभाव में
राग-द्वेष रहित
आत्मदृष्टा का भाव
अंगीकरण है
विसंगतियों में
समता भाव, आत्मसात करना
ईश्वर प्राप्ति के लिये
मुक्ति का एक मात्र उपाय है
आसक्ति को त्यागना
विकारों से विमुक्ति
समबुद्धि का वरण समता की साधना, अहंकार शमन
साधना का मार्ग है।

◆◆◆

श्री चन्द्रकान्त गुरुजी

(मोक्षा ओरा)

चन्द्र समान शीतल और उज्ज्वल जिनका जीवन है
ऐसे पंडितवर्य चन्द्रकांतजी को मेरा अभिनंदन है
ज्ञान सिन्धु को अपनी साँसों में जिसने लपेटा है
ग्रंथों को बुद्धि में जिसने समेटा है
शब्द नहीं जिनकी तारीफ में, वो व्यक्तित्व कुछ ऐसा है
सरलता, सहजता जिसके हृदय में बसती है
कुछ ऐसी विराट वो हस्ती है
ग्रंथों को पढ़ा नहीं, जीवन में उतारा है
जिनाज्ञा का पालन ही, जिनका एकमात्र नारा है
ज्ञान के अपने सागर से, कईओं का जीवन संवारा है
भटके पथिक के लिए तो जैसे वो ध्रुव तारा है
बिना अपेक्षा से ही सबको खूब ज्ञान लुटाया है
मधुर वाणी से अपनी अमृत पान कराया है।
मुख पर जिनके तेज और होठों पर हँसी सजती है
संसार सागर से तिराने वाली वो अद्भुत कश्ती है
धीर गंभीर करूण हृदय से जो सुशोभित है
रुको मत आगे बढ़ो कहकर करते प्रेरित हैं।

◆◆◆

पाटण के दो सुखद अनुभव

(मोक्षा ओरा)

हमारे गुरु भगवंत गुरु की कृपा और लक्ष्य साध
पाटण में Enter किया ।
पढ़ाई की बस धुन सवार
C.R. ने सबको Mentor किया ।
बड़े-बड़े व्याख्याताओं ने महान ग्रंथों
से आपको Update किया ।
बाहरी प्रपंचों से दूर आत्मा साधना
व आत्मिक गुणों को Generate किया ।
शुद्ध आचरण व सरल व्यवहार से
पूरा पाटण Impress हुआ।
प्रेम, एकता, तप, त्याग का
माहौल यहाँ पर Create हुआ ।
सोने का समय कम व स्वध्याय
का समय Extand कर रहे।
पाठ, स्वाध्याय, आत्म चिंतन में
ही अपना हर दिन कर रहे ।
एकासना, आयंबिल, उपवास कर
कर्मों का बोझ Light कर रहे ।
गहन अध्ययन व पुरुषार्थ से
जिनशासन का भविष्य Bright कर रहे ।

◆◆◆

आया महोत्सव आया...

(प्रियंका प्रवीण डूंगरवाल, नयागाँव)

पुण्योदय से हमने पाया, दर्शन गुरुराज का
समवसरण सा सज रहा है, मंदिर श्री जिनराज का
गुरु सप्तमी का दिन है आया, घर-घर आनंद छाया
आया महोत्सव आया, भरतपुर का लाल जगमगाया

धन्य हो गई धरती, खिल उठा आसमान है
परमात्मा के रूप में पाये हमने गुरुराज है
शासन के हैं सिरताज, धर्म के रक्षक है
आया महोत्सव आया, भरतपुर का लाल जगमगाया

ऋषभ- केसर के लाल, जिनशासन के अनमोल रत्न हैं
समाधि ली गुरुवर ने, महातीर्थ मोहनखेड़ा है
संयम के परम सुमेरू, जिनका जयकारा गुंज रहा है
आया महोत्सव आया, भरतपुर का लाल जगमगाया

हाथ थाम लो ओ गुरुवर, भवसागर से हमको तिरना है
साथ चाहिए बस आपका इस दुनिया की अब न आस है
आपको नाम से ही पहचान मिली, आपका ही सहारा है
आया महोत्सव आया, भरतपुर का लाल जगमगाया।

◆◆◆

मङ्गलाचरण और उसकी परम्परा

(श्री आनंद कुमार जैन)

भारतीय जनमानस श्रद्धा प्रधान है। यहाँ ईश्वर पर श्रद्धा करना प्रशस्त माना गया है। यद्यपि कुछ लोग ईश्वर पर श्रद्धा नहीं भी करते हैं, किन्तु वे समाज में प्रायः अनादृत होते हैं। तिरस्कृत होते हैं। उन्हें नास्तिक कहा जाता है। नास्तिक की परिभाषायें पृथक-पृथक हैं। सामान्यतया नास्तिक वे हैं, जो धर्म-कर्म में विश्वास नहीं रखते हैं अथवा जो पुण्य-पाप, लोक-परलोक, शुभकर्म-अशुभकर्म, स्वर्ग-नरक और मोक्ष आदि में विश्वास नहीं रखते हैं, वे नास्तिक कहलाते हैं और उपर्युक्त सबमें जो विश्वास रखते हैं, वे सभी आस्तिक कहलाते हैं।

नास्तिक के लिये भिन्न-भिन्न धर्मों में भिन्न-भिन्न शब्दों का प्रयोग किया गया है। जैसे हिन्दू धर्म में ईश्वर आदि पर आस्था न रखने वाले को नास्तिक कहा जाता है, वैसे ही जैन धर्म में मिथ्यादृष्टि और इस्लाम धर्म में काफिर कहा जाता है। वस्तुतः नास्तिक, मिथ्यादृष्टि अथवा काफिर- ये सभी शब्द एक प्रकार के धार्मिक उलाहनें हैं। जिनका प्रयोग जन सामान्य में प्रचलित है। ये धार्मिक अपशब्द प्रायः शिष्टजनों द्वारा प्रयुक्त होते हैं। इनका प्रयोग संतों द्वारा भी किया जाता है, किन्तु इनका प्रयोजन व्यक्ति विशेष को सही रास्ते पर लाने के लिये होता है। संतों का ऐसा मानना है कि सार्वजनिक या व्यक्तिगत रूप से इन शब्दों के माध्यम से फटकार लगाकर कुमार्ग पर जाने वाले व्यक्ति को सुमार्ग पर लगाया जा सकता है और सन्त इस कार्य में प्रायः सफल होते हुये भी देखे जाते हैं।

जो लोग आस्तिक होते हैं, उनकी धर्म के प्रति रुचि होती है। वे प्रत्येक कार्य को सम्पन्न करने से पूर्व ईश्वर का स्मरण करते हैं। ईश्वर का स्मरण करना, ईश वन्दना करना, ईश्वर के गुणों का स्मरण करना ये सभी मङ्गलस्वरूप माने गये हैं।

किसी भी कार्य को सम्पन्न करने से पूर्व मङ्गलाचरण करने की प्रवृत्ति भारतीय लोगों में प्रायः पाई जाती है। मङ्गलाचरण वस्तुतः आत्मशक्ति को जागृत करने का उपाय है, क्योंकि सामान्यतया यह माना जाता है कि कार्यारंभ करने से पूर्व यदि मङ्गलाचरण किया जाता है तो उस कार्य में सफलता मिलती है अर्थात् प्रारंभ किये गये कार्य की प्रायः पूर्ति होते हुए देखी जाती है। ऐसा भी माना जाता है कि

मङ्गलाचरणपूर्वक किये जाने वाले कार्य निर्विघ्न सम्पन्न होते हैं तथा आदि से लेकर अंत तक किसी भी प्रकार का विघ्न नहीं आता है और यदि आता भी है तो उसका सहज रूप से निवारण हो जाता है तथा यथासमय कार्य की सम्पूर्ति हो जाती है।

कभी-कभी कार्यारंभ से पूर्व विधि-विधानपूर्वक मङ्गलाचरण करने पर भी प्रारंभ किये गये कार्य में बड़े-बड़े विघ्न उपस्थित हो जाते हैं और कार्य सम्पन्न नहीं भी होता है, जैसे पं. टोडरमलजी ने मोक्षमार्ग प्रकाश और पं. राजमलजी ने पंचाध्यायी के प्रारंभ में मङ्गलाचरण किया है, किन्तु उक्त लेखकगण अपने-अपने शास्त्रों को पूर्ण नहीं कर सके। इस विषय में बड़े - बड़े ऋषि मुनियों ने विचार किया है और अन्त में वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि जो कार्य मङ्गलाचरणपूर्वक किये जाते हैं और पूर्ण होते हैं तो उनके मूल में उन-उन लेखकों द्वारा पूर्वजन्मकृत कोई खोटा कर्म विशेष है, जिसने कार्य को पूर्ण नहीं होने दिया।

जो ऋषि-मुनि शास्त्र लेखन प्रारंभ करते हैं वे शास्त्रारंभ से पूर्व प्रायः मङ्गलाचरण अवश्य करते हैं और अन्त में शास्त्र को पूर्ण भी करते हैं। कभी-कभी शास्त्र के आरंभ में मङ्गलाचरण न करने पर भी शास्त्र के पूर्ण होने की प्रवृत्ति देखी जाती है तो इसके लिये आचार्यों का ऐसा चिंतन है कि शास्त्र लेखक ने लिखित मङ्गलाचरण भले ही न किया हो, किन्तु निश्चित रूप से अलिखित ईश- वन्दनापूर्वक ही शास्त्रारंभ किया होगा, क्योंकि प्रतिज्ञा के अनुरूप यथासमय शास्त्र का पूर्ण होना ही यह संकेत करता है कि शास्त्रकर्ता ने शास्त्रारंभ से पूर्व वाचिक अथवा मानसिक मङ्गलाचरण अवश्य किया होगा, क्योंकि ऐसा नियम है अन्यथा शास्त्रपूर्ति सम्भव नहीं है। यहाँ कार्य को देखकर कारण का अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है।

यहाँ यह तो निश्चित हो गया है कि कार्य की निर्विघ्न पूर्णता हेतु मङ्गलाचरण अवश्य करना चाहिये, किन्तु मङ्गलाचरण कब करना चाहिये और मङ्गलाचरण के रूप में किसे स्मरण करना चाहिये आदि सभी बातों पर विचार करने हेतु आचार्यों की वाणी ही हमारा मार्गदर्शन कर सकती है। इस संदर्भ में तिलोयपण्णत्तिकार आचार्य यतिवृषभ ने सम्यक विचार किया है। उनके अनुसार पुण्य, पूत, पवित्र, प्रशस्त, शिव, भद्र, क्षेम, कल्याण, शुभ और सौख्य- ये दस शब्द मङ्गल के पर्यायवाची हैं। मङ्गल शब्द की निरुक्ति करते हुए वे लिखते हैं कि-

गालयदि विणासयदे घादेदि दहेदि हंति सोधयते ।
विद्धंसेदि मलाइं, जम्हा तम्हा य मंगलं भणिदं ।।

अर्थात् यह (मङ्गल) मल को गलाता है, मल का विनाश करता है, मल को धातता है, मल का दहन करता है, मल को मारता है, शुद्ध करता है और मल का विध्वंश करता है, अतः इसे मङ्गल कहते हैं। मङ्गल दो प्रकार का है – द्रव्य मङ्गल और भाव मङ्गल । पुनः द्रव्य मङ्गल बाह्य और आभ्यन्तर के भेद से दो प्रकार का है। पसीना, धूलि और कीचड़ आदि बाह्य द्रव्य मल हैं और जीव के प्रदेशों में एक क्षेत्रावगाह रूप से बन्ध को प्राप्त तथा बन्ध के प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेश- इन चार भेदों में से प्रत्येक भाग को प्राप्त होने वाले ज्ञानावरण – दर्शनावरण आदि आठ कर्मरज रूप आठ आभ्यन्तर द्रव्य मल हैं।

मङ्गल शब्द की सार्थकता को स्पष्ट करते हुए आचार्य यतिवृषभ ने लिखा है कि- ज्ञानावरणादिक द्रव्य मल के और ज्ञानावरणादिक भाव मल के भेद से मल के अनेक भेद हैं। इन सभी मलों को वह मङ्गल गलाता है अथवा मङ्ग अर्थात् आनन्द एवं सुख को जो लाता है वह मङ्गल हैं। इससे शास्त्रकर्ता अभीष्ट सिद्धि प्राप्त करता है और अन्यों को आनन्द की प्राप्ति कराता है। पूर्वाचार्यों ने मङ्ग शब्द को पुण्यार्थवाचक स्वीकार किया है, अतः जो मङ्ग अर्थात् पुण्य को लाता है एवं ग्रहण कराता है वह श्रेष्ठ मङ्गल है। उपचार रूप से जीवों का पाप मल कहलाता है। मङ्गल उस पाप को गलाता है और विनाश को प्राप्त कराता है, इसलिये भी कुछ आचार्य इसे मङ्गल कहते हैं।

नाम, स्थापना, द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव के भेद से मङ्गल छह प्रकार का है। वीतरागी देवों द्वारा अरिहन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय एवं साधु रूप पंच परमेष्ठियों का नाम लेना नाम मङ्गल है। कृत्रिम और अकृत्रिम जिनबिम्ब स्थापना मङ्गल है। आचार्य, उपाध्याय और साधु का शरीर द्रव्य मङ्गल है। गुणीजनों का निवास स्थल, परिनिष्क्रमण स्थल, केवलज्ञानोत्पत्ति स्थल आदि से क्षेत्र मङ्गल अनेक प्रकार का है। उदाहरण स्वरूप हम पावानगर (पावापुरी), ऊर्जयन्त (गिरिनार) और चम्पापुर तथा साढ़े तीन हाथ से लेकर पाँच सौ पच्चीस धनुष प्रमाण शरीर में स्थित तथा केवल ज्ञान से व्याप्त आकाश प्रदेश तथा जगच्छ्रेणी के घन मात्र (लोक प्रमाण) आत्मा के प्रदेशों से लोकपूरित समुद्घात द्वारा पूरित सभी ऊर्ध्व, मध्य एवं अधोलोक के प्रदेश भी क्षेत्रमङ्गल कहे जाते हैं।

काल का भी विशेष महत्त्व है। जिस काल में महापुरुष जन्म लेते हैं, वह काल भी महत्त्वपूर्ण होता है। जिस काल में अतिशय पुण्य के धारी जीव गृह त्यागकर दीक्षाग्रहण हेतु प्रस्थान करते हैं वह काल, केवल ज्ञान प्राप्ति का काल और मोक्ष प्राप्ति का काल आदि पाप को नष्ट करने वाला काल है, इसलिये यह कालमङ्गल है। इसी प्रकार अष्टाह्निका आदि पर्वों में जब देवतागण नन्दीश्वर द्वीप में जाकर पूजा करते हैं तो वह समय भी कर्म कलंक को नष्ट करने वाला होता है, अतः वह काल और उसी प्रकार के अन्य काल भी काल मङ्गल हैं।

जब जीव के भाव माङ्गलिक पर्यायों को धारण करते हैं तो वह शुद्ध जीव भाव मङ्गल है। जैसे कल्याणेच्छुक आत्माओं के लिये प्रायः मध्याह्न और सायंकाल सामायिक करने का विधान है, उसी प्रकार शास्त्रारंभ करने वाले आचार्यों को आदि मङ्गल, मध्य मङ्गल और अन्त्य मङ्गल करने का विधान भी पूर्वाचार्यों ने किया है। क्योंकि ऐसा माना जाता है कि शास्त्र के आदि में मङ्गलाचरण करने से शिष्यगण शास्त्र के पारगामी होते हैं। इसी प्रकार मध्य में मङ्गलाचरण करने से विद्या की निर्विघ्न प्राप्ति होती है तथा अन्त में मङ्गलाचरण करने से विद्या का फल प्राप्त होता है। लिखा भी है-

पढ़मे मंगलकरणे सिस्सा सत्थस्स पारगा होंति ।
मज्झिम्मे णीविग्घं, विज्जा विज्जाफलं चरिमे ।।

इसी तथ्य की पुष्टि करते हुए आचार्य यतिवृषभ महाराज आगे लिखते हैं कि-जिस प्रकार सूर्य अंधकार का नाश कर देता है, उसी प्रकार शास्त्र के आदि, मध्य और अन्त में जिनस्तोत्र रूप मङ्गल का उच्चारण समस्त विघ्नों का नाश कर देता है।

अनेक शास्त्रों में इस विधान का पालन भी किया गया है । तिलोपयण्णत्तीकार आचार्य यतिवृषभ ने पूर्वाचार्यों के इस कथन का स्वयं भी पालन किया है। उन्होंने तिलोयपण्णत्ती में सर्वप्रथम पंच परमेष्ठियों का प्रथम पाँच गाथाओं में क्रमशः नामोल्लेख करते हुए उनके अनेक गुणों का पुण्य स्मरण किया है। यह नाम मङ्गल का उत्कृष्ट उदाहरण है। इतना ही नहीं उन्होंने प्रथम अधिकार की षष्ठ गाथा में मन, वचन और काय रूप त्रियोग से पंचगुरु (पंच परमेष्ठी) को (नमिऊण्) नमस्कार करके तिलोयपण्णत्ती नामक शास्त्र को लिखने की प्रतिज्ञा की है। इससे भी स्पष्ट होता है कि आचार्य यतिवृषभ ग्रन्थारंभ से पूर्व मङ्गलाचरण करने को विधि सम्मत मानते हैं। इसी प्रकार उन्होंने तिलोयपण्णत्ती के मध्य में और

अन्त में मङ्गल ाचरण स्वरूप ऋषभादि चौबीस तीर्थङ्करों का स्मरण कर पूर्वाचार्यों के कथन का श्रद्धापूर्वक सम्मान किया है।

आचार्य यतिवृषभ ने तिलोयपण्णत्ती के प्रथम अधिकार के प्रारंभ में पंच परमेष्ठी का स्मरण करने के पश्चात् अन्त में प्रथम तीर्थङ्कर भगवान ऋषभदेव का स्मरण किया है। द्वितीय अधिकार के प्रारंभ में अजितनाथ और अन्त में सम्भवनाथ, तृतीय के प्रारंभ में अभिनन्दननाथ और अन्त में सुमतिनाथ, चतुर्थ के प्रारंभ में पद्मप्रभु और अन्त में सुपार्श्वनाथ, पंचम के प्रारंभ में चन्द्रप्रभ और अन्त में पुष्पदन्त, षष्ठ के प्रारंभ में शीतलनाथ और अन्त में श्रेयांसनाथ, सप्तम के प्रारंभ में वासुपूज्य और अन्त में विमलनाथ, अष्टम के प्रारंभ में अनन्तनाथ और अन्त में धर्मनाथ, नवम के प्रारंभ में शांतिनाथ और अन्त में शेष कुन्थुनाथ, अरहनाथ, मल्लिनाथ, मुनिसुव्रत नाथ, नमिनाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ और महावीर स्वामी- इन आठ तीर्थंकरों को नमस्कार किया है। इस प्रकार प्रारंभ में सामान्य रूप से और बाद में क्रमशः चौबीस तीर्थङ्करों को नमस्कार करके ग्रंथ पूर्ण किया है।

शास्त्रारंभ करने से पूर्व केवल मङ्गलाचरण ही नहीं, अपितु मङ्गलाचरण के साथ ही शास्त्र लिखने का कारण, हेतु प्रमाण, नाम और कर्त्ता के नाम का भी व्याख्यान करना चाहिये, क्योंकि ऐसी पद्धति है, परम्परा है, 18 आचार्य यतिवृषभजी के इस कथन का यदि पालन किया जाये तो मङ्गलाचरण करने से शास्त्रलेखन यथासमय पूर्ण होगा। शास्त्र अकारण नहीं लिखे जायेंगे उनका कोई कारण अवश्य होगा। तर्क और प्रमाण से शास्त्र में प्रामाणिकता आयेगी। शास्त्र का नाम प्रारंभ में ही स्पष्ट हो जाने से शास्त्र की विषयवस्तु भी स्पष्ट हो जायेगी और शास्त्र के प्रारंभ में ही शास्त्रकर्ता का नामोल्लेख होने से शास्त्र लेखक के प्रति किसी भी प्रकार भी भ्रान्ति नहीं होगी।

रजत रश्मियाँ

* 1100/- स्व. सागरबाई स्व. श्री शैतानमलजी मेहता खट्टाली की स्मृति में **'शाश्वत धर्म'** को सहायतार्थ भेंट ।
* 200/- स्व. धर्मिचन्दजी चौरडिया (निसरपुरवाले) जोबट की स्मृति में **'शाश्वत धर्म'** को सहायतार्थ भेंट ।

श्री राजेन्द्रसूरिजी म.सा. के चातुर्मास

(संकलन–मुनिराज श्री तारकरत्नविजयजी म.सा.)

यति जीवन में आपने निम्न स्थानों पर चातुर्मास किये

विक्रम संवत	स्थान
1904	आकोला
1905	इन्दौर
आचार्य सागरचन्द्रजी के साथ	
1906	उज्जैन
1907	मंदसौर
1908	उदयपुर
1909	नागौर
1910	जैसलमेर
श्री देवेन्द्रसूरिजी के साथ	
1911	पाली
1912	जोधपुर
1913	किशनगढ़
1914	चित्तौड़
1915	सोजत
1916	शम्भूगढ़
1917	बीकानेर
1918	सादड़ी
1919	भीलवाड़ा
1920	रतलाम
1921	अजमेर
1922	जालोर
1923	घाणेराव
1924	जावरा
क्रियोद्धार के बाद आपने निम्न स्थानों पर चातुर्मास किये	
1925	खाचरौद
1926	रतलाम
1927	कुक्षी
1928	राजगढ़
1929	रतलाम
1930	जावरा
1931	आहोर
1932	आहोर
1933	जालोर
1934	राजगढ़
1935	रतलाम
1936	भीनमाल
1937	शिवगंज
1938	अलीराजपुर
1939	कुक्षी

1940	राजगढ़	1952	राजगढ़
1941	अहमदाबाद	1953	जावरा
1942	बोरानी	1954	रतलाम
1943	धानेरा	1955	आहोर
1944	थराद	1956	शिवगंज
1945	बीरमगाँव	1957	सियाणा
1946	सियाणा	1958	आहोर
1947	गुड़ा	1959	जालोर
1948	आहोर	1960	सूरत
1949	निम्बाहेड़ा	1961	कुक्षी
1950	खाचरौद	1962	खाचरौद
1951	राजगढ़	1963	बड़नगर

सगर चक्रवर्ती

अयोध्या नगरी के इक्ष्वाकु वंशीय राजा जितशत्रु की महारानी 'विजया' से 'अजित' नामक महाप्रतापी पुत्र हुए, जो अजितनाथ नामक द्वितीय तीर्थंकर कहलाये। राजा जितशत्रु के छोटे भाई सुमित्र युवराज थे। उनकी रानी यशोमती से उत्पन्न 'सागर' नामक पुत्र ही दूसरे चक्रवर्ती के रूप से उभरे ।

अजित को राजगद्दी मिली तब सगर युवराज रूप में रहे । अजितनाथजी धर्मतीर्थ का प्रवर्तन करने के लिए जब चारित्र ग्रहण करने लगे, तब सगर को राज्यासीन किया । ये ही सगर भविष्य में चक्रवर्ती के रूप में विख्यात हुए। उनके 60 हजार पुत्र थे, जिसमें सबसे बड़ा पुत्र जह्नु कुमार था। इसी ने अपने सभी भाइयों के साथ हेम पर्वत को खोदा जिसमें नागकुमार देव ज्वलनप्रभ कुपित, (क्रोधित) हुए। उन्होंने अग्निज्वाला से सभी (साठ हजार) पुत्रों को भस्म कर दिये । चक्रवर्ती सगरवैरागी हो गये। उन्होंने अपने पौत्र को (जह्नु कुमार के पुत्र को) राज्य पर स्थापित किया । तप-संयम द्वारा मुक्ति पायी ।

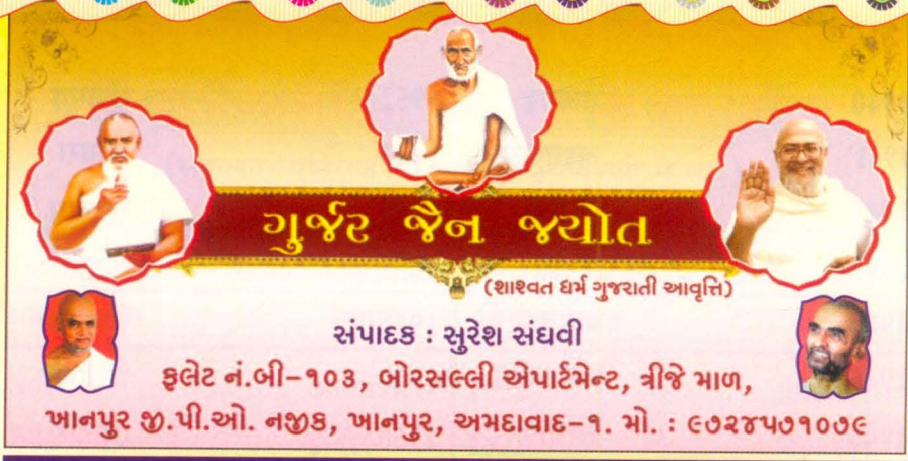

ભગવાન મહાવીરે શું કહ્યું ?

લેખક : આચાર્ય શ્રી જયંતસેનસૂરિ 'મધુકર'

અનેકાન્તવાદી બનીએ

''विभज्जवायं च वियागरेज्जा।''

(સ્યાદ્‌વાદનું સમર્થન કરતાં વચનોનો પ્રયોગ કરવો જોઈએ.)

'સ્યાદ્‌વાદ' એક દાર્શનિક સિદ્ધાંત છે. 'સ્યાત્'નો અર્થ અપેક્ષા છે, એટલા માટે તેને સાપેક્ષવાદ પણ કહી શકાય. એમ એકેય વાતનો આગ્રહ ન હોવાને કારણે તે 'અનેકાન્તવાદ'ના નામે દુનિયામાં વધારે પ્રસિદ્ધ છે.

અપેક્ષાભેદેવસ્તુમાં અનેક ગુણધર્મ હોય છે - આ વાતને માનવાવાળા તથા તેનું સમર્થન કરવાવાળા અનેકાન્તવાદી છે. એકાન્તવાદી એક જ દૃષ્ટિકોણથી એ વસ્તુને જુએ છે અને ભૂલી જાય છે કે બીજા દૃષ્ટિકોણથી એ વસ્તુ બીજી રીતે પણ જોઈ શકાય છે અનેકાન્તવાદી એવા દુરાગ્રહી નથી હોતા.

તે જાણે છે કે દ્રવ્યદૃષ્ટિથી જે વસ્તુ નિત્ય કહેવાય છે, તે પર્યાયદૃષ્ટિથી અનિત્ય પણ હોય છે. મુગટને ભંગાવીને તેનો હાર બનાવીએ અને હાર ભંગાવીને તેની કાંસકી બનાવીએ, તો મુગટ અને હારના રૂપમાં વસ્તુ અનિત્ય હોવા છતાં સોનાના રૂપમાં તે વસ્તુ નિત્ય છે. એ જ વાત સિદ્ધાંતોના વિષયમાં પણ લાગુ પડે છે. ભૂખ્યાને માટે જે ભોજન સારું છે, તે બીમારને માટે બૂરું પણ છે. એકાન્તવાદી 'જ'નો પ્રયોગ કરે છે, તો અનેકાન્તવાદી 'પણ'નો.

સત્યની શોધ ત્યારે જ થઈ શકે જ્યારે આપણે અનેકાન્તવાદી બનીએ !

- સૂત્રકૃતાંગ સૂત્ર, ૧/૧૪/૨૨

ગુજરાતની ધન્યધરા પર...

યુગનાયક ધર્મ દિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. સપરિવારની પધરામણીથી સમાજમાં ઉત્સાહનું મોજું

પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના પટ્ટધર યુગનાયક ધર્મ દિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. સપરિવારે પિપલોદા નગરનું ઐતિહાસિક, યશસ્વી અને અવિસ્મરણીય ચાતુર્માસ સંપન્ન કરી ભાભરાનગરની પ્રતિષ્ઠા-દીક્ષા સંપન્ન કરાવી સૌરાષ્ટ્રને ધર્મના રંગે રંગાવ્યું હતું. અયોધ્યાપુરમથી શ્રી શત્રુંજ્ય મહાતીર્થ, શ્રી શત્રુંજ્યથી શ્રી ગિરનાર તીર્થ, શ્રી વલ્લભીપુરથી શ્રી શત્રુંજ્ય તીર્થ એમ ચાર-ચાર છઃરિ પાલક સંઘોમાં નિશ્રા પ્રદાન કરી ચારેય સંઘોના લાભાર્થીપરિવારોની યશ કલગીમાં સંઘવી પદનું છોગું ઉમેરાવી ત્યાંથી વિહાર કરી ગુજરાત તરફ આવવા પ્રયાણ કર્યું હતું.

યુગનાયક ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. સપરિવાર ગુજરાતની ધન્ય ધરા પર પધરામણી કરવાના હોઈ સમાજમાં ઉત્સાહનું મોજું ફરી વળ્યું હતું. પાટણ, ડીસા, લાખણી, પેપરાલ, થરાદ, ધાનેરા, નેનાવા વિગેરે સંઘોમાં આનંદની અમીવર્ષા થઈ ગઈ હતી અને હરખની હેલી વરસી ગઈ હતી. તા. ૩ ફેબ્રુઆરીના રોજ પૂજ્યશ્રી સપરિવારે (પાનવા) શ્રી પાર્શ્વ પદ્મમાવતી ગોશાલા તીર્થ ગુજરાત ખાતે સ્થિરતા કરી હતી. અને સાંજે શંખેશ્વર પાર્શ્વનાથ તીર્થના દર્શન કરી પાટણ તરફ વિહાર કર્યો હતો. તા. ૫ ફેબ્રુઆરીના રોજ ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ પાટણના તત્વાધાનમાં ત્રિસ્તુતિક જૈન ઉપાશ્રયમાં સ્વાધ્યાર્થે બિરાજમાન યુવા પ્રવચનકાર મુનિરાજશ્રી નિપુણરત્ન વિજયજી મ.સા. આદિઠાણાના માર્ગદર્શન મુજબ પૂજ્યશ્રીને આવકારવા ભવ્યાતિભવ્ય શોભાયાત્રા અને સામૈયા સ્વાગતનું આયોજન કરાયું હતું.

પૂજ્ય ગચ્છાધિપતિશ્રી સપરિવારે તા. ૫ ફેબ્રુઆરીના રોજ પાટણ નગરે પધરામણી કરી હતી. સવારે ૯-૩૦ કલાકે વિઠ્ઠલ ચેમ્બર્સથી બેન્ડની સુરાવલીઓ સાથે વાજતે ગાજતે શોભાયાત્રાએ પ્રસ્થાન કર્યું હતું. પાટણનગરના મુખ્ય માર્ગો પર ફરી શોભાયાત્રા પંચાસરા જિનાલય પાસે સ્થિત ત્રિસ્તુતિક જૈન ઉપાશ્રય ખાતે પહોંચી હતી દરમ્યાન ઠેર ઠે ગહુલીઓ કાઢી પૂજ્યશ્રીને અક્ષતથી વધાવી ભવ્ય સામૈયા સાથે સ્વાગત કરાયું હતું. શ્રી પંચાસરા પાર્શ્વનાથ પ્રભુના દર્શન કર્યા બાદ આ શોભાયાત્રા ધર્મસભા રૂપે પરિવર્તીત થઈ હતી. જ્યાં પૂજ્યશ્રીએ માંગલિક સંભળાવી પ્રાસંગિક પ્રવચન ફરમાવ્યું હતું. પૂજ્ય ગચ્છાધિપતિ સપરિવારની પધરામણીથી પાટણનગરે બિરાજમાન યુવા પ્રવચનકાર મુનિરાજ શ્રી નિપુણરત્નવિજયજી મ.સા. આદિઠાણાનો

આનંદ ચરમસીમાએ પહોંચેલો દેખાઈ રહ્યો હતો. સ્વાધ્યાય અર્થે સ્થિરતા કરી રહેલ સાધ્વીજી શ્રી તત્વલતાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા-૪, સાધ્વીજીશ્રી કુમુદપ્રિયાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા-૫, સાધ્વીજીશ્રી રૂચિદર્શનાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા-૪ એ પોતાના ગુરૂદેવના દર્શન-વંદન કરી હર્ષાવિંત થઈ પ્રસન્નતા અનુભવી હતી. પૂજ્ય ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. તથા આચાર્યદેવ શ્રીમદ્‌વિજય કુલચન્દ્ર સૂરિશ્વરજી મ.સા.નું આત્મીય મિલન થયું હતું અને આધ્યાત્મિક ચર્ચા થઈ હતી. સાથે સાથે શ્રી સાગર જૈન ઉપાશ્રયનો વિધિપૂર્વક ઉદ્‌ઘાટન કાર્યક્રમ સંપન્ન થયો હતો. પાટણનગરની સ્થિરતા બાદ ડીસાનગરે ભવ્ય સામૈયા સ્વાગત સાથે પધરામણી કરી હતી. પુણ્યસમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના પટ્ટધર યુગનાયક ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. આદિ શ્રમણ-શ્રમણીવૃંદની પાવનકારી નિશ્રામાં બી.એમ.શાહ પરિવાર દ્વારા નિર્મિત શ્રી પાર્શ્વનાથ ભગવાન સહ દાદા ગુરૂદેવ શ્રીમદ્‌વિજય રાજેન્દ્ર સૂરિશ્વરજી મ.સા. અને પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. આદિની અંજનશલાકા પ્રતિષ્ઠા તા. ૧૩-૨-૨૦૨૦ના રોજ અષ્ટાન્હિકા મહોત્સવ સાથે સંપન્ન થઈ હતી. બપોરે વિજય મુહૂર્તમાં પ્રતિષ્ઠા પ્રસંગે શાંતિસ્નાત્ર અષ્ટોતરી મહાપૂજન ભણાવાયું હતું. ડીસાનગરની પ્રતિષ્ઠા સંપન્ન કરાવી પૂજ્યશ્રી સપરિવારે લાખણીનગરે વાજતે-ગાજતે ભવ્ય સામૈયા સાથે પધરામણી કરી હતી. લાખણીનગરે સ્થિરતા કરી ત્યાંથી વિહાર કરી થરાદનગરે ભવ્ય શોભાયાત્રા સાથે વાજતે-ગાજતે સામૈયા સહ પધરામણી કરી હતી. થરાદ સંઘ દ્વારા સન ૨૦૨૦ના ચાતુર્માસ કરવા પૂજ્યશ્રીને વિનંતી કરાઈ હતી. થરાદથી વિહાર કરી પૂજ્યશ્રી સપરિવારે ગુરૂજન્મ ભૂમિ - તીર્થભૂમિ પેપરાલનગરે વાજતે-ગાજતે ભવ્ય સામૈયાસહ ધામધૂમપૂર્વક પધરામણી કરી હતી. પેપરાલ ખાતે બે દિવસની સ્થિરતા બાદ ધાનેરાનગર તરફ વિહાર કર્યો હતો.

પૂજ્યશ્રી સપરિવારે પેપરાલથી વિહાર કરી ધાનેરાનગરે ભવ્ય સામૈયાસહ પધરામણી કરી હતી. ઉલ્લેખનીય છે કે, ઉક્ત ગુજરાતના નગરોમાં પૂજ્યશ્રી સપરિવારના પધરામણી નિમિત્તે ભવ્ય શોભાયાત્રા, સામૈયા, સવારની નવકારશી, સંઘ સ્વામીવાત્સલ્ય, સાંજના ચૌવિહાર, પ્રભાવના તથા ધર્મપ્રભાવક કાર્યક્રમો સંપન્ન થયા હતા. ઉક્ત દરેક સ્થળે પૂજ્યશ્રીને કાંબળી ઓઢાડવામાં આવી હતી. નેનાવાનગરે ગુરૂવર્યોની પ્રતિષ્ઠા પ્રસંગના અવલોકન અને તૈયારી માટે પૂજ્ય ગચ્છાધિપતિશ્રીની આજ્ઞાથી મુનિરાજશ્રી ચારિત્ર રત્નવિજયજી મ.સા.એ તા. ૬-૨-૨૦૨૦ના રોજ નેનાવાનગરે પધરામણી કરી હતી. મુનિરાજશ્રી ચારિત્રરત્નવિજયજી મ.સા.ની નિશ્રામાં શ્રી શ્રેયાંસનાથ ભગવાનના જિનાલયમાં અને ગુરૂમંદિરમાં ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ નેનાવા

દ્વારા અઢાર અભિષેકનું આયોજન કરાયું હતું. સંગીતના સુરો સાથે વિધિકારક અને સુપ્રસિદ્ધ સંગીતકાર કૃણાલભાઈ સુરાણી દ્વારા અઢાર અભિષેક કાર્યક્રમ સંપન્ન થયો હતો. ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. સપરિવારની નિશ્રામાં તા. ૨૬-૩-૨૦૨૦ના રોજ આચાર્ય દેવેશ શ્રી યતિન્દ્ર સૂરિશ્વરજી મ.સા. અને પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્યદેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ની પ્રતિમાની પ્રતિષ્ઠા સંપન્ન થવાની હોઈ તેના ચઢાવા મુનિરાજશ્રી ચારિત્રરત્ન વિજયજી મ.સા.ની પાવનનિશ્રામાં બોલાવાયા હતા. પ્રતિષ્ઠાના વિભિન્ન લાભો લાભાર્થીપરિવારોને અપાયા હતા.

ધાનેરાનગરથી વિહાર કરી યુગનાયક ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેનસૂરિશ્વરજી મ.સા. સપરિવારે તા. ૨૧-૨-૨૦૨૦ના રોજ વાજતે-ગાજતે ધમાકેદાર એન્ટ્રી કરી હતી. પૂજ્યશ્રીની નિશ્રામાં પ્રતિષ્ઠા પ્રસંગે પ્રતિરોજ પ્રવચન, પૂજનો રાત્રિ ભક્તિભાવના પ્રભુજીને ભવ્ય અંગરચના નવકારશી, સ્વામી વાત્સલ્ય વિગેરે ધર્મપ્રભાવક કાર્યક્રમો સંપન્ન થયા હતા. તા. ૨૬-૨-૨૦૨૦ના મંગલમય દિવસે નેનાવાવાસીઓનો આનંદ ચરમસીમાએ હતો. ગચ્છાધિપતિશ્રી તથા આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા. સપરિવારની પાવનકારી નિશ્રામાં તા. ૨૬-૨-૨૦૨૦ના મંગલમય દિવસે વ્યાખ્યાન વાચસ્પતિ પિતામ્બર વિજેતા આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય યતિન્દ્રસૂરિશ્વરજી મ.સા. તથા પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ની પ્રતિમાઓની શુભમુહૂર્તે રંગેચંગે પ્રતિષ્ઠા સંપન્ન થઈ હતી.

છેલ્લે મળતા સમાચાર મુજબ થરાદ નિવાસી શ્રી સેવંતીલાલ નરપતલાલ અદાણીને પૂજ્યશ્રીના વરદ્‌હસ્તે દીક્ષા અપાઈ હતી.

આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા. આદિ ઠાણાની પાવનકારી નિશ્રામાં સાંયોર નગરે ગુરુમૂર્તિની ભવ્યાતિભવ્ય રૂપે પ્રતિષ્ઠા સંપન્ન

સાંયોરનગરે નૂતન નિર્મિત શ્રી રાજેન્દ્ર સૂરિશ્વરજી જૈન ગુરુમંદિરમાં તપોનિષ્ઠ યોગિન્દ્રાચાર્ય દાદા ગુરુદેવ શ્રીમદ્‌વિજય રાજેન્દ્ર સૂરિશ્વરજી મ.સા., પુણ્યસમ્રાટ આચાર્યદેવ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા., યોગિરાજ શ્રી શાંતિવિજયજી મ.સા. આદિ ગુરુમૂર્તિ પ્રતિષ્ઠા, ધ્વજાદંડ, કળશ સ્થાપના નિમિત્તે પંચાન્હિકા મહોત્સવનું ભવ્યાતિભવ્ય આયોજન કરાયું હતું.

દાદા ગુરુદેવ શ્રીમદ્‌વિજય રાજેન્દ્ર સૂરિશ્વરજી મ.સા. પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્યદેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. યોગિરાજ શ્રી

શાંતિવિજયજી મ.સા.ના દિવ્ય આશિષ તથા યુગનાયક ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના આશિર્વાદ અને આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા. આદિ શ્રમણ-શ્રમણીવૃંદની પાવનકારી નિશ્રામાં કુંભસ્થાપના સાથે તા. ૪ ફેબ્રુઆરીથી મહોત્સવનો પ્રારંભ થયો હતો. ૫ ફેબ્રુઆરીના રોજ પૂજ્ય આચાર્યશ્રી આદિઠાણાનો વાજતે-ગાજતે ભવ્ય સામૈયા સાથે નગર પ્રવેશ થયો હતો અને ધાર્મિક કાર્યક્રમો સંપન્ન થયા હતા. ૬ ફેબ્રુઆરીના રોજ દાદા ગુરૂદેવ શ્રીમદ્‌વિજય રાજેન્દ્રસૂરિશ્વરજી ગુરૂપદ મહાપૂજન અને અન્ય કાર્યક્રમો યોજાયા હતા. તા. ૭ ફેબ્રુઆરીના રોજ પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના ૩૭માં પાટોત્સવ ગુરૂ વધામણા કરી સંઘ અને અતિથિઓ દ્વારા પુણ્ય સમ્રાટના ગુણાનુવાદ કરાયા હતા. બપોરે ભવ્ય વરઘોડો કાઢવામાં આવ્યો હતો. જેમાં હાથી, ઘોડા, ઉંટ, બગીઓ, આદિવાસી નૃત્ય મંડળી, ઢોલ-નગારા સાથે નાચતા-કુદતા-ગાતા સંઘના મહાનુભાવો આકર્ષણનું કેન્દ્ર બન્યા હતા. ગુરૂ ભગવંતો સકળ સંઘ અને અતિથિઓ સાંચોરના મુખ્ય માર્ગો પર ફરી નૂતન નિર્મિત શ્રી રાજેન્દ્રસૂરિ મંદિરે પહોંચ્યા હતા. રાત્રે સંઘવી પરિવાર દ્વારા કવિ સંમેલન અને ત્રિલોકજી મોદી સંગીતકાર મંડળી દ્વારા રમઝટ બોલાવતી પ્રભુભક્તિનો કાર્યક્રમ સંપન્ન થયો હતો. તા. ૮ ફેબ્રુઆરીના મંગલમય દિવસે સવારે આચાર્યશ્રી આદિઠાણાની નિશ્રામાં વિધિકારક દ્વારા ગુરૂમંદિરમાં તપોનિષ્ઠ યોગિન્દ્રાચાર્ય દાદા ગુરૂદેવ શ્રીમદ્‌વિજય રાજેન્દ્ર સૂરિશ્વરજી મ.સા, પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્યદેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. અને યોગિરાજ શ્રી શાંતિવિજયજી મ.સા.ની મૂર્તિની પ્રતિષ્ઠા હર્ષોલ્લાસ સાથે સંપન્ન થઇ હતી.

પ્રતિષ્ઠા સંપન્ન થયા બાદ સભામંડપમાં આચાર્યશ્રીએ પ્રવચન ફરમાવ્યું હતું. જેમાં પ્રતિષ્ઠાનું મહત્વ સમજાવ્યું હતું અને તે નિમિત્તે જીવદયા માટે પ્રેરણા કરી હતી. તે માટે પ્રતિષ્ઠાના લાભાર્થીસંઘવી શાહ ચંદાજી અમીચંદજી કટારીયા પરિવારે શરુઆત કરી હતી. બાદમાં દાન દાતાઓ દ્વારા ૩૦ લાખથી અધિક રૂપિયાની ઉપજ થઇ હતી. આચાર્યશ્રીએ સભામાં સાંચોર પટ્ટી ઉદ્ધારક નામથી કેસર કંચન વાડી ધામ બનાવવાનો ભાવ પ્રગટ કર્યો હતો. જેના માટે શ્રીમતી તીજાદેવી ભીમરાજજી હજારીમલજી છાજેડ પરિવાર નેનાવા દ્વારા ભૂમિદાનની ઘોષણા કરાઇ હતી.

પ્રતિષ્ઠા લાભાર્થીસંઘવી કટારીયા પરિવાર તરફથી અતિથિઓનું સ્મૃતિચિન્હ પ્રદાન કરી શાલ-શ્રીફળ અને માળાથી બહુમાન કરાયું હતું. આચાર્યશ્રીને સાંચોર નગરે ચાતુર્માસ કરવા વિનંતી કરાઇ હતી અને પરિવાર દ્વારા કાંબળી ઓઢાડાઇ હતી. અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદના રાષ્ટ્રીય ઉપાધ્યક્ષ શ્રી પ્રકાશજી હીરાણી અને મીડિયા પ્રભારશ્રી બ્રજેશજી બોહરાએ પરિષદ પરિવાર તરફથી લાભાર્થી પરિવારની અનુમોદના કરી હતી. સભા બાદ આચાર્યશ્રીએ માંગલિક સર્વમંગલ કરી બપોરે

૧૨.૩૯ કલાકે શ્રી ગોડીજી પાર્શ્વનાથ અને શ્રી મહાવીર સ્વામી ભગવાનનો વાર્ષિક ધ્વજારોહણ કાર્યક્રમ સંપન્ન કરાવ્યો હતો. સાંજે ગૌશાળામાં સ્નેહમિલન સમારોહ કાર્યક્રમ રખાયો હતો. આ કાર્યક્રમમાં પરિષદના દક્ષિણ પ્રાંતથી શ્રી જયવતરાજજી વાણીગોતા, ભરતપુરના ટ્રસ્ટી શ્રી ઈન્દરમલજી દસેડા અને શ્રી વિરેન્દ્રજી રાઠોડ, મ.પ્ર.શ્રી સંઘ સચિવશ્રી નિરજજી સુરાણા, શ્રી મોહીતજી તાતેડ, યતિન્દ્રવાણી સંપાદક કવિરાજ કુલદીપજી પ્રિયદર્શી ઉપસ્થિત રહ્યા હતા.

શ્રી ભાંડવપુર મહાતીર્થે રત્નત્રયી મહોત્સવસહ મુમુક્ષુરત્ન શ્રી આઝાદકુમારની દીક્ષા સંપન્ન

શ્રી ભાંડવપુર મહાતીર્થે આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા. આદિ ઠાણા તથા વિદુષી સાધ્વીજીશ્રી સૂર્યકિરણાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણાની નિશ્રામાં અતિ પ્રાચીન શ્રી ભાંડવપુર મહાતીર્થમાં નવનિર્મિત શ્રી વર્ધમાન રાજેન્દ્ર ધ્વારોદ્‌ઘાટન સહ મુમુક્ષુરત્ન આઝાદકુમારની ભાગવની દીક્ષા નિમિત્તે રત્નત્રયી મહોત્સવનું આયોજન કરાયું હતું અને વરસીદાનના વરઘોડાનું ભવ્ય આયોજન કરાયું હતું. આચાર્ય શ્રીમદ્‌ વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના વરદ્‌હસ્તે તા. ૧૩-૨-૨૦૨૦ના રોજ મુમુક્ષુરત્ન શ્રી આઝાદકુમારને દીક્ષા અપાઇ હતી. જેમનું નૂતન દિક્ષિત નામ શ્રી પુષ્પદંત વિજયજી રખાયું હતું.

મંદસૌરનગરે (મ.પ્ર.) યોજાશે ત્રિવેણી સંગમોત્સવ

ત્રિવેણી સંગમોત્સવ : પ્રભુ પ્રતિષ્ઠોત્સવ - શાશ્વત શ્રીનવપદ સામુહિક ઓળી આરાધના - ચાતુર્માસ ઉદ્‌ઘોષણા, **પાવનકારી નિશ્રા :** યુગનાયક ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. સપરિવાર, **પ્રતિષ્ઠોત્સવ :** સંવત ૨૦૭૬ના ચૈત્ર વદ - ૧૦ ને શુક્રવાર તા. ૧૭-૪-૨૦૨૦, **શાશ્વતશ્રી નવપદ ઓળી :** સંવત ૨૦૭૬ના ચૈત્ર સુદ ૭ ને શુક્રવાર તા. ૩૧-૩-૨૦૨૦થી તા. ૮-૪-૨૦૨૦ સુધી, **ચાતુર્માસ ઉદ્‌ઘોષણા :** સંવત ૨૦૭૬ના ચૈત્ર સુદ ૧૫ ને બુધવાર તા. ૮-૪-૨૦૨૦

મુનિરાજશ્રી ચારિત્રરત્ન વિજયજી મ.સા.નો વિહાર કાર્યક્રમ સંપન્ન

પાટણનગરમાં બિરાજમાન મુનિરાજશ્રી ચારિત્રરત્નવિજયજી મ.સા. ઉંઝાનગરમાં આયોજિત ગુરૂમૂર્તિ પ્રતિષ્ઠા મહોત્સવમાં પધારી ત્યાંથી સાંચોર અને ડીસા નગરમાં આયોજિત પ્રતિષ્ઠા મહોત્સવ હેતુ વિહારનો પ્રારંભ કર્યો હતો. તા. ૧ ફેબ્રુઆરીના રોજ સવારે સુલતાન પાર્શ્વનાથ સિદ્ધપુર અને સાંજે રજોસણ, તા. ૨ ફેબ્રુઆરીના રોજ સવારે પાલનપુર સાંજે પાર્શ્વગંગા, તા. ૩ ફેબ્રુઆરીના રોજ સવારે શંખેશ્વર દર્શન (રાજ રાજેન્દ્ર જયંતસેન વિહારધામ) સાંજે મહાવિદેહ ધામ, તા. ૪ ફેબ્રુઆરીના રોજ સવારે ઝેરડા સાજે રમુણ, તા. ૫ ફેબ્રુઆરીના રોજ સવારે ધાનેરા સાંજે વિંછીવાડી, તા. ૬ ફેબ્રુઆરીના રોજ સવારે નેનાવા, સાંજે પલાદર. તા. ૭ ફેબ્રુઆરીના રોજ સવારે સાંચોર તા. ૮ ફેબ્રુઆરીના રોજ આચાર્યશ્રીમદ્ વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ની નિશ્રામાં ગુરૂ મૂર્તિ પ્રતિષ્ઠામાં સાથે સાંજે પાર્શ્વ શાંતિધામ, તા. ૯ ફેબ્રુઆરીના રોજ સવારે નેનાવા સાંજે વિંછીવાડી, તા. ૧૦ ફેબ્રુઆરીના રજ વારે અજબાણી ફાર્મ, સાંજે ઝેરડા, તા. ૧૧ ફેબ્રુઆરીના રોજ સવારે શંખેશ્વર દર્શન (રાજ રાજેન્દ્ર જયંતસેન વિહારધામ) તા. ૧૩ ફેબ્રુઆરીના રોજ ગચ્છાધિપતિશ્રીની નિશ્રામાં ડીસા અંજનશલાકા પ્રતિષ્ઠામાં સાથે તા. ૧૪ ફેબ્રુઆરીના રોજ સવારે આસેડા સાંજે ભાટસણ,તા. ૧૫ ફેબ્રુઆરીના રોજ સવારે વાગરોદ, સાંજે ચારૂપતીર્થ તા. ૧૬ ફેબ્રુઆરીના રોજ સવારે પાટણ.

મુનિરાજશ્રી વિધ્વદરત્ન વિજયજી મ.સા.ના સંયમ જીવનના ૩૨માં વર્ષમાં પ્રવેશ પ્રસંગે ગુર્જર જૈન જ્યોત પરિવાર-સંપાદક સુરેશ સંઘવી અંતઃકરણપૂર્વક શુભેચ્છા, હાર્દિક વધાઇ સાથે ભૂરી ભૂરી અનુમોદના પાઠવી વંદન કરે છે.

શ્રીમતી કાંતાબેન પરીખમાંથી બન્યા સાધ્વીજી શ્રી મુક્તિવિપુલાશ્રીજી મ.સા.

જાલોર જિલ્લાના આહોરનગરે આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્વિજય જયાનંદ સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના વરદ્હસ્તે તા. ૧૩-૨-૨૦૨૦ના રોજ થરાદ નિવાસી શ્રીમતી કાંતાબેન વસંતભાઇ પરીખને દીક્ષા પ્રદાન કરાઇ હતી. જે શ્રીમતી કાંતાબેન પરીખમાંથી સાધ્વીજી શ્રી મુક્તિવિપુલાશ્રીજી મ.સા. બન્યા હતા. નૂતન સાધ્વીજી ભગવંતના ચરણોમાં વંદન.

શ્રી સૌધર્મ બૃહતપોગચ્છીય ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ (થરાદ) અમદાવાદ દ્વારા આયોજિત અમદાવાદ-પાલડી મધ્યે ત્રિદિવસીય મહોત્સવ સંપન્ન

શ્રી સૌધર્મ બૃહતતપોગચ્છીય ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ (થરાદ) અમદાવાદ દ્વારા આયોજિત અમદાવાદ - પાલડી મધ્યે ત્રિદિવસીય મહોત્સવનું આયોજન કરાયું હતું. પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્યદેવ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના પટ્ટધર યુગપ્રભાવક ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા., આચાર્યશ્રીમદ્ વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના આજ્ઞાનુવર્તીની ગુરૂમૈયા માતૃહૃદયા સાધ્વીજીશ્રી પ્રેમલત્તા શ્રીજી મ.સા.ના દિવ્ય આશિષ, માલવમણી વયોવૃદ્ધ સાધ્વીજીશ્રી સ્વયંપ્રભાશ્રીજી મ.સા.ના આશિર્વાદ તેમજ સાધ્વીજીશ્રી કલ્પરેખાશ્રીજી મ.સા., સાધ્વીજીશ્રી પરમરેખાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણાની પ્રબળ ભાવનાથી મુનિરાજશ્રી જિનાગમરત્ન વિજયજી મ.સા. આદિઠાણાની પાવનકારી નિશ્રામાં પરમપૂજ્ય તપસ્વિની સરળ સ્વભાવી ૫૮ વર્ષ સંયમ પર્યાયી કોમળ હૃદયા વયોવૃદ્ધ સાધ્વીજી શ્રી પૂર્ણકિરણાશ્રીજી મ.સા.ના આત્મશ્રેયાર્થે ત્રિદિવસીય રત્નત્રયી જિનેન્દ્ર ભક્તિ મહોત્સવ સંપન્ન થયો હતો. તા. ૮-૨-૨૦૨૦ના રોજથી તા.૧૦-૨-૨૦૨૦ના રોજ દરમ્યાન અમદાવાદ - પાલડીના શ્રી રાજેન્દ્રસૂરિ આરાધનાભવન ખાતે ધર્મ પ્રભાવક કાર્યક્રમો યોજાયા હતા. તા. ૮ ફેબ્રુઆરીના રોજ સવારે ૯ કલાકે ગુરૂ મહારાજ રચિત પૂજા અમદાવાદ ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘની બધી જ સ્નાત્ર મંડળની બહેનોએ ભણાવી હતી. જેનો લાભ ધરૂ ડાહ્યાલાલ ખેંગારભાઈ પરિવારે લીધો હતો. બપોરે ૨ થી ૪ કલાક દરમ્યાન બહેનો દ્વારા શાંતિધારા અભિષેક કરાયા હતા અને રાત્રે ૮-૦૦ કલાકે બહેનોએ સામુહિક પ્રતિક્રમણ કર્યું હતું. જેનો લાભ ભરતપુર નિવાસી શ્રીમાન કુમારપાળ વિમલચંદજી જૈન પરિવારે લીધો હતો. (સા.શ્રી કલ્પરેખાશ્રીજી મ.સા.ના સાંસારિક પરિવાર) તા. ૯ ફેબ્રુઆરીના રોજ સવારે ૬ કલાકે શ્રી ભક્તાંબર મહાપૂજન ભણાવાયું હતું. જેનો લાભ વોહેરા બબીબેન રાજમલભાઈ બાદરમલ પરિવારે લીધો હતો. બપોરે ૨ થી ૪ કલાક દરમ્યાન શ્રી ૧૦૮ પાર્શ્વનાથ ભગવાનના જાપ સાથે સામુહિક સામાયિક તથા રાત્રે સામુહિક પ્રતિક્રમણ કરાયું હતું. જેનો લાભ પાલડી સામાયિક મંડળની બહેનોએ લીધો હતો. પાલડી આરાધના ભવન ખાતે પ્રભુજીની ભવ્ય અંગરચના અને રાત્રે ભક્તિભાવનાનો કાર્યક્રમ યોજાયો હતો. જેનો લાભ વોરા બબલદાસ દલછાચંદભાઈ પરિવારે (આસોપાલવ) લીધો હતો. તા. ૧૦ ફેબ્રુઆરીના રોજ સવારે ગુણાનુવાદ (ભાવાંજલિ અર્પણ) જેનો લાભ વોહેરા બબીબેન

રાજમલભાઈ બાદરમલ પરિવારે લીધો હતો. બપોરે મહામંગલકારી સામુહિક આયંબિલ કરાવાયા હતા, જેનો લાભ અમદાવાદ આયંબિલ શાળાના પુરા વર્ષના લાભાર્થીદિસાઈ રમેશકુમાર કીર્તિલાલ દલસુખભાઈ પરિવારે લીધો હતો. બપોરે ૨ થી ૪ કલાક દરમ્યાન ત્રિસ્તુતિક જૈન સઘના દરેક ઉપાશ્રયમાં નવકાર મહામંત્રના જાપ સાથે સામુહિક સામાયિક થયા હતા. જેનો લાભ વોહેરા મોંઘીબેન મહાસુખલાલ બાદરમલ પરિવારે લીધો હતો. રાત્રે ૭ કલાકે સામુહિક બહેનોના પ્રતિક્રમણ રાત્રે ૮ કલાકે શ્રી રાજેન્દ્રસૂરિ આરાધના ભવન પાલડી ખાતે ભવ્ય મહાપૂજાનો કાર્યક્રમ સંપન્ન થયો હતો. જેનો લાભ શ્રી રાજેન્દ્રસૂરિ આરાધના ભવનની કમિટિ સભ્યોએ લીધો હતો.

નીતિની ગર્જતી નોબત, ધર્મની ફરકતી ધજા, સત્યની ચમકતી તલવાર અને પુણ્યની ખળભળતી ગંગા સ્વરૂપ તપસ્વી રત્ન શ્રી રમેશભાઈ ધરૂની ૧૦૮ શ્રી પાર્શ્વનાથજી તીર્થોની યાત્રા સંપન્ન

પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના સાંસારિક ધરૂ કુલદિપક, નીતિની ગર્જતી નોબત, ધર્મની ફરકતી ધજા, સત્યની ચમકતી તલવાર અને પુણ્યની ખળભળતી ગંગા સ્વરૂપ અ.ભા.શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદના રાષ્ટ્રીય અધ્યક્ષ તપસ્વી રત્ન શ્રી રમેશભાઈ બચુભાઈ ધરૂએ સંપત્તિક પુણ્ય સમ્રાટની પ્રેરણાથી આરંભ કરેલ જે ૧૦૮ શ્રી પાર્શ્વનાથજી તીર્થોની યાત્રા તેમના ધર્મ પારાયણ સહચારિણી શ્રીમતી રંજનબેન ધરૂના સથવારે તપસ્યા સાથે સંપૂર્ણ વિધિ સહિત યાત્રા સંપન્ન કરી હતી. તે સાથે શ્રી તીર્થકરોની ૧૨૦ કલ્યાણ ભૂમિની સ્પર્શના તપસ્યા સાથે યાત્રોનો પ્રારંભ કરવાવાળા છે. છેલ્લા કેટલાય વર્ષોથી લગાતાર યાત્રા પ્રવાસ કરી પરિષદને ધાર્મિક શિક્ષણ સાથે જોડી ભાવી પેઢીના માધ્યમથી નવા છોડને તૈયાર કરી રહ્યા છે. યાત્રા પ્રવાસ દરમ્યાન વીસ સ્થાનકની તપસ્યાનો ૧૬-૧૭-૧૮-૧૯-૨૦મો પાયો પણ રોપ્યો હતો. ખરા અર્થમાં કહીએ તો મહાવીદેહ ધામમાં વર્તાઈ રહેલા ચોથાઆરાનો ભવ્યશાળી જીવ ભરતક્ષેત્રના શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘને પરિષદના માધ્યમ દ્વારા સેવા આપવા પ્રાપ્ત થયો છે. અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદના સફળ સુકાની તપસ્વીરત્ન શ્રી રમેશભાઈ તપસ્યા સાથે દાયિત્વ નિભાવી પરિષદને નવી ઉંચાઈએ લઈ જઈ પુણ્ય સમ્રાટના વચનને સાચું ઠેરવ્યું છે. સરળતા, સાદાઈ અને સમાજ સેવાના ભેખધારી તપસ્યામય જીવન વ્યતિત

કરતાં તપસ્વીરત્ન શ્રી રમેશભાઈ ધરૂ દર મહિને શ્રી શત્રુંજય તીર્થની યાત્રા કરે છે. વર્ષમાં ૧૦૦૦/- સામાયિક કરવાના સંકલ્પ સહિત શ્રી તીર્થંકર ભગવાનની ૧૨૦ શ્રી કલ્યાણભૂમિની યાત્રાનો જલ્દીમાં જલ્દી પ્રારંભ કરવાવાળા છે. તપસ્યા સહિત તીર્થની યાત્રા અને પરિષદ દૌરાની અનુમોદના, અભિનંદના, સુખશાતા પૂછવા સાથે પરિષદ પરિવારને ગર્વ છે તેમના રાષ્ટ્રીય અધ્યક્ષ પર અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક - મહિલા અને તરૂણ પરિષદ પરિવારે અનુમોદના હાર્દિક શુભકામનાઓ પાઠવેલ હતી.

આલોટ ખાતે જડ રૂઢિવાદી પરંપરામાં સુધારો

(રાજ) શ્રી નાગેશ્વર પાર્શ્વનાથ જૈન તીર્થની તળેટી આલોટ શ્રી જૈન સકળ સંઘની તાજેતરમાં મિટિંગ બોલાવાઈ હતી, જેમાં શ્રી સંઘોના અધ્યક્ષો, વરિષ્ઠજનો, સમાજજનો, તમામ સામાજિક સંસ્થાઓના પ્રતિનિધિઓ અને યુવાનોની ઉપસ્થિતિમાં જડરૂઢિવાદી પરંપરામાં સુધારો કરતો નિમ્નાનુસાર સર્વાનુમતિથી નિર્ણય લેવાયો હતો. (૧) મૃત્યુ ભોજન - ઉઠમણા અને ગોરણીમાં મિઠાઈ બનાવવા અને ખવરાવવા માટે પૂર્ણત નિષેધ રહેશે. (૨) મૃત્યુ ભોજનમાં હવે પછી મિઠાઈ વિના માત્ર પાંચ આઈટમ અગર દાલ-બાફલા-કઢી, ભાત અને ભજિયા જ બનાવી શકાશે, (૩) ઉઠમણાના ભોજનમાં પુરા સંઘને બોલાવવાનો નિષેધ કરાયો છે. (૪) મૃત્યુના નિમિત લેન, કાચરીયા શ્રી સંઘમાં હવે પછી વેચવામાં આવશે નહીં. (૫) અગર મૃત્યુ ભોજન નિમિત્તે કોઈ મિઠાઈ બનાવરાવશે કે ખવરાવશે તો સંઘનો કોઈપણ સદસ્ય આ ભોજનમાં સામેલ નહીં થાય. (૬) કડવા ભોજનની વ્યવસ્થા શ્રીસંઘ અને શ્રીસંઘની સામાજિક સંસ્થાઓ દ્વારા કરવામાં આવશે. (૭) સકલ શ્રી સંઘની કાર્યકારીણી સમિતિ બનાવવાનો નિર્ણય લેવામાં આવ્યો હતો. તથા ભવિષ્યમાં થવાવાળા બધા જ સામુહિક ધાર્મિક કાર્યક્રમો સકલ જૈન શ્રીસંઘના નામથી જ કરવામાં આવશે. (૮) મૃત્યુ નિમિત્તે થવાવાળા સ્વામીવાત્સલ્ય પણ મૃત્યુ ભોજન જ માનવામાં આવશે. (બારીયા) (૯) જે પરિવાર મૃત્યુ ભોજનનું આયોજન નહીં કરે તે પરિવારનું સકલ જૈન શ્રીસંઘ દ્વારા બહુમાન કરવામાં આવશે. ઉક્ત અભૂતપૂર્વ મિટિંગમાં પધારેલા સમસ્ત વરિષ્ઠજનો, સમાજજનો, સામાજિક સંસ્થાઓના પ્રતિનિધિઓ અને યુવાનોનો શ્રીસંઘના સહુ અધ્યક્ષોએ આભાર વ્યક્ત કર્યો હતો, સાથે સાથે સૃજનાત્મક શ્રી સંઘના નિર્માણની પ્રથમ સામુહિક સફળતા પર શ્રીસંઘે સમસ્ત સદસ્યોને વધાઈ પણ આપી હતી.

બડનગર (મ.પ્ર.)માં જૈન ધર્મના હિસાબથી લગ્નનું આયોજન

મ.પ્ર.ના બડનગરમાં શ્રીસંઘના પૂર્વ સચિવ અને પરિષદના રાષ્ટ્રીય પદાધિકારી શ્રી શાંતિલાલજી ગોખરૂના સુપુત્ર ચિ. દર્શિત ગોખરૂના શુભલગ્ન અવસર પર જૈન ધર્મના હિસાબથી લગ્નનું આયોજન કરાયું હતું. જેમાં ૨૧ જાન્યુઆરી ૨૦૨૦ના રોજ સ્થાનિય જ્ઞાનમંદિરમાં બપોરે ભક્તાંબર પૂજાનું આયોજન કરાયું હતું. એમ.પી. ચોક સ્થિત શ્રી મહાવીર સ્વામી જિનાલયમાં શ્રી મહાવીર સ્વામી ભગવાનને ભવ્ય અંગરચના કરવામાં આવી હતી. દિવસનું લગ્ન રાખી ૨૨ જાન્યુઆરીના રોજ બપોરના લંચ સમયે રીસેપ્શનનું આયોજન કરવામાં આવ્યું હતું. આ એક મિશાલ છે અને અનુકરણીય કાર્ય છે. ગોખરૂ પરિવારના આ કદમની ખુબ ખુબ સરાહના થઈ રહી છે.

અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદના નવિન પદાધિકારીઓની ત્રિદિવસીય ગુરૂદર્શન વંદન યાત્રા સંપન્ન

અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદના નવિન પદાધિકારી રાષ્ટ્રીય મહામંત્રી શ્રી સુધીરજી લોઢા, પ્રાંતિય મહામંત્રી શ્રી ચિરાગજી ભંસાલીના નેતૃત્વમાં પરિષદ પરિવારના પદાધિકારીઓ તા. ૨૭ જાન્યુઆરીના રોજ અમદાવાદ ખાતે દર્શન-વંદન કરવા પધાર્યા હતા. તા. ૨૮ જાન્યુઆરીના રોજ પાલિતાણા ખાતે બિરાજમાન ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. આદિ મુનિભગવંતોના દર્શન-વંદન કરી તા. ૨૯ જાન્યુઆરીના રોજ ઉંઝા ખાતે આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા., મુનિરાજશ્રી ચારિત્રરત્ન વિજયજી મ.સા.ના દર્શન-વંદન કર્યા હતા.

વરિષ્ઠ મુનિરાજ શ્રી વીરરત્નવિજયજી મ.સા.નું સ્વાસ્થ્ય સુધારા પર

પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના વરિષ્ઠ શિષ્યરત્ન અને ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા., આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના આજ્ઞાનુવર્તીવરિષ્ઠ મુનિરાજ શ્રી વીરરત્નવિજયજી મ.સા.નું સ્વાસ્થ્ય કથળતાં જરૂરી સારવાર પાલિતાણા ખાતે અપાઈ હતી. સ્વાસ્થ્ય ચેક અપ માટે અમદાવાદ લવાયા હતા. શ્રી સંઘના રાષ્ટ્રીય અધ્યક્ષ શ્રી વાઘજીભાઈ વોરાના નેતૃત્વમાં વૈયાવચ્ચ સેવા પુરુષ રાષ્ટ્રીય પરિષદ મંત્રી અને અમદાવાદ શાખા પરિષદ અધ્યક્ષશ્રી ભરતભાઈ વોહેરા (લાડુ), ડો. શ્રી જગદીશજી અને સહુ ટ્રસ્ટીગણે વરિષ્ઠ મુનિરાજ શ્રી વીરરત્નવિજયજી મ.સા.ની ઉત્કૃષ્ટ સેવા-ચાકરી સાથે સારવાર કરાવી હતી. દરમ્યાન ગચ્છાધિપતિશ્રી લગાતાર સેવાર્થીઓના સંપર્કમાં રહી મુનિરાજશ્રીના સ્વાસ્થ્યની ચિંતા કરી સારામાં સારી

સારવાર કરવા પ્રેરણા આપતા હતા. થોડાજ દિવસોમાં મુનિરાજશ્રીનું સ્વાસ્થ્ય નોર્મલ થવા લાગ્યું હતું. અત્યારે મુનિરાજશ્રીનું સ્વાસ્થ્ય એકદમ સુધારા પર છે, અને પાલિતાણા ખાતે સ્થિરતા કરી રહ્યા છે.

પાટણનગરમાં મુનિ ભગવંતોનું આત્મીય મિલન

પાટણ નગરના ત્રિસ્તુતિક જૈન ઉપાશ્રયમાં બિરાજમાન પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના શિષ્યરત્ન મુનિરાજશ્રી ચારિત્રરત્નવિજયજી મ.સા., મુનિરાજશ્રી નિપુણરત્નવિજયજી મ.સા. આદિ ઠાણા અને પાલિતાણાથી વિહાર કરી પધારેલ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય હેમેન્દ્ર સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના શિષ્યરત્ન મુનિરાજ શ્રી ચંદ્રયશવિજયજી મ.સા., આદિઠાણાનું આત્મિય મિલન થયું હતું. આ પ્રસંગે મુનિરાજ ભગવંતો વચ્ચે સંઘ સમુદાયના વિભિન્ન વિષયો પર ચર્ચા થઈ હતી. મુનિરાજ શ્રી ચંદ્રયશવિજયજી મ.સા.એ પાટણનગરમાં મુનિરાજ ભગવંતોના ચાલી રહેલા અધ્યયન પર પ્રસન્નતા વ્યક્ત કરી હતી.

મુનિરાજ જિનાગમરત્નવિજય મ.સા.નું અમદાવાદ ખાતે પુનઃ આગમન

પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના અંતેવાસી શિષ્ય મુનિરાજ શ્રી જિનાગમરત્નવિજયજી મ.સા. આદિ ઠાણા-૬, વડી દીક્ષા, છેદ સૂત્ર, આગમગ્રંથોના યોગોધ્યન પછી ફરીથી આગામી સ્વાધ્યાયક્રમ માટે તા. ૨૬-૧-૨૦૨૦ના રોજ સવારે ૧૦ કલાકે શ્રી યતિન્દ્રસૂરિ આરાધના ભુવન મીઠાખળી અમદાવાદના ઉપાશ્રયે પધરામણી કરી હતી. પૂજ્ય મુનિરાજશ્રીની નિશ્રામાં પુનઃ રાજનગર સ્વાધ્યાય, ધ્યાન તથા તપમય બનશે.

સરસ્વતી પુત્ર, યુવાનોના હૃદય સમ્રાટ પૂજ્ય મુનિરાજશ્રી નિપુણરત્નવિજયજી મ.સા. દ્વારા જ્ઞાનપોષિત અને પ્રેરણાસ્પદ અવિરત પાઠ વાંચન

પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ની અંતિમ ચાતુર્માસ સ્થળી જયંતસેન ધામ રતલામના ચાતુર્માસ બાદ નિરંતર અખંડરૂપથી ગુરૂ આજ્ઞાને તહતી સ્વીકાર કરી પ્રતિ રવિવાર સવારે ૬-૩૦થી ૮ કલાક દરમ્યાન શ્રીભક્તામ્બર, ગૌતમસ્વામી ઈક્કિસા, ગુરૂ ઈક્કિસા અને જયંતસેન વંદનાના પાઠ નિરંતર ક્રમથી ચાલી રહ્યા છે. આ ક્રમને અવિરત રાખવામાં ગુરૂકૃપાની સાથે-સાથે ગુરૂદેવના વિશેષ કૃપા પાત્ર સરસ્વતી પુત્ર યુવાનોના હૃદય સમ્રાટ પૂજ્ય મુનિરાજ શ્રી નિપુણરત્ન વિજયજી મ.સા. દ્વારા પ્રતિ રવિવારે જ્ઞાન પોષિત અને પ્રેરણાસ્પદ પત્ર મોકલવામાં આવે છે. આજ સુધી મુનિરાજશ્રી દ્વારા ૧૮૦ પત્ર પ્રાપ્ત થઈ ચૂક્યા છે.

જેમાંથી ૬૪ પત્રોનું સંકલન ''પ્રભુ કૃપા સે ગુરૂ મિલે, ગુરૂ કૃપા સે પ્રભુ મિલે'' નામક પુસ્તિકાના માધ્યમથી ભક્તામ્બર આરાધકો દ્વારા કરવામાં આવેલ છે અને પ્રતિ રવિવારે પત્રના વાંચન પાઠ બાદ કરવામાં આવે છે. આ આરાધનામાં બધા જ સંપ્રદાયના આરાધકો શામિલ થાય છે. પાઠ પછી બધા જ આરાધકો માટે નવકારશી મંડલ દ્વારા નવકારશીનું સુંદર આયોજન કરાય છે.

પુણ્ય સમ્રાટના ૬૭માં સંયમ દિવસ પર દેશવિદેશમાં થયા ધાર્મિક આયોજન

પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના ૬૭માં સંયમ દિવસ પર સામુહિક સામાયિકનું આયોજન પરિષદ શાખાઓ દ્વારા કરાયું હતું. યુગનાયક, ધર્મ દિવાકર, ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. આદિ ઠાણા અને આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્નસૂરિશ્વરજી મ.સા. આદિ ઠાણા સહિત શ્રમણ-શ્રમણીવૃંદની નિશ્રામાં ગામોગામ, નગરો-નગર, ગુરૂ ગુણાનુવાદ અને ધાર્મિક આયોજન કરવામાં આવ્યા હતા. ધાર્મિક આયોજન સાથે ચિકિત્સા શિબિર અને જરૂરતમંદની મદદ, ગ્રોગાસ જેવા અનેક કાર્યો પરિષદ પરિવાર દ્વારા કરવામાં આવ્યા હતા. સામુહિક સામાયિકમા લાભાર્થીપરિવાર દ્વારા પ્રભાવનાનો લાભ લેવાયો હતો. પરિષદ પરિવારના આહ્‌વાનથી પાલિતાણા, ઉંઝા, જાપાન, દલૌદા, બેંગ્લોર, ખવાસા, મહિદપુર રોડ, મોહનખેડા તીર્થ, નાગદા, ખાચરોદ, બડનગર, રાણાપુર, ઈન્દોર, ભરતપુર પાટણ, રતલામ, ધાર, દસઈ, પ્રિતમનગર, ઉજ્જૈન પારા, નિમ્હાહેડા, કુશલગઢ, મેઘનર, કોઈમ્બતૂર, મંદસોર, અમદાવાદ, સુરત, કરવડ વિગેરે અનેક સ્થાનો પર પુણ્ય સમ્રાટના સંયમ દિવસ ધાર્મિક આયોજન કરી મનાવવાાં આવ્યો હતો. મહિલાઓએ મોટી સંખ્યામાં સામાયિક અને જાપ કર્યા હતા. ઈન્દોરમાં પુરૂષો પણ આગળ રહ્યા હતા. આ કાર્યક્રમને સફળ બનાવવામાં પ્રત્યક્ષ યા પરોક્ષ રીતે સહયોગ માટે પરિષદ અધ્યક્ષ શ્રી રમેશભાઈ ધરૂ પરિષદ પરિવાર તરફથી ખૂબ ખૂબ અનુમોદના કરે છે.

રાજગઢ ખાતે નેત્ર ચિકિત્સા શિબિર કાર્યક્રમ સંપન્ન

અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક, મહિલા અને તરૂણ પરિષદ પરિવાર દ્વારા પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના ૬૭માં સંયમ દિવસના ઉપલક્ષ્યમાં વિશાલ નિઃશુલ્ક નેત્ર ચિકિત્સા શિબિરનું આયોજન તા. ૨૪-૧-૨૦૨૦ના રોજ શ્રી રાજેન્દ્ર ભવન રાજગઢ ખાતે કરવામાં આવ્યું હતું. ઉક્ત જાણકારી આપતાં પરિષદ સંગઠન મંત્રીશ્રી કીર્તિજી ભંડારીએ જણાવ્યું કે, શિબિરનો શુભારંભ દાદા ગુરૂદેવશ્રી અને પુણ્ય સમ્રાટશ્રીના ફોટા સામે દીપ પ્રજ્વલન અને

માલ્યાર્પણ પરિષદ પૂર્વ શાખા અધ્યક્ષ શ્રી કાંતિલાલજી જૈન વીમાવાળા અને અધ્યક્ષ શ્રી માંગીલાલ મામા દ્વારા કરવામાં આવ્યો હતો. શિબિરમાં ૨૦૩ દર્દીઓની આંખની તપાસ કરવામાં આવી હતી જેમાં ૨૨ દર્દીઓના મોતિયા પાકી જવાથી દાહોદ લઈ જવાયા હતા ત્યાં નિઃશુલ્ક ઓપરેશન કરાયાં હતા, પરિષદ સદસ્ય શ્રી રમણજી હરણએ જણાવ્યું કે, આ શિબિરનું આયોજન પૂજ્ય ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. અને આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ની પ્રેરણાથી અને દૃષ્ટિ નેત્રાલય દાહોદના સહયોગથી કરવામાં આવેલ હતું. જાપાની મશીન દ્વારા દર્દીઓની આંખની તપાસ અને વિભિન્ન બિમારીઓની તપાસ કર્યા બાદ નિઃશુલ્ક દવાઓનું વિતરણ કરવામાં આવ્યું હતું. શિબિરમાં શ્રી બાબુલાલ મામા, શ્રી બસંતીલાલ લોઢા, શ્રી મહેન્દ્રજી ચંડાલિયા, શ્રી રમેશજી ભંડારી, શ્રી મહેન્દ્રજી છાજેડ, શ્રી વિજયજી બાફના, શ્રી નીતિનજી ધારીવાલ, પ્રણય ભંડારી, સંતોષ જૈન, શ્રી વિજયજી મામા, શ્રી નીતિનજી ભંડારી, શ્રી સીની જૈન, શ્રી સૌમિકજી મંડવાડા, શ્રી હર્ષ બાફના, શ્રીમતી સીમા મોદી, શ્રીમતી જ્યોતિ મંડવાડા, શ્રીમતી રજનીમામા, શ્રીમતી સાધના જૈન, શ્રીમતી માયા જૈન, શ્રીમતી રૂપલ જૈન, શ્રીમતી શીતલ મામા વિગેરે નવયુવક, મહિલા અને તરૂણ પરિષદના સદસ્યોએ સેવા પ્રદાન કરી હતી.

પિલુડા નિવાસી વોહેરા સુરજબેન ખેમચંદભાઈ ઈશ્વરલાલ પરિવાર દ્વારા આયોજિત બે દિવસીય શ્રી શેત્રુંજય તીર્થાધિરાજનો સગાં-સ્નેહીઓ સહિત કૌટુંબિક યાત્રા પ્રવાસ સંપન્ન

પોતાના પૂર્વજોની સાત પેઢીના ઈતિહાસને અજવાળતા અવસરના શુભ ચોઘડીયાં રણકતાં શ્રી આદિનાથ દાદાની અસીમ કૃપા.. દાદા ગુરૂદેવ શ્રીમદ્‌વિજય રાજેન્દ્રસૂરિશ્વરજી મ.સા., પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના દિવ્ય આશિષ, ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા., આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્નસૂરિશ્વરજી મ.સા.ના આશિર્વાદ પરિવારજનોના પુણ્યોદયે અને સરળ સ્વભાવી સ્વર્ગસ્થ મફતલાલ વોહેરા તથા સ્વર્ગસ્થ સેવંતીલાલ વોહેરાના સ્મણાર્થે પિલુડા નિવાસી વોહેરા સુરજબેન ખેમચંદભાઈ ઈશ્વરલાલ પરિવાર દ્વારા આયોજિત બે દિવસીય શ્રી શત્રુંજય તીર્થાધિરાજ (પાલિતાણા)ના સગાં-સ્નેહીઓ સહિત કૌટુંબિક યાત્રા પ્રવાસનું સુંદર આયોજન કરાયું હતું.

સંવત ૨૦૭૬ના મહા સુદ ૧ ને શનિવાર તા. ૨૫-૧-૨૦૨૦ની રાત્રિએ અમદાવાદથી ૧ લકઝરી બસ દ્વારા અને સુરતથી ૩ લકઝરી બસ દ્વારા વોહેરા પરિવારના

સભ્યોએ ઉષ્માભેર વિદાય લઈ ૩૦૦થી અધિક યાત્રિકોએ શ્રી શત્રુંજય તીર્થાધિરાજ (પાલિતાણા) તરફ જવા મંગલમય પ્રસ્થાન કર્યું હતું.

તા. ૨૬-૧-૨૦૨૦ની વહેલી સવારે સમસ્ત યાત્રિકો શ્રી શત્રુંજય તીર્થાધિરાજની છત્રછાયામાં પાલિતાણા ખાતે આવી પહોંચ્યા હતા. જ્યાં પ્રથમથી જ યતિન્દ્રભવન મધ્યે આવેલ શ્રી ચુનીલાલ નાગરદાસ અદાણી યાત્રિકભવનમાં રૂમો બુક કરાવી હતી અને દરેકને કાળજી સાથે ઉત્તમ સગવડ અપાઈ હતી. યાત્રિક ભવનના બહારના ભાગમાં ત્રણસો વ્યક્તિ બાજઠ પર જમી શકે તેવા મંડપની રચના કરાઈ હતી. સવારની નવકારશી બાદ શ્રી શત્રુંજય તળેટી રાજના સામુહિક વધામણા કરાયા હતા. અને બાબુજીના જિનાલયમાં શાંતિસ્નાત્ર પૂજા ભણાવાઈ હતી. બપોરે યાત્રિક ભવનમાં પૂજ્ય મુનિરાજ શ્રી વૈભવરત્ન વિજયજી મ.સા.એ તેમની આગવી શૈલી દ્વારા પ્રાસંગિક પ્રવચન ફરમાવ્યું હતું. રાત્રિભક્તિ ભાવનામાં નિલેશભાઈ બારોટ એન્ડ કંપની દ્વારા સંગીત સાથે માતૃ-પિતૃ વંદનાનો ભવ્યાતિભવ્ય કાર્યક્રમ સંપન્ન થયો હતો. માતા-પિતાના ગુણોનું સ્મરણ કરાવતા આ કાર્યક્રમમાં દરેકની આંખોના ખૂણા ભીના થઈ ગયા હતા.

તા. ૨૭-૧-૨૦૨૦ના રોજ સવારે ૬ કલાકે શ્રી શત્રુંજય તીર્થાધિરાજની સંગીતના સથવારે વાજતે-ગાજતે સામુહિક પહાડ યાત્રાનો શુભારંભ કરાયો હતો. સહુ યાત્રિકોએ દાદાના દરબારમાં જઈ ઉલ્લાસપૂર્વક સ્તુતિ, સેવા-પૂજા અને ચૈત્યોને જુહારી ધન્યતા અનુભવી હતી. યાત્રાબાદ દરેક યાત્રિકો અદાણી યાત્રિક ભવન ખાતે આવ્યા હતા, ત્યાં આયોજક પરિવાર દ્વારા દુધથી પગ ધોઈ રૂા. ૫૦ના કવર દ્વારા દરેક યાત્રિકોનું બહુમાન કરાયું હતું. આયોજક પરિવારના શ્રી દિનેશભાઈ, શ્રી વિપુલભાઈ, શ્રી કમલેશભાઈ (કનુભાઈ), શ્રી ભરતભાઈ વિગેરેનું પરિવારજનો તથા સગાં-સ્નેહીજનો તરફથી બહુમાન કરાયું હતું. આયોજક પરિવાર દ્વારા જરૂરિયાત વસ્તુની કીટ તેમજ ચોખા ભરેલ વટવો યાત્રિકોને અપાયો હતો અને આયોજક પરિવાર તથા સગા-સ્નેહીઓના મળી કુલ રૂા. ૧૫૦નું સંઘ પૂજન કરાયું હતું. ત્રણેય ટાઈમના ભોજનની સુંદર વ્યવસ્થા કરાઈ હતી. આયોજક પરિવાર દ્વારા અશક્ત યાત્રિકો માટે ડોળીની પણ વ્યવસ્થા કરાઈ હતી.

સાંજના ચૌવિહાર કરી વલ્લભીપુરથી શ્રી શત્રુંજય તીર્થાધિરાજના છ:રી પાલક સંઘમાં નિશ્રા પ્રદાન કરતા અઢીદ્વીપ નજીક બિરાજમાન ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના દર્શન-વંદન કરી આરતી અને મંગલ દીવાનો લ્હાવો પ્રાપ્ત કરી સ્નેહની સાંકળ રચી આયોજક પરિવાર સહિત સહુ યાત્રિકોએ સુરત અને અમદાવાદ જવા પ્રયાણ કર્યું હતું. આ યાત્રા પ્રવાસ ધર્મ ભાવનાથી દીપી ઉઠ્યો હતો. આમ વોહેરા સુરજબેન ખેમચંદભાઈ ઈશ્વરલાલ પરિવાર દ્વારા આયોજિત યાત્રા પ્રવાસ સંભારણું બની ગયો હતો. આ બે દિવસીય યાત્રા પ્રવાસના પુલકિત અવસરના આનંદથી થરાદ તાલુકાના પિલુડાનગરની ધન્ય ધરા પણ હરખાઈ ઉઠી હતી.

શ્રાવકના માર્ગાનુસારી ગુણો

માણસનું મૂલ્ય અને માન તેના ચારિત્રથી છે. ચારિત્ર્યહીન માણસનું સમાજમાં કોઈ સ્થાન નથી. ચારિત્ર્યવાન વ્યક્તિ મોક્ષનો પંથ ઝડપથી પાર કરી શકે છે. આથીજૈન મહર્ષિઓએ ચારિત્ર્યના નિર્માણ માટે સુસ્પષ્ટ માર્ગદર્શન આપ્યું છે. આ માટે તેઓએ ૩૫ ગુણો સૂચવ્યા છે. તે ગુણોના ધારણ અને વિકાસથી માણસ ચારિત્ર્યવાન બને છે. માણસને સજ્જન અને સદાચારી બનાવતા ૩૫ ગુણો આ પ્રમાણે છે.

૧. ન્યાયોપાર્જિત : ધન, ન્યાય, નીતિ અને પ્રામાણિકતાથી આજીવિકા પસાર કરવી.

૨. ઉચિત વિવાહ : પોતાના કુળ, જાતિ, સંસ્કાર, સ્વભાવ તેમજ ધર્મ વગેરેને સાનુકૂળ પાત્ર સાથે લગ્ન કરવાં.

૩. શિષ્ટપ્રશંસા : સજ્જન, સસ્કારી, સદાચારીજનોના ગુણોનું અભિવાદન કરવું પ્રશંસા કરવી.

૪. શત્રુત્યાગ : કોઈની પણ સાથે વેરભાવ કે દુશ્મનાવટ કે કિન્નાખોરી ન રાખવા.

૫. ઈન્દ્રિય વિજય : ઈન્દ્રિયોની વૃત્તિ અને પ્રવૃત્તિઓ પર સંયમ રાખવો.

૬. અનિષ્ટ સ્થાનત્યાગ : જાન-માલ જ્યાં ભયમાં મુકાય, ધર્મસાધનો જ્યાં ડહોળાય તેવા સ્થાનનો ત્યાગ કરવો.

૭. ઉચિત ગૃહ : ધર્મ સાધનામાં સહાયક થાય તેવા પાડોશ અને વાતાવરણવાળા વિસ્તારમાં ઘર રાખવું, બનાવવું.

૮. પાપભય : નાનું-મોટું કોઈપણ પ્રકારનું પાપ કરતાં ડરવું, પાપથી બચવું.

૯. દેશાચારપાલન : સમાજ અને રાષ્ટ્રના ઉચિત વ્યવહારો, પ્રથાઓ વગેરેનું પાલન કરવું.

૧૦. લોકપ્રિયતા : સત્કાર્યો અને સેવાભાવથી સહુ કોઈના દિલ જીતી લેવા.

૧૧. ઉચિત વ્યય : આવક અનુસાર ખર્ચ કરવો, દેવું કરવું નહિ.

૧૨. ઉચિત વ્યવહાર : સમય અને સંજોગો મુજબ વર્તન વ્યવહાર રાખવાં.

૧૩. માતા-પિતા પૂજન : મા-બાપની સેવા કરવી.

૧૪. સત્સંગ : સંતો, સાધુઓ, સદાચારી વ્યક્તિઓ અને સજ્જનોની સોબત કરવી.

૧૫. કૃતજ્ઞતા : ઉપકારીના ઉપકારને યાદ રાખવા અને સમયે તેનો સમુચિત બદલો વાળી આપવા તત્પર રહેવું.

(વધુ આવતાં અંકે)

સંસ્કારોનો શંખનાદ – મારી પાઠ શાળા સૌ ચાલો પાઠશાળા જઈએ....

ભાવિક વાઘજીભાઈ માજની – પરિષદ રાષ્ટ્રીય સહશિક્ષામંત્રી

कुमकुम सने पगलिये

पाटण में गच्छाधिपति श्रीजी का मंगल प्रवेश हुआ

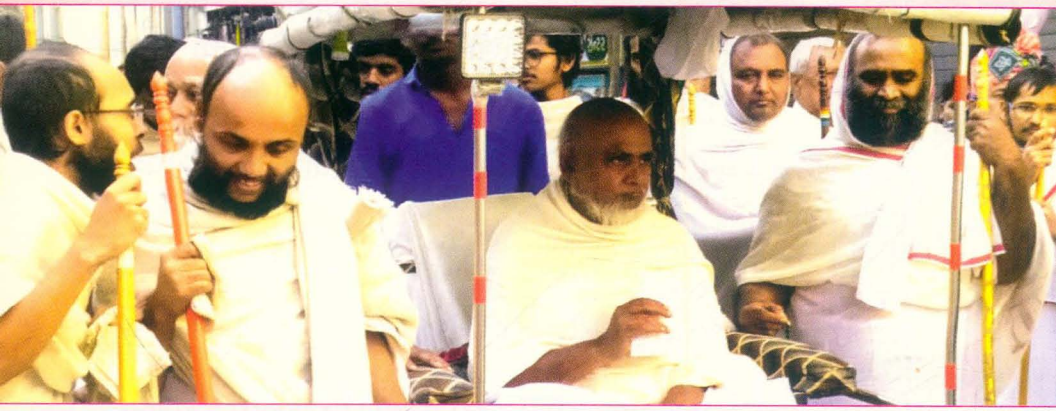

पाटण । युग प्रभावकाचार्य गुरुदेव श्री जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के पट्टधर गच्छाधिपति श्री नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा के विहार अंतर्गत 5 फरवरी को पाटण नगर गुजरात में सुबह मंगल प्रवेश हुआ भव्य सामैया सह श्री संघ के साथ हुआ। पंचासरा पार्श्वनाथ प्रभु दर्शन तथा आचार्यदेव श्री कुलचन्द्रसूरिजी म.सा. से आध्यात्मिक मिलन बाद में राजेन्द्रसूरि ज्ञान मंदिर में प्रवेश और मांगलिक प्रवचन हुआ। विशेष पाटण में मुनि श्री चारित्ररत्न विजयजी, निपुणरत्न विजयजी म.सा. आदि ठाणा, तत्वलताश्रीजी म. आदि ठाणा सा. कुमुदप्रियाश्रीजी म. आदि ठाणा सा. रुचिदर्शना श्रीजी म. आदि ठाणा का यहाँ पर अध्ययन चल रहा है। दिनांक 6.02.2020 गुरुवार को पाटण नगर गुजरात में श्री सागर जैन आश्रय में हुई गुरु प्रतिष्ठा 'गच्छाधिपति श्री नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. एवं आचार्यदेव श्री कुलचन्द्रसूरिजी म.सा. की निश्रा में सम्पन्न हुई।

दीक्षार्थी आजाद कुमार जैन बने मुनि पुष्पदंत विजयजी

श्री भाण्डवपुरतीर्थ। निकटवर्ती अतिप्राचीन भाण्डवपुर जैन महातीर्थ में दीक्षार्थी आजाद कुमार जैन ने सांसारिक मोहमाया का त्याग कर संयम पथ को अंगीकार किया। जिनका नामकरण मुनि पुष्पदन्त विजय किया गया। इस मौके पर जीवाणा जैन संघ द्वारा नवनिर्मित श्री वर्धमान राजेन्द्र द्वारा उद्घाटन भी हर्षोल्लासपूर्वक किया गया। भाण्डवपुर तीर्थोद्धारक

सूरिमंत्र आराधक आचार्यदेव जयरत्नसूरीश्वरजी महाराज एवं साध्वी सूर्यकिरणाश्रीजी आदि श्रमण-श्रमणिवृंद की शुभ निश्रा में प्रातः स्नात्र पूजा प्रारंभ की गई। तत्पश्चात् जैनाचार्य द्वारा समवसरण में विराजित अरिहन्त परमात्मा के सम्मुख क्रिया करवाई गई। इसके बाद सुधर्मगण परंपरा के वर्तमान गच्छाधिपति नित्यसेनसूरीश्वरजी के साम्राज्य एवं वर्तमान आचार्य जयरत्नसूरीश्वरजी के शिष्य के रूप में मुनि पुष्पदन्त विजय नाम घोषित किया गया। इस दौरान विविध लाभार्थियों ने पात्राए ठवणी, पोथी, नवकारवाली, डांडा, डंडासरण आदि उपकरण वहोराए। शाह पृथ्वीराज पारसमल गुलेच्छा परिवार जीवाणा द्वारा प्रातः कालीन नवकारसी, शंखेश्वर पार्श्वनाथ राजेन्द्र जैन श्वेताम्बर संघ जीवाणा द्वारा दोपहर नवकारसी एवं शाह भंवरलाल मेघराज छत्रियावोरा सुराणा द्वारा सायं नवकारसी का लाभ लिया गया। वही दोपहर में श्री राजेन्द्रसूरि अष्टप्रकारी पूजा के लाभार्थी शाह जुगराज शिवराज बागरेचा परिवार जीवाणा एवं अंगरचना के लाभार्थी कान्तादेवी बाबूलाल, पुखराजभाई रमाकांताजी बांसवाड़ा का पेढ़ी की ओर से बहुमान किया गया। जीवाणा जैन संघ सदस्यों को अभिनंदन-पत्र प्रदान कर बहुमान किया गया। इस बड़ी संख्या में जैन समाज के लोग मौजूद थे।

नूतन निर्मित श्री वर्धमान राजेन्द्र द्वारा उद्घाटन के लिए जीवाणा जैन संघ सदस्यों का सवेरे से ही सजधज कर कार्यक्रम स्थल पहुंचने का सिलसिला शुरू हो गया।

जो सुसज्जित हाथी, रथ, बग्गी में सवार होकर नूतन निर्मित द्वार पर पहुंचे। जहाँ गहुंली कर सर्वप्रथम भगवान महावीर गौतम स्वामी एवं राजेन्द्रसूरी के तस्वीर का प्रवेश करवाया गया।

इसके बाद जैनाचार्य जयरत्नसूरी

सहित चतुर्विध संघ का प्रवेश कर द्वार का उद्घाटन किया गया। अंत में सभी का तिलककर संघपूजन प्रभावना वितरित की गई।

रतत्तयी महोत्सव के दूसरे दिन श्री महावीर पंचकल्याणक पूजन व प्रभु की भव्य अंगरचना की गई। वहीं प्रवचन कार्यक्रम में आचार्यश्री ने कहा कि संसार क्षणिक सुख का आधार है। जो अस्थाई है। इस दौरान श्री जैन संघ ने दीक्षार्थी आजाद कुमार का बहुमान किया। दोपहर में दीक्षार्थी आजाद कुमार के वर्षीदान वरघोड़े का आयोजन किया गया दीक्षार्थी सुसज्जित हाथी पर सवार थे। ढोल-ढमाकों व भक्ति गीतों की धुन पर श्रावक-श्राविकाएं झूमते हुए चल रहे थे।

वरघोड़ा मन्दिर परिसर से निकाला गया। वहीं वरघोड़े में दीक्षार्थी मुक्त हस्तों से सांसारिक वस्तुओं का त्याग करते हुए फेंक रहे थे। जिन्हें पाने के लिए लोगों की भीड़ उमड़ रही थी। इस दौरान बड़ी संख्या में जैन समाज के लोग मौजूद थे।

साँचोर में भव्य गुरु प्रतिमाओं का प्रतिष्ठोत्सव

सांचोर। जैनाचार्य श्री जयरत्न सूरीश्वरजी आदि श्रमण श्रमणिवृंद का पुराना बस स्टेण्ड स्थित कुन्थुनाथ जैन मंदिर प्रांगण में महिलाओं ने सिर पर कलश धारण कर सामैया एवं गहुँली कर वधाया।

इस प्रवेश यात्रा में जीप रथ में पुण्यसम्राट जयन्तसेन सूरि एवं योगिराज शान्ति विजय गुरुमूर्ति विशेष आकर्षण का केन्द्र रही। सभी नर-नारी विशेष पोषाखे धारण कर पूर्ण उत्साह एवं जयकार करते हुए चल रहे थे। नगर के मुख्य मार्गों से होते हुए ऐतिहासिक जीवित स्वामी महावीरजी मंदिर के दर्शन कर गोडीजी मंदिर प्रांगण में स्थित विशाल पांडाल में पहुँचकर सभा में परिवर्तित हो गया।

जैनाचार्य श्री ने मंगलाचरण कर सभा प्रारंभ की। संगीतकार त्रिलोक मोदी ने गुरु वन्दना प्रस्तुत की। दिनेश भाई शाह ने महोत्सव की रूपरेखा बताई। मुकेश भाई संघवी ने आगंतुक सभी अतिथियों का आभार प्रकट किया। अध्यक्ष श्री बाबूलालजी मेहता ने राजेन्द्रसूरि द्वारा रचित साहित्य पर प्रकाश डालते हुए ऐसे ज्ञानी गुरु की मूर्ति प्रतिष्ठा पर प्रसन्नता प्रकट की व श्रीमती सोहनदेवी शान्तिलालजी संघवी ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया।

जैनाचार्यश्री जयरत्नसूरि ने सत्यपुर की प्राचीनता एवं इतिहास पर प्रकाश डालते हुए जिन शासन एवं

आम जनहित के कार्यों पर किए गए दान की अनुमोदना की। साँचोर नगर के परम उपकारी कनकप्रभसूरि एवं केशर विजयजी के नाम से स्मारक कनक-केशर वाडी की स्थापना करने की प्रेरणा प्रदान की। दोपहर में 108 पार्श्वनाथ महापूजन पढ़ाई गई।

जैनाचार्यश्री जयरत्नसूरीश्वरजी की शुभ निश्रा में श्री राजेन्द्रसूरि गुरुमूर्ति को उत्थापित कर स्नात्रमंडप में विराजमान कर अठारह अभिषेक किए गए प्रतिष्ठा के लिए नूतन निर्मित पुण्यसम्राटश्री जयन्तसेनसूरि एवं योगिराजश्री शान्तिविजयजी आदि गुरुमूर्ति, ध्वज, दण्ड, कलश आदि के विविध औषधियों द्वारा मंत्रोच्चारण पूर्वक अभिषेक विधान सुसम्पन्न हुआ।

शान्तिनाथ जैन मन्दिर पर 27 वां वार्षिक ध्वजारोहण शा. नरपतचन्दजी हरकचन्दजी बोथरा ने किया। श्री वासुपूज्यस्वामी मंदिर पर 26 वां वार्षिक ध्वजारोहण संघवी शा. धनराजजी हिम्मतमलजी कटारिया के परिवारजनों ने किया।

पुण्यसम्राट युगप्रभावक श्री जयन्तसेन सूरीश्वरजी के 37 वें पाटोत्सव की गुणानुवाद सभा प्रारंभ हुई। पुण्यसम्राट की मंच पर विराजित मूर्ति पर पुष्प माल्यार्पण के साथ ही सभा प्रारंभ हुई। जैनाचार्यश्री जयरत्नसूरिजी ने पुण्यसम्राट का साँचौर नगर पर असीम उपकारी कार्यों एवं भावों पर विस्तार से प्रकाश डाला। उनकी प्रबलतम भावना शिखरबद्ध गुरु मंदिर में गुरुदेव राजेन्द्रसूरि गुरुमूर्ति प्रतिष्ठा की थी, जिसको शा. चन्दाजी अमीचन्दजी कटारिया परिवार ने पूर्ण कर पुण्यसम्राटश्री की सच्ची गुरुभक्ति की है। ज्ञान, तप एवं साहित्य सृजन की भी चर्चा की। कवि कुलदीप प्रियदर्शी ने 'वन्दन बारम्बार करूँ' गीत प्रस्तुत कर सभी श्रोताओं को गुरु भक्ति से सराबोर कर दिया। जैनमुनि चारित्ररत्नविजयजी ने गुरु भक्ति एवं गुरु महिमा पर प्रकाश डाला। अमृत बोथरा ने गुरु द्वारा बताए गए त्याग मार्ग को अपनाने की सीख के साथ गीत का प्रसारण किया।

आयोजक संघवी परिवार की महिलाओं ने गुरु गुण महिमा गाई। अन्त में श्री हेमन्त संघवी ने पधारे अतिथियों का आभार प्रकट किया। विजय मुहूर्त में नूतन निर्मित गुरु मंदिर में गुरु मूर्तियों का प्रवेश करवाया गया। संघवी परिवार की महिलाओं ने पुखने एवं वधाने की विधि करवाई।

दोपहर गोड़ीजी मंदिर प्रांगण में भव्य वरघोड़ा प्रारंभ हुआ, जिसमें

सुसज्जित हाथी-घोड़ा-रथ, बैंड, शहनाई, बग्गी रथ व इन्द्रध्वजा आदि अनेक आकर्षण के केन्द्र थे। गैर पार्टी ने सभी का मनमोहा। सायं मंगलगीत में साँझी व मेहंदी वितरण कार्यक्रम भी हुआ। इस अवसर पर गुजरात, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र व राजस्थान आदि प्रांतों के अनेक गुरुभक्त उपस्थित थे। नूतन निर्मित श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी गुरु मंदिर में समर्थ गुरुदेव राजेन्द्रसूरि, पुण्यसम्राट श्री जयन्तसेनसूरि, योगिराजश्री शान्तिविजय आदि गुरुमूर्ति ध्वज-दण्ड-कलश स्थापना 'ॐ पुण्याहँ, ॐ पुण्याहँ' मंत्रोच्चार के साथ हर्षोल्लास पूर्वक हुई।

वर्तमान गच्छाधिपति धर्म दिवाकर श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी के शुभाशीर्वाद से एवं भाण्डवपुर तीर्थोद्धारक आचार्य श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म. आदि श्रमणवृंद साध्वीजीश्री सम्यक्प्रभाश्रीजी, काव्यरत्नाश्रीजी आदि श्रमणिवृंद की शुभ निश्रा में पंचान्हिका महोत्सव पूर्वक 8 फरवरी माह शुक्ला 14 शनिवार को प्रातः हर्षोल्लास व 'जय गुरुदेव' के जयघोष के साथ हुई।

संघवी शान्तिलालजी सागरमलजी कटारिया के निवास से ध्वजा लेकर नगर के मुख्य मार्गों से होते हुए राजेन्द्रसूरि गुरु मंदिर पहुँचे। सुसज्जित हाथी के पीछे-पीछे बैंड शहनाई, ढोल बजाते गाते महिलाएँ मंगल गीत गाती हुई चल रहीं थीं? युवकजन नृत्य करते हुए आगे - आगे चल रहे थे। मंदिर पहुँचने पर स्तंभ आरोपण करवाया। पश्चात् तोरण वेधन विधी सम्पन्न करवाकर मंत्रोच्चार पूर्वक तीनों गुरु बिम्ब गादि नशीन किए गए, शिखर पर ध्वज-दण्ड- कलश प्रतिष्ठित किए गए। पश्चात् धर्मसभा प्रारंभ हुई। जिसमें आचार्य जयरत्नसूरीश्वरजी ने प्रतिष्ठा का महत्व बताया एवं गुरुदेव की असीम कृपा सदैव साँचोर संघ पर बरसती रहे, ऐसी शुभ भावना का आशीर्वाद व्यक्त किया।

साँचोरी पट्टी उद्धारक आचार्यश्री कनकप्रभसूरीजी, केशरविजयजी एवं जैन यति रंगविजयजी के नाम कनक केशर रंगबाड़ी की स्थापना हेतु श्रीमती तीजा देवी भीमराजजी हजारीमलजी छाजेड़ परिवार द्वारा भूमिदान की घोषणा की गई। साँचौर नगर में आगामी 2020 का चातुर्मास करने हेतु संघवी सागरमलजी दुदाजी कटारिया व संघवी गंगदासजी खंगारजी कटारिया परिवार ने आग्रह पूर्ण चातुर्मास की विनती की। श्री राजेन्द्र सूरीश्वरजी जैन ट्रस्ट गठन की भी

घोषणा की। श्री सौधर्म बृहत्तपोगच्छीय राजेन्द्रसूरि त्रिस्तुतिक जैन उपाश्रय निर्माता गाँधीमुथा हिम्मतमलजी मुल्तानमलजी निवासी वाली जोधावास हॉल साँचोर द्वारा निर्मित उपाश्रय ट्रस्ट को समर्पित करने की भी घोषणा की। बाहर से पधारे अतिथियों का स्मृति चिन्ह प्रदान कर बहुमान किया गया। अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के केन्द्रीय उपाध्यक्ष श्री प्रकाशजी हिराणी ने शुभकामनाएँ व्यक्त की। प्रतिष्ठा आयोजक संघवी परिवार द्वारा गुरुदेव को कामली वोहराई गई।

दोपहर गोडी पार्श्वनाथ मंदिर पर वार्षिक ध्वाजारोहण किया गया।

* **साँचोर।** नगर में अभा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् अध्यक्ष श्री हेमन्त भाई कटारिया संघवी के विशेष आग्रह पर सांचौर में होने वाली गुरुमंदिर प्रतिष्ठा महोत्सव में जाने का कार्यक्रम बना। वहाँ की व्यवस्था व कार्यक्रम अति सुन्दर और व्यवस्थित थे। वहाँ पर त्रिस्तुतिक संघ के कुछ ही घर हैं बाकी सभी अन्य पंथ को मानने वाले हैं। आचार्यश्री जयरत्नसूरिजी म.सा. ने नगर में नया इतिहास बनाते हुए नवीन धाम श्री कनक केशर रंगवाड़ी सकल श्रीसंघ को लेकर बनाने की पहल की जो अनुकरणीय है। आचार्यश्री की पहल से दानदाता ने भूमि दान तत्काल की। शीघ्र ही सांचौर नगर में ऐतिहासिक धाम बनने वाला है। आचार्यश्री का आगामी चातुर्मास सांचौर में हो उसकी विनती भी सांचौर में की गई। सांचौर में गुरुभक्तों द्वारा गुरुदेव द्वारा गुरुदेव की प्रतिष्ठा व गुरुगच्छ की महीमा बढ़ाने के लिये किये गये कार्य अनुमोदनीय हैं।

---

* **भरतपुर।** यहाँ आचार्यश्री जयन्तसेनसूरिजी की प्रेरणा से जिसका जीर्णोद्धार हुआ ऐसे 520 वर्ष प्राचीन श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनालय में देव – गुरु जिनबिम्बों की भव्यातिभव्य प्रतिष्ठा मुनि श्री संयमरत्नविजयजी, मुनि श्री भुवनरत्न विजयजी के सान्निध्य में सम्पन्न हुई। साथ ही आचार्यश्री जयन्तसेन सूरिजी के 37 वें आचार्य पद पाटोत्सव को मनाया गया। प्रतिष्ठा के दिन फलेचुंदड़ी व परमात्मा की अखंड ज्योत का लाभ सायला (राज.) निवासी जीतमल, कांतिलाल, सुरेश कुमार कबदी परिवार ने लिया। मूलनायक परमात्मा व गुरु राजेन्द्रसूरिजी को विराजमान करने व नवकारसी का लाभ मुंबई के एस.पी. शाह परिवार ने लिया। प्रभु प्रतिष्ठा वरघोड़ा व

गौतम स्वामी की आरती का लाभ शा. कालुचंदजी रमेशजी हुकमाणी पांथेड़ी (विजयवाड़ा) वालों ने लिया। मंदिर के शिखर पर कलश चढ़ाने का लाभ लेने पर मुनिद्वय श्री के सांसारिक माता-पिता श्रीमती नंदलालजी भगवती देवी व चौरड़िया परिवार का बहुमान भरतपुर श्री संघ द्वारा किया गया। प्रतिष्ठा के मौके पर मुनिश्री संयमरत्नविजयजी द्वारा लिखित 'श्री अभिधान राजेन्द्र कोष परिचय परिमल' नामक पुस्तक का विमोचन हुआ। जिसका लाभ नैल्लोर के मोडमल जोइताजी बाफना परिवार (थलवाड़) ने लिया।

मुनिश्री ने प्रवचन देते हुए कहा कि जो अपने लिए नहीं समाज व देश के लिए जीते हैं, उनका अभिनंदन किया जाता है ऐसे लोगों का शरीर चले या न चले लेकिन उनका यश चलता है। जिनालय के द्वारोद्घाटन का लाभ कुसुमबहन महेशचंद्रजी (भरतपुर) मुंबई वालों ने लिया।

त्रिदिवसीय प्रतिष्ठा महोत्सव के दूसरे दिन प्रतिष्ठा का भव्यातिभव्य वरघोड़ा गुरुवार को आचार्य श्री नित्यसेनसूरिजी के आज्ञानुवर्ती मुनि श्री संयमरत्नविजयजी, मुनि श्री भुवनरत्न विजयजी के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। परमात्मा की प्रतिष्ठा के

वरघोड़े का संपूर्ण लाभ विजयवाड़ा के कालुचंद रमेशकुमार हुकमाणी परिवार ने लिया। मुनिश्री ने प्रवचन देते हुए कहा कि जीवन यात्रा सुखमय व्यतीत करनी हो तो अति परिग्रह और अति परिचय से दूर रहे। जिस तरह तन को साफ करने के लिए स्नान जरूरी है, वैसे ही मन को साफ करने के लिए मंदिर जरूरी है। वरघोड़े में हाथी पर परमात्मा को लेकर लाभार्थी परिवार बैठे शोभा बढ़ा रहे थे। 8 बग्घी पर राजेन्द्रसूरिजी की पाट परंपरा के चित्र सुसज्जित थे। दो बैंड, एक घोड़ी, ढोल पार्टी, डी.जे. साउंड परमात्मा के गीत गुंजायमान करते चल रहे थे। 20 बहनें मंगल कलश लेकर आगे चल रही थीं। 10 बालिकाएं पचरंगी दुपट्टे के साथ भक्ति गीतों के संग नृत्य कर रहीं थीं। 50 बालक-बालिकाएं ध्वजा लहराते चल रहे थे तो महिला मंडल डांडिया लेकर वरघोड़े की शोभा बढ़ा रहे थे। दोपहर में

अठ्ठारह अभिषेक व श्री राजेन्द्रसूरि गुरुपद पूजा का विधान, विधिकारक विनोदजी जैन ने करवाया। दिल्ली, जयपुर, अयोध्या, विजयवाड़ा, मदुरै, महुआ, हिंडोन, खेड़ील, नदबई, बड़नगर व राजस्थान से अनेक भक्तों का आगमन हुआ। प्रतिष्ठा वरघोड़े की व्यवस्था भागचंद जैन, पारसचंद जैन, सतीश जैन, रिंकु जैन आदि ने संभाली।

प्रथम दिन प्रातः काल मंगल वेला में प्रभातियां व भक्तामर पाठ के पश्चात् भागचंद , पारस जैन ने वाराणसी वाटिका का उद्घाटन किया। 'कुंभ स्थापना'- विमलचंद, कुमारपाल जैन 'दीपक स्थापना'-हुकमचंद, सुनीलकुमार जैन 'ज्वारारोपण'- पूरणचंद त्रिलोकचंद जैन 'नवग्रह पाटला पूजन'- ज्ञानचंद, दीपक जैन । 'दस दिग्पाल पाटला पूजन'- अनिल, विवेक जैन। 'अष्ट मंगल स्थापना'- पवन, देवेन्द्र जैन।' क्षेत्रपाल स्थापना- नरेन्द्र जैन 'श्री पार्श्वनाथ पंचकल्याणक पूजा'- रिखबचंद, विमलचंद जैन । 'नाश्ता'- सतीशचंद, अशोक जैन। 'सुबह की नवकारसी।'- मेंगलवा की गीतादेवी कांतिलाल डामराणी'। शाम की नवकारसी - 'बाकरा निवासी कमलादेवी मांगीलाल वोरा।' 'जल यात्रा'- सुमेरचंद्र जैन।' 'प्रभु भक्ति'- ताराचंद, प्रियंक जैन तथा आँगी का लाभ श्रीमती राजेश दीपक जैन परिवार ने प्राप्त किया। प्रतिष्ठा महोत्सव में सभी श्रृद्धालुगण बढ़चढ़कर भाग ले रहे हैं।

* **भरतपुर।** में स्थित श्री राजेन्द्रसूरि जैन कीर्ति तीर्थ में गुरु जयंती पर्वोत्सव प्रसंग में निश्रा प्रदान करने हेतु मुनि श्री संयमरत्नविजयजी, मुनि श्री भुवन रत्नविजयजी का मंगल प्रवेश हुआ। जिनालय में दर्शन-वंदन करने के पश्चात् धर्मसभा में मुनिश्री ने कहा कि गुरु के समक्ष विनम्र भाव से प्रस्तुत होना चाहिए। गुरु के सम्मुख पैर पसारकर, पैर पर पैर चढ़ाकर नहीं बैठना चाहिए। गुरु की छाया पर भी हमारे पैर न पड़ें इस तरह से गुरु के संग चलना चाहिए। इस मौके पर मुनिश्री ने 18 अभिषेक का भी महत्व समझाया, परिणाम स्वरूप भक्तों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।1 जनवरी 2020 (नववर्ष) को प्रातः गुरु सप्तमी का वरघोड़ा निकाला गया। नववर्ष 2020 का मांगलिक प्रवचन दिया। गुरुवार को गुरु सप्तमी प्रसंग पर मुनि श्री संयमरत्न विजयजी, मुनि श्री भुवन रत्नविजयजी ने गुरु गुणानुवाद किया।

गुरुदेव श्री के जन्मोत्सव का पारणा ऋषभ-केशरी स्मृति मंदिर में ले

जाने का लाभ भरतपुर के ट्रस्टी सतीश जैन ने लिया। बागरा त्रिस्तुतिक श्री संघ द्वारा निर्मित केशव रूम का उद्घाटन करने के पश्चात् मदुरै के प्रकाशजी सदाणी परिवार द्वारा गुरुदेवश्री को डायमंड आंगी समर्पित की गई। गुरुपद महापूजन में गुरु भक्तों ने बढ़चढ़कर भाग लिया।

श्री सुविधिनाथ परमात्मा की आरती व अखंड दीपक का लाभ शेषमल बाबुलालजी क्षत्रिय वोहरा, मंगलदीपक आरती का लाभ संघवी सोहनबाई इंदरमलजी दसेड़ा-जावरा, श्री गौतमस्वामी की आरती का लाभ कैलाश कुमार त्रिलोकचंदजी बैंगलोर, दादा गुरुदेव श्रीमद् राजेन्द्रसूरिजी की आरती का लाभ बाबुलालजी कटारिया संघवी दिल्ली, युगप्रभावकाचार्य श्रीमद् विजय जयन्त सेनसूरिजी की आरती का लाभ राजेन्द्रजी दंगवाड़ा-बड़नगर, श्री गौतम स्वामी की अखंड ज्योति का लाभ भरतपुर के सतीशजी अशोकजी जैन, दादा गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरिजी की अखंड ज्योति का लाभ सुरेश कुमार पुखराजजी रांका भीनमाल व युगप्रभावकाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरिजी की अखंड ज्योति का लाभ श्रीमती गीतादेवी कांतिलालजी डामराणी दिल्ली वालों ने लिया।

* **नेनावा।** मुनिराज श्री चारित्र रत्नविजयजी महाराज का पदार्पण हुआ। मुनिराज श्री की पावन निश्रा में श्री श्रेयांसनाथ भगवान के जिनालय में और गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी महाराजा के गुरु मंदिर में त्रिस्तुतिक जैन संघ नेनावा द्वारा अठ्ठारह अभिषेक का आयोजन हुआ। संगीत के सुरों के साथ अठ्ठारह अभिषेक विधीकारक एवं सुप्रसिद्ध संगीतकार कुणालभाई सुराणी ने सम्पन्न करवाये। पाटण में पंचासरा जिनालय के समीप स्थित त्रिस्तुतिक जैन उपाश्रय में बिराजमान मुनिराज श्री चारित्र रत्नविजयजी महाराज आदि ठाणा एवं पालीताणा से विहार करते पधारे मुनिराज श्री चंद्रयश विजयजी महाराज आदि ठाणा का मिलन हुआ इस प्रसंग पर मुनि भगवंतों के बीच संघ समुदाय के विभिन्न विषय पर चर्चा हुई। मुनिराज श्री चंद्रयश विजयजी महाराज ने पाटण में मुनि भगवंतों के चल रहे अध्ययन पर प्रसन्नता व्यक्त की।

* **पाटण।** मुनिराज श्री चारित्ररत्न विजयजी महाराज ऊंझा नगर में आयोजित गुरु मूर्ति की प्रतिष्ठा महोत्सव में पधारे। वहाँ से सांचौर एवं डीसा नगर में आयोजित प्रतिष्ठा महोत्सव के लिए विहार प्रारंभ हुआ। सुलतान पार्श्वनाथ, सिद्धपुर, रजोहरण,

पालनपुर, पार्श्वगंगा, शंखेश्वर दर्शन । राज राजेन्द्र जयन्तसेन विहार धाम, शाम महाविदेह धाम झेरड़ा, रमुण, धानेरा, विछिंवाड़ी, नेनावा, पलादर, सांचौर पहुंचे। सांचौर नगर में विश्वपूज्य अभिधान राजेन्द्र कोष निर्माता गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी महाराजा की गुरुमूर्ति की प्रतिष्ठा में सान्निध्य प्रदान किया वहाँ से डीसा पालनपुर हाईवे पर निर्मित शंखेश्वर दर्शन (राज राजेन्द्र जयन्तसेन विहार धाम) में अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव में निश्रा प्रदान की।

* **धानेरा।** नगर में मुनिराज श्री चारित्र रत्नविजयजी महाराज का पावन पदार्पण हुआ। आपने जिनालय और गुरु मंदिर के दर्शन वंदन कर वहां पर जिर्णोद्धार हो रहे शान्तिनाथ भगवान के जिनालय का अवलोकन किया।

* **बेंगलुरू।** यहाँ एवेन्यु रोड़ स्थित श्री मुनिसुव्रतस्वामी-राजेन्द्रसूरि जिन मंदिर की 25 वीं वर्षगांठ रजत जयंती का रत्नत्रयी त्रिदिवसीय महोत्सव गाजे-बाजे के साथ भव्य कलश एवं शोभायात्रा के साथ शुरू हुआ। श्री मुनिसुव्रतस्वामी - राजेन्द्र जैन श्वेतांबर टेंपल ट्रस्ट के तत्वावधान में आचार्यश्री देवेन्द्रसागर सूरीश्वरजी व साध्वीश्री सूर्योदयाश्रीजी की निश्रा में हुए इस कार्यक्रम में आचार्यश्री ने मंगलाचरण किया। इसके बाद अपने-अपने प्रवचन में उन्होंने कहा कि मनुष्य जीवन, जिनशासन और परमात्मा का सान्निध्य महान पुण्य से मिलता है। उन्होंने कहा कि हमें अपने अगले भव अर्थात मोक्ष के लिए परमात्मा की भक्ति शुद्धभाव से करनी चाहिए।

मुनिश्री महापद्मसागरजी ने दान, शील, तप और भाव की व्याख्या की। उन्होंने दानधर्म में सुपात्र एवं वस्त्र का दान की महत्ता पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए मय प्रसंग से कहा कि विवेक एवं आदरपूर्वक किया गया दान ही पुनवानी प्रदान करता है। इससे पूर्व ओ.सी. जैन ने स्वागत भाषण दिया। संघ-ट्रस्ट की विविध गतिविधियों पर अध्यक्ष भंवरलाल कटारिया ने अपने विचार व्यक्त किए। कटारिया ने मंदिर में वर्षपर्यंत होने वाले अनेक धार्मिक आयोजनों की भी जानकारी दी। कार्यक्रम का संचालन भंवरलाल भंडारी ने किया। दोपहर में श्री पार्श्वनाथ पंचकल्याणक पूजा तथा शाम को परमात्मा की लाखेंनी अंगरचना एवं भक्ति भावना की प्रस्तुतियां दी गईं। श्री चौपड़ा ने बताया कि आयोजन के समापन दिवस पर 7 फरवरी को प्रातः 7.30 बजे अट्ठारह अभिषेक, 9 बजे से सत्तरभेदी पूजा एवं 10 बजे 25

वां ध्वजारोहण कार्यक्रम हुआ। मंदिर ट्रस्ट के पदाधिकारियों ने पुण्यार्जन के इस कार्यक्रम में अधिकाधिक संख्या में श्रद्धालुओं से भाग लेने की अपील की है। उन्होंने बताया कि तीनों दिन शाम को बेंगलुरू के सुप्रसिद्ध मंडलों द्वारा भक्तिमय प्रस्तुतियां दी गईं। सभी का आभार भंवरलाल कटारिया ने जताया।

* **विजयवाड़ा।** मुनिराज श्री संयमरत्नविजयजी, मुनि श्री भुवनरत्न विजयजी के शुभाशीर्वाद से श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वेताम्बर

ट्रस्ट, विजयवाड़ा के उपाध्यक्ष अशोकजी सोलंकी की सुपुत्री दक्षिता सोलंकी ने सी.ए. फाउंडेशन की उच्च स्तरीय परीक्षा में 400 में से 319 अंक प्राप्त कर पूरे भारत में 45 वीं रैंक प्राप्त की है। दक्षिता सोलंकी ने इसका श्रेय मुनिद्वयश्री के आशीर्वाद के संग माता-पिता का अटूट सहयोग और गुरुकुल (सी.ए.) महाविद्यालय, बांदर रोड़, विजयवाड़ा को दिया है। दक्षिता के अनुपम अथक परिश्रम पर संघ-समाज व परिवार के सदस्यों ने बधाइयाँ व अग्रिम शुभकामनाएँ प्रेषित की हैं।

* **भरतपुर।** में जीर्णोद्धारित 520 वर्ष प्राचीन श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनालय की प्रतिष्ठा में भाग लेने हेतु व गुरु राजेन्द्रसूरिजी के प्रभाव से प्रभावित होकर फिलीपिंस से 'रिजालिम शांति' का भरतपुर में आगमन हुआ। प्रतिष्ठा प्रसंग पर परमात्मा की आरती का लाभ लिया। प्रतिष्ठा निश्रा प्रदाता मुनि श्री संयम रत्नविजयजी, मुनि श्री भुवनरत्नविजयजी के सान्निध्य में रहकर 'रिजालिम शांति' ने आध्यात्मिक सूत्रों का अध्ययन कर विविध प्रकार की ध्यान पद्धतियों को सीखा। यहाँ की आध्यात्मिक व धार्मिक शैली को देखकर प्रवासी गुरु भक्त ने अपनी प्रसन्नता प्रकट की। श्री राजेन्द्रसूरि जैन कीर्ति मंदिर तीर्थ में नवकार व गुरु मंत्र का जाप करके देव-गुरु की आरती कर आनंद प्राप्त किया।

* श्री विद्वदगुणा श्रीजी म. साहब एवं साध्वी श्री रश्मीप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा-2 मन्दसौर में धार्मिक आयोजन सम्पन्न कर वहाँ से विहार कर दलोदा पधारे थे। वहाँ से जावरा होते हुए श्री मोहनखेड़ा तीर्थ म्युजियम पहुँचे।

* लोकसंत श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरिजी के सुशिष्य मुनिराज श्री संयमरत्नविजयजी, मुनि श्री भुवन

रत्नविजयजी ने राजस्थान के भरतपुर नगर में त्रिदिवसीय महोत्सव सहित भव्यातिभव्य प्रतिष्ठा सम्पन्न करवाकर मंगलवार को श्री राजेन्द्रसूरि जैन कीर्ति मंदिर तीर्थ से जयपुर की ओर विहार किया। इस मौके पर फिलीपिंस की रिजालिम शांति ने भी पैदल विहार कर जैन संत की विहारचर्या का अनुभव प्राप्त किया।

* **मुम्बई।** के भयंदर में 31 जनवरी को अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद द्वारा तीन दिवसीय धार्मिक कन्या शिविर का आयोजन साध्वीश्री मयूर कलाश्रीजी म.सा. की सुशिष्या साध्वीश्री रिद्धि निधी श्रीजी म.सा. की निश्रा में रखा गया। शिविर का शुभारंभ अतिथिगण द्वारा प्रभु श्री को पुष्प माला व द्वीप प्रज्वलित कर किया गया। शिविर में करीब 150 कन्याओं ने भाग लिया। शिविर के लाभार्थी थराद श्रीसंघ मुंबई के शाह अलका बेन भरत बाई वाघजीभाई वोरा परिवार व (परिषद के राष्ट्रीय शिक्षामंत्री) हैं।

मेघनगर में ध्वजारोहण

* **मेघनगर।** साध्वी श्री अनेकांतलता श्रीजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में श्री सुमतिनाथ जिनालय मेघनगर की ध्वजारोहण व संगीतकार आशीषजी जावरा वाले द्वारा संगीतमय सत्तर भेदी पूजन का कार्यक्रम विधिकारक हँसमुख भाई गुरुजी द्वारा शुरू हुआ जिसमें लाभार्थी परिवार द्वारा ध्वजा लहराई गई। ध्वजारोहण के पश्चात् साध्वीश्रीजी ने श्रीसंघ के सामने भगवान के पीछे का चाँदी का पुठिया बनवाने की भावना भाई। जाजम पर बिराजमान सदस्यों द्वारा कुछ ही समय में 10 किलो चाँदी लाभार्थियों द्वारा एकत्रित हो गई जिसमें स्थानीय महिला परिषद सहित सभी ने बढ़चढ़ कर लाभ लिया।

वार्षिक अखण्ड दीपक का लाभ सुरेश, राजेश, जे.की. जैन ने लिया। गुरुदेव की आरती व पुण्य सम्राट की आरती वार्षिक आरती के चढ़ावे का लाभ लाभार्थी परिवार द्वारा लिया गया।

कार्यक्रम के पश्चात् श्रीसंघ की ओर से स्वामीवात्सल्य का आयोजन मेघनगर श्रीसंघ की ओर से श्री राजेन्द्रसूरि जैन ज्ञान मन्दिर मेघनगर में रखा गया। ध्वजा के लाभार्थी श्रीमती पुष्पा सुभाषचंद्रजी भण्डारी मनावर (अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन महिला परिषद की राष्ट्रीय मंत्री) ने बताया की कार्यक्रम में श्रेत्रिय

विधायक कान्तीलालजी भूरिया, सुरेश सेठ, श्रीसंघ अध्यक्ष शान्तीलालजी लोढ़ा व सचिव शैलेषजी भंडारी व मध्यप्रदेश महिला परिषद् की मीडिया प्रभारी सीमा बोहरा व थांदला, झालोद, मनावर, रम्भापुर आदि सहित मेघनगर श्रीसंघ के सदस्य उपस्थित थे।

समस्त जैन समुदाय के साधु-साध्वी भगवंतों की वैयावच्च

...दिव्याशीष...

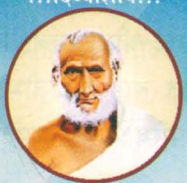

प्रातः स्मरणीय
दादा गुरुदेव
श्रीमद् विजय
राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

...दिव्याशीष...

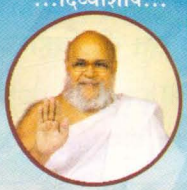

पुण्यसम्राट, युगप्रभावक
श्रीमद् विजय
जयन्तसेन
सूरीश्वरजी म.सा.

अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन तरुण परिषद्

किसी भी साधु-साध्वी भगवंत को किसी भी उपकरण की जरूरत हो, तो **मधुकर सुपात्रदानम्** के माध्यम से **तरूण परिषद** द्वारा वे उपकरण साधु-साध्वी भगवंत तक पहुंचाए जाएंगे। अपने आसपास के उपाश्रय में विराजित साधु-साध्वी भगवंतों से कोई खप हो तो पूछकर नीचे दिए गए नंबर पर कॉल करे।

... संपर्क ...

नमन छजलानी	–	+	9182259 84849
अभिषेक सकलेचा	–	+	91 89825 97713
तत्त्वार्थ मोरखीया	–	+	91 90993 22188

*पेपराल। पेपराल तीर्थ से विहार कर धर्म दिवाकर, गच्छाधिपति श्रीमद् विजय नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा का बुधवार को सामैया सह संघ के साथ धानेरा नगर में भव्य मंगल प्रवेश हुआ। 10.30 बजे श्री शांतिनाथ प्रभु दर्शन एवं निर्माणाधीन जिनालय का अवलोकन और मार्गदर्शन सुबह 11.00 बजे श्री राजेन्द्रसूरि आराधना भवन में प्रवेश और मांगलिक प्रवचन हुआ ।

*उज्जैन। सूरि जैन ज्ञान मन्दिर नयापुरा में दि. 13 फरवरी को सुबह 9 बजे स्नात्र पूजन व सत्तरभेदी पूजा 10 बजे शोभायात्रा बाद में 11 बजे पुण्य सम्राट के वर्तमानद्वय पट्टधर की आज्ञानुवर्ती साध्वीश्री अमृतरसाश्रीजी आदि ठाणा 3 की निश्रा में ध्वजा के आजीवन लाभार्थी मोतीलालजी सुशील कुमारजी, कपिलजी व नवीनजी गिरीया परिवार उज्जैन द्वारा ध्वजारोहण कार्यक्रम सम्पन्न हुआ ।

– ब्रजेश वोहरा

* श्री सीमंधर स्वामी राजेन्द्रसूरी जैन श्वेताम्बर मंदिर का 25 वां ध्वजारोहण महोत्सव प्रातः 8 बजे श्री शा. मिश्रीमलजी उकाजी सालेचा परिवार, संघ सदस्यों सहित ध्वजा का प्रवेश, मंगल गीत गाती महिलाएँ मंदिर से लेकर आयीं । प.पू. साध्वीजी श्री सूर्योदयाश्रीजी म.सा., प.पू. कैलाश श्रीजी म.सा. आदि ठाणा 3 की निश्रा में सत्तर भेदी पूजा, संगीतकार सुनीलभाई एण्ड पार्टी द्वारा पढ़ाई गई। राजेन्द्रसूरी संगीत महिला मंडल, राजेन्द्रसूरी धार्मिक पाठशाला के बालक –बालिकाओं द्वारा जल, चंदन, पुष्प, वासचूर्ण, वस्त्रयुगल, अष्टमंगल आदि विविध नैवेद्य फल द्वारा प्रभु को अर्पण किया गया। सुरेश गुरुजी व मांगीलाल वेदमुथा द्वारा दिक्पाल पूजन, शिखर, दंड कलश आदि पर पंचामृत अभिषेक कर अष्ट प्रकारी पूजा के साथ ध्वजा... ॐ पुण्याहं पुण्याहं...प्रियन्तां... प्रियन्तां... मंत्राक्षरों के ध्वनी संगीत द्वारा ध्वजा रोहण किया गया।

* डीसा। गच्छाधिपति श्री नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा के आज दर्शन वंदन करने जावरा श्रीसंघ से इन्दरमलजी दसेड़ा साफावाला सहपरिवार व परिषद के राष्ट्रीय प्रचारमंत्री ब्रजेश बोहरा डीसा हायवे पर पहुंचे।

कल दि. 8 फरवरी को प्रातः 9 बजे श्री नेमीनाथ सोसायटी गुरुमंदिर डीसा नगर में भव्य मंगल प्रवेश हुआ। 9 फरवरी को डीसा शहर से श्री राज राजेन्द्र जयन्तसेन विहार धाम डीसा में प्रतिष्ठा कार्यक्रम हेतु भव्य प्रवेश होगा। विहार आगामी आयोजन शंखेश्वर दर्शन श्री राज राजेन्द्र जयन्तसेन विहार धाम

डीसा (उ.गु.) में प्रतिष्ठा अंजनशलाका दि. 13 फरवरी गुरुवार नेनावा नगरे भव्य गुरु प्रतिष्ठोत्सव दि. 26 फरवरी बुधवार को होगी।

विश्व शांति व मानव कल्याण हेतु सिद्धचक्र सह शांति स्नात्र पूजा महोत्सव सम्पन्न

मंदसौर। विश्वशांति तथा मानव कल्याण के उद्देश्य से भगवान श्री अजीतनाथ जन्म व दीक्षा कल्याणक के अवसर पर शाश्वत श्री सिद्धचक्र महापूजा सह शांतिस्नात्र पूजा सम्पन्न हुई।

अजीतनाथ जैन मंदिर में गच्छाधिपति श्री नित्यसेन सूरीश्वरजी म. की आज्ञानुवर्तिनी साध्वीजीश्री विद्वद गुणाश्रीजी महा. एवं श्री रश्मिप्रभाश्रीजी म. की निश्रा में आयोजित त्रिदिवसीय जिनेन्द्र भक्ति महोत्सव के प्रथम दिन कुम्भ स्थापना के साथ कार्यक्रम का आगाज हुआ। शक्रस्तव के साथ जन्म कल्याणक मनाया गया। नवग्रह दशदिकपाल तथा अष्टमंगल सूत्र से देव व ग्रह के साथ मांगल्य की शुरुआत हुई।

द्वितीय दिवस विश्व शांति हेतु श्रीसंघ के 27 लाभार्थी परिवारों की ओर से शांति स्नात्र पूजन का आयोजन सम्पन्न हुआ। इन्द्र इंद्राणी बने श्रावक-श्राविकाओं ने भगवान शांतिनाथ का पंचगव्य, गंगा जल से अभिषेक कर अष्टप्रकारी पूजा सम्पन्न की तथा जीवदया के लिए नागरिकों ने सहयोग प्रदान किया। शांति कलश का लाभ अशोक कुमार नन्दुभाई कर्नावट, 108 दीवों की आरती श्री विजय सुराणा तथा मंगल दीपक का लाभ श्री विपीन देवेन्द्र कुमार चपरोत ने लिया। स्वधर्मी वात्सल्य भी हुआ। सोमवार को महोत्सव का समापन शाश्वत श्री सिद्धचक्र महापूजन से हुआ।

लाभार्थी श्री राजमल कन्हैयालाल लोढ़ा परिवार के श्री पारसमल, सुमतिलाल, सुरेन्द्रकुमार लोढ़ा ने सिद्धचक्र महायंत्र पर नवपद पूजा के पश्चात् भूमि शुद्धि, नवग्रह आह्वान, दस दिशाओं की स्तुति, नवनिधि पूजन के साथ यक्ष-यक्षिणी व सोलह सतियों का आह्वान किया। शांति कलश के साथ गृह शांति की कामना की गई। विधिकारक श्री अनिल हरण लिमड़ी ने विधान सम्पन्न करवाया। विशाल नाहर व अजित लोढ़ा, बबलू भाई एण्ड पार्टी ने आर्केस्ट्रा के साथ गीत-संगीत की प्रस्तुति दी।

परिषद प्रांगण से

परिषद की नवीन कार्यकारिणी का गठन

खाचरौद। नवयुवक परिषद शाखा खाचरौद के नवीन पदाधिकारियों का चयन साध्वी श्री अमित दृष्टाश्रीजी म. व साध्वीश्री अनेकांतलताश्रीजी म. की निश्रा में किया गया। परिषद के प्रदेश अध्यक्ष हेतु राजेन्द्र मोदी का नाम सर्वानुमति से रखा गया। नवीन पदाधिकारियों में सचिव पंकज बुरड़ कोषाध्यक्ष, संदीप मांडोत के नाम की घोषणा की। साध्वी श्री अमितदृष्टाश्रीजी म.सा. ने अपने प्रवचन में परिषद् के मुख्य उद्देश्य समाज संगठन पर जोर देते हुए कहा की यदि आपका संगठन मजबूत है तो परिषद् के बाकी तीन उपदेश समाज सुधार, धार्मिक शिक्षा व आर्थिक विकास अपने आप पूर्ण हो जाते हैं। साध्वीश्री अनेकांत लताश्रीजी म.सा. ने अपने प्रवचन में कहा कि जिस प्रकार हनुमान की अपने राम के प्रति आस्था थी उसी प्रकार परिषद के सभी सदस्यों की अपने गुरु पुण्य सम्राट के प्रति आस्था व समर्पण होना चाहिए। कार्यक्रम का संचालन डीसी नान्देचा ने किया व आभार अनिल वागरेचा ने माना।

राजेन्द्र मोदी

पंकज बुरड़

संदीप मांडोत

राजगढ़। अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक महिला व तरुण परिषद परिवार द्वारा प.पू. पुण्य सम्राट आचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा. के 67 वें संयम दिवस के उपलक्ष्य में विशाल निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर का आयोजन श्री राजेन्द्र भवन राजगढ़ में किया गया। शिविर का शुभारंभ परम पूज्य दादा गुरुदेव श्री एवं पुण्य सम्राट श्री के चित्र के सम्मुख दीप प्रज्ज्वलन एवं माल्यार्पण परिषद पूर्व शाखा अध्यक्ष श्री कांतिलाल जैन बीमा वाला एवं अध्यक्ष श्री मांगीलाल मामा द्वारा किया गया। शिविर में

203 मरीजों की आंखों की जांच की गई, जिसमें 22 मरीजों को मोतियाबिंद पाए जाने पर दाहोद ले जाया गया। जहां पर निःशुल्क ऑपरेशन किया जाएगा।

यह शिविर दृष्टि नेत्रालय दाहोद के सहयोग से आयोजित किया गया। जिसमें जापानी मशीन द्वारा मरीजों की आंखों की जांच एवं विभिन्न बीमारियों की जांच पर निःशुल्क दवाई वितरित की गई। शिविर में नवयुवक, तरुण एवं महिला परिषद सदस्यों ने सेवा प्रदान की। - कीर्ति भंडारी

* **बदनावर।** यहां श्री राज राजेन्द्र सूरि शताब्दी जैन पब्लिक हायर सेकेण्डरी स्कूल बदनावर संचालित है, जिसमें वार्षिक उत्सव प्रोग्राम आयोजित किया गया। संस्था अध्यक्ष वीरेन्द्र राठौर, सचिव राहुल डोसी, कोषाध्यक्ष महावीर चोरडिया, ट्रस्टी शांतिलालजी गोखरू व अतिथिगण, पत्रकारगण, पेरेंट्स उपस्थित थे। बच्चों द्वारा शानदार रंगारंग देशभक्ति की प्रस्तुतियां दी गई।

* **रानापुर।** पुण्य सम्राट आचार्यश्री जयंतसेन सूरीश्वरजी के 67 वें संयम दिवस के अवसर पर नवयुवक परिषद श्री मुनिसुव्रत जिनालय रानापुर द्वारा सामूहिक सामायिक का आयोजन किया। साथ ही शाम को श्री राज राजेन्द्र गोपाल गौशाला में लाभार्थी मोतीलाल सालेचा की ओर से गायों को गौग्रास एवं हरी सब्जियां खिलाई गई। परिषद द्वारा रोपे गए पौधों को पानी पिलाया गया।

जयपुर फुट का निःशुल्क वितरण

* **इंदौर।** दया, प्रेम, करुणा, वात्सल्यता हम जैनों की पहचान है। हमें जो भी मिला उसे सद्कार्य में लगाना यही अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन महिला परिषद गुमास्ता नगर इंदौर का मुख्य उद्देश्य है। इसी को गति देते हुए श्री महावीर विकलांग सहायता समिति इंदौर (अरिहंत हॉस्पिटल) प्रमुख श्री अशोकजी दाबले ने जयपुर फुट के बारे में विस्तृत जानकारी दी। परिषद परिवार ने इस समिति का तहे दिल से आभार व्यक्त किया। साध्वी श्री अविचलदृष्टा श्रीजी एवं साध्वीश्री अमित दृष्टाश्रीजी के सान्निध्य में अरिहंत हॉस्पिटल में महिला परिषद गुमास्ता नगर के बैनर तले हुए इस कार्यक्रम में स्मिता भंडारी ने संचालन करते हुए सर्वप्रथम मंगलाचरण के लिए जयाजी भंडारी को आमंत्रित किया उसके पश्चात् निःशुल्क कृत्रिम पैर कैलिपर्स (जयपुर फुट),

भोजन एवं नवीन वस्त्र प्रदान कर मानव सेवा जैसे पुण्य संकल्प को सार्थक किया। यह आयाम सचिव संगीताजी सेठिया, प्रांतीय मंत्री सुषमाजी सुराणा, वीणाजी मेहता व पूर्वी क्षेत्र अध्यक्ष प्रियाजी पंवार एवं परिषद की 45 मेम्बर की मुख्य साक्षी में सम्पन्न कराया गया। पाठशाला समिति मंत्री श्रीमती विजयाजी मोदी परिवार ने ज्योतिजी जैन, सोनाली जैन, सुलेखा बोहरा, स्मिता भंडारी, समता कटकानी, निधि कोलन, नीता जैन, विनीता तिलगोदा एवं पुरी टीम के साथ मुख्य लाभार्थी बनकर अपनी सदराशि का सदुपयोग किया। आभार परिषद अध्यक्ष श्रीमती विनीताजी बांठिया ने व्यक्त किया एवं उक्त जानकारी वेयावच्च मंत्री सुधर्माजी बम ने दी।

प्रीतिदर्शनाश्रीजी म.सा. के संयोजन में आयोजित 'प्रभु से प्रीत मोह से जीत' पुस्तक के आधार पर प्रसारित प्रश्नावली के लिए घोषित पुरस्कार सूची निम्नानुसार है

प्रथम पुरस्कार – **1.** मीनाबेन रमेशभाई वोरा (सूरत) 146/150, **2.** दीपमालाबेन पंकजी जैन (उज्जैन) 143, **3.** आदित्य शरदकुमार धोका (धार) 141, **4.** विनीताबेन सुनीलजी बांठिया (इंदौर) 141, **5.** श्रीमती देवकुंवरजी कोठारी (धार) 141, **6.** पलकबेन धर्मेन्द्रजी जैन (भीवाड़ी) 141, **7.** पुष्पाबेन विजेन्द्रजी नागोरी (नीमच) 141।

द्वितीय पुरस्कार – **1.** आशाबेन सुभाषचन्द्रजी लोढ़ा (उज्जैन) 139, **2.** कुसुमबेन गिरिया (उज्जैन) 138, **3.** सुनिताबेन जिनेन्द्रजी विराणी (नीमच) 138, **4.** सरोजबेन गिरिया (बड़नगर) 138, **5.** भारतीबेन बोहरा (मुंशीदाबाद W.B) 138, **6.** प्रमिलाबेन प्रांजलि जैन (इंदौर) 137, **7.** विमलाबेन नरेन्द्रजी कोठारी (नीमच) 137, **8.** विजयाबेन हीरालालजी चण्डालिया (बड़नगर) 137, **9.** जयाबेन संजयजी भण्डारी (इंदौर) 137, **10.** डॉ. अंगूरबाला बेन सेठिया (निम्बाहेड़ा) 137, **11.** शकुन्तला बेन रतनलालजी जैन (इंदौर) 137, **12.** संजु गोलेछा (होराह W.B) 137।

तृतीय पुरस्कार – **1.** नेहाबेन जैन (दिल्ली) 136, **2.** आकाशभाई जैन (नेल्लोर) 136, **3.** सुरेखाबेन हसमुखजी जैन (पूना) 136, **4.** नीतूबेन महेन्द्रजी जोगानी (मुंबई) 136, **5.** साक्षीबेन सेठिया (निम्बाहेड़ा) 136, **6.** शीतलबेन गेलड़ा (नागदा) 136, **7.** सीमाबेन जेठमलजी मेहता (भीनमाल) 136, **8.** कीर्तिबेन संघवी (चैन्नई) 136, **9.** उषाबेन प्रकाशजी जैन (रतलाम) 136, **10.** इंद्राबेन गौतमचन्दजी लोढ़ा (आशीफाबाद) 136, **11.** श्रीमती सरोजबेन भावनीया (धार) 136, **12.** ममताबेन प्रवीणजी मेहता (वार्शी सोलापुर) 136, **13.** रानीबेन सचिनजी श्रीश्रीमाल (धार) 136।

प्रोत्साहन – **1.** रोमीबेन प्रियंकेशजी जैन (कुक्षी), **2.** दिप्तीजी पियुषजी सेठ

(आबुदाबी दुबई), 3. विमलाबेन दिनेशभाई शाह (मुंबई), 4. सुमित्राबेन आलीजार (हैदाराबाद), 5. सुरभि जैन (भवानी मण्डी), 6. विमलादेवी (बैंगलोर), 7. सौ. अनिता किरण बोथरा (अहमदाबाद), 8. सुशीला इंदरचंदजी रांका (जलगाँव), 9. ज्ञानचन्द गोखरू (धार), 10. बरखा जैन (अजमेर), 11. उषा नरेन्द्रकुमारजी लोढ़ा (नीमच), 12. संगीताबेन मोरखीया (मुंबई), 13. श्रीमती सरोज गोलेछा (राजनाद गांव), 14. मनीषा जैन (विजयवाड़ा), 15. गीताबेन दीनेशभाई शाह (अहमदाबाद), 16. श्रीमती स्नेहलता शांतिलालजी डूंगरवाल (इंदौर), 17. नवनीता कोचर (इंदौर), 18. श्रीमती ज्योति प्रमोदकुमार बोराणा (रतलाम), 19. पायल आशीष कोठारी (पारा), 20. हर्षाबेन कांतिलाल दोशी (जलगाँव), 21. मंजु चपलोत यशवंत चपलोत (निम्बाहेड़ा), 22. पूर्वी नवीनचन्द्रजी वागरेचा (खवासा), 23. श्रीमती स्वीटी आशीषकुमार जैन (राजगढ़), 24. प्रीति कोकिल जैन (अलीराजपुर), 25. वंदना प्रकाशचंद्र लोढ़ा (बदनावर), 26. श्रीमती सोनाली दिलीपजी जैन (कुक्षी), 27. नीरूबेन हसमुँख शाह (वडोदरा), 28. रेखा ज्योति मरचन (मुंबई), 29. राखी जैन (जम्मू कश्मीर), 30. पुष्पा भण्डावत (अजमेर), 31. श्रीमती सुधर्माजैन बंम (इंदौर), 32. स्नेहल नंदलालजी बाफना (निकाड) 33. मनीषा राकेशजी (तिरची), 34. श्रीमती सुधा जैन (आगरा), 35. आशा जैन (आगरा), 36. रिन्कु मुकेशकुमार बंदामुथा (हैदराबाद), 37. निकिता दिनेशजी सकलेचा (बैंगलोर), 38. हीना अजीतजी मारू (दुम्बीवली), 39. नीलम एस. जैन (बैंगलोर), 40. सौ. ज्योति राजेन्द्र मुनोत (सोलापुर) 41. सौ. किरण दीपकजी वेदमुथा (धुलिया), 42. दिप्ती मनोजजी गादीया (अहमदनगर), 43. तृप्ती अमितजी ललवानी (बारामती), 44. माया अलीजार (सिंकदराबाद), 45. आरती दीपक कटारिया (अहमदनगर), 46. चन्द्रिका रमेशभाई संघवी (सूरत), 47. श्रीमती रजनी जैन (आगरा), 48. जयन्त चेडा (थाने), 49. संगीता नेमीचंदजी जैन (बैंगलोर), 50. कुमकुम जैन (आगरा), 51. रेखा राजेश परमार बारसी(सोलपुर), 52. कल्पना किशोर शाह (मुंबई), 53. ज्योति भूपेन्द्रशाह (गौरेगांव), 54. प्रभादेवी पारख (निम्बाहेड़ा), 55. मयुरी अमितजी जवेरी (मुंबई), 56. भानुबेन एम. शाह (मुंबई), 57. भारतीबेन रमेशकुमार मेहता (मुंबई), 58. रचना सुराणा (नागपुर), 59. श्रीमती शांताबाई जैन (छीयाबड़ा), 60. विमला पूलिया (इंदौर), 61. गाया मुकेशजी वर्धन (खाचरौद), 62. श्रीमती किंजल अश्विनजी जैन (कुक्षी), 63. पुखराज जैन बोहरा (नागदा जं.), 64. श्रीमती तृप्ति राहुल जैन (कुक्षी), 65. अलका गोलेच्छा (भवानी मण्डी), 66. अंगूरबाला शैलेष सेठिया (खाचरौद), 67. तृप्ति हरिशभाई जैन (मुंबई), 68. श्रीमती कुसुम बोराणा (रतलाम), 69. श्रीमती प्रमीला जैन (दिल्ली), 70. श्रीमती मंजु उत्तमजी भण्डारी (विजयवाड़ा), 71. राजेन्द्र कुमारजी उत्तमचंदजी जैन (हैदराबाद), 72. श्रीमती प्रीति भावेशजी मुथा (धुलिया), 73. आरती राजेन्द्रजी मुथा (अमरावती), 74. सौ. संगीता हंसराजजी ललवानी, 75. अंजना जैन (दिल्ली), 76. सुनीता अनिलजी गुगलिया (मुंबई), 77. ललिताबेन एच.शाह (अहमदाबाद), 78.

वर्षाबेन विपिनभाई डोशी (मुंबई), 79. रेखा कीर्तिकुमार पारेख (राजकोट), 80. बीना संदीप मांडोत (खाचरौद), 81. मीना जशवंत दोशी (सैलाना), 82. दिलीपकुमार जैन (उज्जैन), 83. भारती चंद्रकान्त दोशी (मुंबई), 84. मीना राजेश कुमारजी (विजयवाड़ा), 85. रानी जैन (आगरा), 86. सुनीता जैन (आगरा)।

शोक समाचार

अलीराजपुर। स्व. महेन्द्रकुमार मन्नालालजी जैन के मरणोपरान्त नैत्रदान किया गया। आप अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के सक्रीय सदस्य एवं परिषद के कोई भी कार्य में समर्पण भाव से सक्रीयता निभाते थे। आप अरिहन्त शरण हो गये।

जोबट। स्व. धर्मीचन्दजी चौरडिया का 22/1/2020 को अरिहन्त शरणम् हो गया। बाद में परिवार द्वारा नेत्रदान करवाया गया। धर्मीचन्दजी का नेत्रदान कर सराहनीय कदम परिवार द्वारा उठाया गया। जैन समाज की ओर से परिवार की खूब-खूब अनुमोदना ।

मृत आत्माओं को शाश्वत धर्म की ओर से हार्दिक श्रद्धांजली।

श्री मोहनखेड़ा तीर्थ। वर्तमान आचार्य गच्छाधिपति श्रीमद् विजय नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. ने अखिल भारतीय राजेन्द्र जैन महिला परिषद के प्रांतीय अध्यक्ष पद पर श्रीमती निशा देवेन्द्र वनवट को उत्तरदायित्व सौंपा। केन्द्रीय एवं प्रादेशिक पदाधिकारियों की शपथ विधि समारोह मोहनखेड़ा स्थित जयंतसेन म्यूजियम में हुई जिसमें केन्द्रीय अध्यक्ष श्रीमती आशाजी कटारिया झाबुआ व अन्य केन्द्रीय पदाधिकारियों की शपथ विधि के साथ-साथ मध्यप्रदेश महिला इकाई की शपथ विधि मोहनखेड़ा स्थित जयंतसेन म्यूजियम में हुई। शपथ अधिकारी राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेशजी धरू ने सभी पदाधिकारियों को संकल्प दिलाया। इस अवसर पर नवयुवक परिषद के प्रांतीय अध्यक्ष श्री राजेन्द्रजी दंगवाडा वाला , राष्ट्रीय महामंत्री सुधीरजी लोढ़ा, रमेशजी नडियाद, श्री मनोहरलालजी पुराणिक आदि नवयुवक परिषद के पदाधिकारी उपस्थित थे। इस अवसर पर साध्वी श्री पुण्य दर्शनाश्रीजी, साध्वी श्री दर्शितकलाश्रीजी, साध्वी श्री अमृतारसाश्रीजी, साध्वी श्री अनेकांलताश्रीजी ने सान्निध्य प्रदान किया। साध्वी श्री अमृतरसाजी म. साहब ने अपने आशीर्वचन परिषद पदाधिकारियों को दिए। संरक्षक श्रीमती कोकिलाजी भारतीय ने भी बधाई प्रेषित की। खाचरौद नवयुवक परिषद के पदाधिकारियों ने भी बधाई दी।

मोहनखेड़ा तीर्थ में परम पूज्य धर्म दिवाकर गच्छाधिपति आचार्य देवेश श्रीमद् विजय नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञा एवं आशीर्वाद से तरुण मिलन में आदित्य शरदजी धोका, धार को अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन तरुण परिषद् का वरिष्ठ राष्ट्रीय उपाध्यक्ष मनोनीत किया गया।

अध्ययन करने से ज्ञानवान बनते हैं-पोरवाल

महिदपुर। आज के नोनिहाल कल समाज के भविष्य हैं। पढ़ने व रटने से सम्पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति नहीं होती है। अर्थ सहित भावार्थ को समझकर अध्ययन कर ज्ञान प्राप्त करके हमें ज्ञानवान बनना है। ज्ञानार्जन कर समाज को गौरवान्वित करना है।

उक्त विचार अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन महिला परिषद की राष्ट्रीय शिक्षा मंत्री श्रीमती संगीता पोरवाल ने रविवार को राजेन्द्रसूरी ज्ञान मंदिर में यतीन्द्र जैन ज्ञान पीठ व श्रुत ज्ञानार्जन योजना पर विस्तृत रूप से प्रकाश डालते हुए श्री राजेन्द्र महिला मण्डल के सदस्यों व विश्वतारक श्री राजेन्द्रसूरि पाठशाला के बच्चों को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किये।

महिला परिषद की प्रांतीय शिक्षा मंत्री आभा दुग्गड़ ने विद्यार्थियों से अधिकाधिक संख्या में जुड़कर ज्ञानार्जन करने का आह्वान किया।

परिषद के मार्गदर्शक माणकलाल छाजेड़ ने कहा कि गुरुदेव श्री यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. ने 60 वर्ष पूर्व परिषद की स्थापना की तथा राष्ट्रसंत श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. ने परिषद को वटवृक्ष का रूप प्रदान किया है।

आज देशभर में नवयुवक, महिला, तरुण व बहुपरिषद की सैकड़ों शाखाओं के माध्यम से हजारों सदस्य समाज सेवा के कार्यों में जुटे हुए हैं।

इस अवसर पर यतीन्द्र जैन ज्ञानपीठ की स्थापना की गई जिसमें तीन सदस्यों को संचालक मण्डल में मनोनीत किया गया। संगीता मोदी को केन्द्राध्यक्ष बनाया गया व आरती बांठिया व अभय धाड़ीवाल को संचालक मण्डल में लिया गया।

महिला परिषद की प्रदेश महामंत्री पुष्पा कोचर, महिला परिषद मंदसौर की अध्यक्ष सुनीता खाबिया, नवयुवक परिषद के प्रांतीय पर्यावरण मंत्री विनोद पोरवाल, राष्ट्रीय कार्यसमिति सदस्य नरेन्द्र धाड़ीवाल, शाखा अध्यक्ष श्रेणिक सकलेचा आदि विशेष रूप से उपस्थित थे। अतिथियों का स्वागत महिला मण्डल की ओर से किया गया।

संचालन संगीता मोदी व आभार आरती बांठिया ने व्यक्त किया।

श्री संघ सौरभ

श्री वासुपूज्य स्वामी जिनालय की 15 वीं वर्षगांठ पर ध्वजारोहण

* **मदुरै।** श्री वासुपूज्य स्वामी जिनालय की 15 वीं वर्षगांठ मंगलवार को मदुरै स्थित तिरुपाले अरिहन्त सोसायटी जिनालय परिसर में भक्ति महोत्सव ध्वजारोहण सहित धार्मिक अनुष्ठान के साथ मनाई गई। संघ प्रवक्ता दिनेश सालेचा ने बताया कि श्री अरिहंत सोसायटी जैन संघ मदुरै के तत्वावधान में वासुपूज्य स्वामी जिनालय तिरुपाले की वार्षिक 15 वीं ध्वजारोहण के उपलक्ष्य में सुबह 8.30 बजे सत्तरभेदी पूजा का आयोजन किया गया एवं सुबह 9 बजे से हॉल में मुनिराज भुवन भूषण विजय महाराज द्वारा प्रवचन दिया गया। ध्वजा के महत्व के बारे में बताया व जिनालय के वार्षिक चढ़ावे बोले गए। तत्पश्चात् मातुश्री मणिबेन आर.पी. शाह द्वारा शुभ मुहूर्त्त में मंदिर के मुख्य शिखर पर ध्वजारोहण किया गया।

* **मदुरै।** श्री सुमतिनाथ जैन नया मंदिर ट्रस्ट मदुरै के तत्वावधान में श्री सुमतिनाथ मंदिर की 15 वीं वर्षगांठ मनाई गई। श्री संघ प्रवक्ता दिनेश सालेचा ने बताया कि सुबह लाभार्थी परिवार बाबुलाल कुन्दनमल गुलेच्छा के यहाँ से गाजे-बाजे के साथ मुनिराज भुवन भूषण विजय महाराज के सान्निध्य में ध्वजा का मंदिर परिसर में प्रवेश करवाया। व्यवस्था में श्री जैन युवा मंच महिला मंडल, बालिका मंडल का सहयोग रहा।

* **कुक्षी।** नगर में स्थित जैन मंदिरों में ध्वजा चढ़ाने का कार्यक्रम शुक्रवार को विधि-विधान के साथ किया गया। जैन श्रीसंघ द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम की शुरुआत सुबह गाजे-बाजे के साथ हुई। लाभार्थी परिवारों द्वारा ध्वजा को सिर पर रखकर शोभायात्रा निकाली गई। मीडिया प्रभारी स्वस्तिक जैन ने बताया यात्रा की शुरुआत सीमंधर स्वामी मंदिर से होकर महावीरजी मंदिर, आदेश्वरजी मंदिर व शांतिनाथजी मंदिर में जाकर सम्पन्न हुई। शांतिनाथ मंदिरजी में सामूहिक रूप से चैत्य वंदन किया गया। ध्वजा रोहण की विधि मनोहरलालजी पुराणिक व अपूर्व पुराणिक द्वारा करवाई गई। कुक्षी के चारों जिन मंदिरजी में महिला मंडल एवं बहू मंडल द्वारा पूजा पढ़ाई गई। इस उपलक्ष्य में श्रीसंघ द्वारा साधार्मिक वात्सल्य का आयोजन हुआ।

* **कुक्षी।** नगर में शुक्रवार को विभिन्न आयोजनों के साथ पुण्य

सम्राट श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. का 37 वां पाटोत्सव मनाया गया। नगर में प्रातः से गुरुदेव की प्रतिमा के दर्शन, पूजन के लिये भक्तों की भीड़ मंदिर में लग गई। मीडिया प्रभारी स्वस्तिक जैन ने बताया प्रातः तालनपुरजी तीर्थ में स्नात्र पूजन व प्रभु पार्श्व प्रतिमा की स्थापना की गई। पश्चात् गुरुदेव का अष्टप्रकारी पूजन हुई। साधर्मिक वात्सल्य का आयोजन किया गया। सायंकाल में पुण्य सम्राट की आरती की गई।

* **मेघनगर।** मेरूतेरस के अवसर पर महिला परिषद मेघनगर की सदस्यों द्वारा मेरू बनाकर नगर के मुख्य मार्ग होते हुए ज्ञान मंदिर गुरु देव की आरती करने के पश्चात् मेरू वरघोड़ा श्री शांति सुमितिनाथ मंदिर पहुंचा। मन्दिर में मेरू शिखर चढ़ाने का लाभ श्रीमती कुसुम काठी परिवार ने व प्रभावना का लाभ श्रीमती सीमा भंडारी परिवार ने लिया सभी महिलाओं ने भी मेरू शिखर की पूजा की। इस अवसर पर महिला परिषद सदस्य उपस्थित थे।

* **बड़नगर।** अखिल भारतीय जैन पत्रकार महासंघ के प्रदेश अध्यक्ष संदीप डाकोलिया ने संगठन के जिला अध्यक्ष पद पर बड़नगर के युवा सामाजिक कार्यकर्ता कुशल वक्ता एवं मंच संचालक राजकुमार नाहर (जैन) को मनोनीत किया हैं।

श्रीसंघ अध्यक्ष बाबूलाल तांतेड़ का निधन

जावरा। त्रिस्तुतिक श्रीसंघ जयंतसेनसूरी अनुयायी अध्यक्ष का अल्प बीमारी के पश्चात् निधन हो गया। श्रीसंघ अध्यक्ष बाबुलाल तांतेड़ जावरा विधानसभा के एक छोटे से गांव उपरवाड़ा से जावरा में आए थे। राजस्व विभाग में पटवारी के रूप में जावरा एवं पिपलोदा में निष्कलंक सेवा दी। सेवाल काल के दौरान 26 जनवरी गणतंत्र दिवस पर आप सदैव सर्वश्रेष्ठ पटवारी का खिताब पाते रहे है। जैन समाज ही नहीं अपितु संपूर्ण जावरा शहर आपकी प्रतिभा व्यवहार और मिलनसारिता का कायल रहा। त्रिस्तुतिक श्रीसंघ में पिछले 9 वर्षों से लगातार तांतेड़ अध्यक्ष रहे और आज भी पद पर रहकर ही उनका देहावसान हुआ। मीडिया प्रभारी अरविंद जैन एवं अतुल सुराणा ने बताया कि तांतेड़ श्रीसंघ अध्यक्ष के साथ ही पिपली बाजार पेढ़ी ट्रस्ट एवं ऋषभदेव सुपार्श्वनाथ पेढ़ी ट्रस्ट के उपाध्यक्ष भी रहे। उनका निधन परिवार ही नहीं संपूर्ण समाज के लिए भी अपूरणीय क्षति है। शांतिवन

चौपाटी पर उनके सुपुत्र संजय एवं संदीप ने मुखाग्नि दी। त्रिस्तुतिक श्रीसंघ द्वारा पूरे सामाजिक सम्मान के साथ उन्हें पचरंगी झंडा ओढ़ाया गया। शोकसभा में विधायक डॉ. राजेन्द्र पाण्डेय, चंद्रप्रकाश ओस्तवाल, धरमचंद चपड़ोद, ज्ञानचंद चौपड़ा, अनिल दसेड़ा, प्रकाश कांठेड़, शांतिलाल दसेड़ा, सुजानमल दसेड़ा सहित अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने उनके जीवन चरित्र को उल्लेखित किया। संचालन अजित चत्तर ने किया।

दीक्षा जयंती एवं गुरु सप्तमी समारोह

काया (उदयपुर)। नववर्ष पर आचार्य श्रीमद् जयरत्नविजयजी म.सा. की 46 वीं दीक्षा जयंती आचार्य श्रीमद् जयानन्दसूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में मनाई गई । इस अवसर पर सुखाड़िया विश्व विद्यालय के प्राकृत विभाग के सेवानिवृत्त प्रोफेसर डॉ. उदय चंद जैन ने दीक्षा का अर्थ एवं आचार्य श्री के योगदान पर विस्तृत प्रकाश डाला। संस्थान के अध्यक्ष श्री जीवनसिंह मेहता ने आचार्य श्री से संपर्क, मंदिर की प्रतिष्ठा समय से लेकर आज तक उनसे प्राप्त मार्गदर्शन का वर्णन किया।

दिनांक 2.1.2020 गुरुवार को गुरुसप्तमी महापर्व मुनिराज श्री वैराग्य विजयजी के सान्निध्य में मनाई गई। श्री वैराग्य विजयजी म.सा. ने श्रीमद् आचार्य राजेन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. के जीवन, दर्शन पर विचार रखते हुए अभिधान राजेन्द्रकोष का लेखन एवं तत्कालीन प्रचलित कुरूतियों का विरोध पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए बताया कि आचार्यश्री एक व्यक्ति नहीं, एक संस्था नहीं वरन् एक सम्पूर्ण युग थे, युग पुरुष थे।

दीक्षा दिवस पर स्वामीवात्सल्य का लाभ श्री राजेन्द्रसूरि जैन सेवा संस्थान, उदयपुर द्वारा तथा गुरुसप्तमी दिवस पर श्रीमती देवु देवी सुखराजजी बालगोता परिवार सुख सागर चेरिटेबल ट्रस्ट, मेंगलवा, दिल्ली, चेन्नई द्वारा लिया गया।

दोनों दिन कार्यक्रम में श्री सुनीलजी जैन, श्री अमितजी विराणी का सहयोग प्रशंसनीय रहा। कार्यक्रम संचालन महामंत्री श्री अरूण बड़ाला ने किया। गुरु आरती का लाभ श्री मनोहरसिंह मोगरा ने लिया।

– जीवनसिंह मेहता

*** खाचरौद ।** श्री राज राजेन्द्र जयंतसेन विद्यापीठ में विद्यार्थियों के लिए दाँतों की देखभाल संबंधी जानकारी के लिए दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस आयोजन में इंदौर के दंत चिकित्सक डॉ. आयुषी

बड़जात्या एवं डॉ. मिषी जैन ने बच्चों को दाँतों की देखभाल, ब्रश करने का तरीका, दाँतों को स्वस्थ रखने के लिए क्या खाना चाहिए क्या नहीं खाना चाहिए इन सभी बातों की जानकारी दी।

* **खाचरौद** । श्री राज राजेन्द्र जयंतसेन विद्यापीठ में बसंत पंचमी के उत्सव का आयोजन हर्ष एवं उल्लास से किया गया। कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने माँ सरस्वती के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की तथा परवेज शेख, प्रियांषी नायमा एवं अमोली संगमनेरकर ने माँ सरस्वती को अपने मधुर गीतों के द्वारा स्वरांजलि दी। शिक्षकों ने 'बसंत पंचमी' का महत्व बताया एवं आज ही हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की पुण्यतिथि को मनाया गया, जिसके लिए 2 मिनट का मौन रखकर विद्यालय ने शहीद दिवस पर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किये।

* **खाचरौद** । श्री राज राजेन्द्र विद्या मंदिर हायर सेकेण्डरी स्कूल खाचरौद में तीन दिवसीय श्री जयन्त फन फेअर का आयोजन उत्सव ट्वेन्टी-ट्वेन्टी के अन्तर्गत उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ।

आयोजन के अन्तर्गत विभिन्न आयु वर्ग के लिए भिन्न-भिन्न बौद्धिक, सांस्कृतिक एवं रचनात्मक प्रतियोगिताएँ रखी गई थीं। प्राथमिक व माध्यमिक वर्ग के लिए स्पेल बी, ड्राईंग, फेस पेंटिंग, बेस्ट ऑफ वेस्ट आदि प्रतियोगिताएँ थीं तो उच्च कक्षाओं के लिये हिन्दी वाद-विवाद, अंग्रेजी डिबेट, साईंस प्रदर्शनी, एक्सटेम्पोर मेमोरी गेम आदि आयोजित हुए। सभी प्रतियोगिताओं में छात्रों ने बढ़- चढ़कर सहभागिता की और अपनी प्रतिभा का परिचय दिया।

* **खाचरौद** । श्री राज राजेन्द्र जयन्तसेन विद्यापीठ खाचरौद में गणतंत्र दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री शांतिलाल छाजेड़ एवं श्री राज राजेन्द्र शिक्षण समिति के सभी सदस्यगण मौजूद थे। बच्चों ने देशभक्ति का गीत 'हम सब भारतीय हैं।' की प्रस्तुति दी एवं अत्यन्त सुन्दर ढंग से परेड के द्वारा झंडे को सलामी दी गई।

* **जालोर** । पिछले 24 सालों से सेवा केन्द्र सायला पंचायत समिति क्षेत्र के दूर दराज इलाकों में मिष्ठान वितरण का कार्य निरन्तर कर रहा है।

इस वर्ष गणंतत्र दिवस पर विभिन्न स्थानों की 24 आंगनवाड़ी केन्द्रों एवं रामदेव उच्च प्राथमिक विद्यालय, लोदराऊ में मिष्ठान वितरण किया गया। सेवा केन्द्र के संस्थापक श्री अचलचन्द जैन जो एक सेवानिवृत्त अधिकारी हैं तन, मन एवं धन से गरीबों के हितार्थ कार्यों में जुटे हुए हैं।

अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेशजी धरू का म.प्र. प्रवास

इंदौर। अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेश भाई धरू एक दिन के प्रवास पर मध्यप्रदेश पधारे। दि. 29 दिसम्बर 2019 को इंदौर, राणापुर, लाबरिया, दसाई, बड़नगर में आयोजित दो दिवसीय आध्यात्म यात्रा शिविर में शिविरार्थियों को मार्गदर्शन प्रदान करते हुए शिविरों का दौरा किया। आपके साथ परिषद के राष्ट्रीय महामंत्री श्री सुधीर लोढ़ा, राष्ट्रीय शिक्षा मंत्री श्री भरत भाई वोरा, प्रांतीय अध्यक्ष श्री राजेन्द्र जैन दंगवाड़ावाला, राष्ट्रीय प्रचार मंत्री श्री ब्रजेश बोहरा, राष्ट्रीय मंत्री मुकेश जैन नाकोड़ा, राष्ट्रीय संगठन मंत्री राजेश वागरेचा, राष्ट्रीय सहमंत्री शैलेष ओरा भी साथ थे।

परिषद द्वारा आयोजित दो दिवसीय आध्यात्म यात्रा शिविर के लाभार्थी शिक्षा मंत्री भरत भाई वोरा थे। शिविर के संचालन हेतु सूरत से तरुण परिषद की एक उर्जावान टीम आई थी। 204 सदस्यों ने दो दिवसीय शिविर में भाग लेकर लाभ लिया। इसका मुख्य उद्देश्य धार्मिक संस्कार था।

राजगढ़ बस स्टेण्ड पर निर्माणाधीन परिषद भवन का निरीक्षण पदाधिकारियों द्वारा किया गया। परिषद के संस्थापक आचार्य श्रीमद् विजय यतीन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. के स्वर्गारोहण दिवस पर मोहनखेड़ा तीर्थ में व जयंतसेन म्यूजियम में बिराजमान साध्वी श्रीजी के दर्शन वन्दन किये, विहार के दौरान लाबरिया में बिराजमान आचार्य मधुररत्न सूरिश्वरजी म.सा. का शिविर में सान्निध्य प्राप्त हुआ।

बड़नगर में परिषद परिवार के सामूहिक मिलन समारोह में परिषद के सभी पदाधिकारियों के उद्बोधन कराये गये। सभी शिविर स्थलों पर परिषद व श्रीसंघ परिवार द्वारा शिविर संचालक का व परिषद के पदाधिकारियों का बहुमान किया गया। कार्यक्रम का संचालन

सभी शिविर में परिषद के सदस्यों द्वारा व आभार स्थानीय परिषद द्वारा माना गया। निरीक्षण के दौरान सभी जगह बच्चों में बढ़ा उत्साह देखा गया सभी ने शिविर में कुछ नया सीखने की बात कही। स्थानीय परिषद व श्रीसंघ का सहयोग भी सराहनीय रहा।

यतीन्द्र ज्ञानपीठ के नए परीक्षा केन्द्र प्रारम्भ

इन्दौर में राधानगर एवं सच्चिदानंद नगर में पाठशाला प्रारंभ

इन्दौर। श्रुत ज्ञानार्जन योजना के तहत विगत दिनों इन्दौर शहर में दो नवीन पाठशालाओं का शुभारंभ किया गया। इन्दौर-राधानगर में श्री श्रेयांसनाथ राजेन्द्रसूरि पाठशाला के लगभग 30 बच्चों को पाठशाला संचालिका श्रीमती पूनम जैन एवं शिक्षिका श्रीमती शाह द्वारा ज्ञानार्जन करवाया जा रहा है। इंदौर गुमाश्ता नगर पाठशाला संचालिका सोनल जैन द्वारा श्रुत ज्ञानार्जन योजना की सामग्री के साथ विस्तृत जानकारी दी गई।

सोनल जैन द्वारा सच्चिदानंद नगर (इंदौर) में भी पाठशाला प्रारंभ करवाने हेतु सराहनीय प्रयास किये। यहाँ नवीन पाठशाला राजेन्द्रसूरि जयन्तसेन धार्मिक पाठशाला के शुभारम्भ के साथ ही श्रुत ज्ञानार्जन योजना की समस्त सामग्री प्रदान की गई। श्रीमती रीना बाफना एवं श्रीमती वर्षा छाजेड़ द्वारा पाठशाला संचालन एवं शिक्षण किया जा रहा है।

जावरा राजेन्द्र विहार में पाठशाला प्रारम्भ

इन्दौर। श्रुत ज्ञानार्जन योजना के तहत जावरा शहर में राजेन्द्र विहार में नवीन पाठशाला का शुभारंभ किया गया। श्री राजेन्द्रसूरि जयन्तसेन धार्मिक पाठशाला में पाठशाला संचालिका हर्षिता माण्डोत द्वारा ज्ञानार्जन करवाया जा रहा है। आपके द्वारा सुगनश्री में भी सेवाएँ दी जा रही हैं। स्व प्रेरणा से

प्रारंभ इस पाठशाला के शुभारंभ पर परिषद परिवार आपकी अनुमोदना करता है।

रोजाना में ज्ञानपीठ केन्द्र एवं पाठशाला प्रारंभ

रतलाम। साध्वीजीश्री अमीत दृष्टाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा की पावन प्रेरणा एवं उनके सान्निध्य में रोजाना (जि. रतलाम) में यतीन्द्र ज्ञानपीठ का केन्द्र प्रारंभ किया गया।

श्री राजेन्द्रसूरि जयन्तसेन धार्मिक पाठशाला में नेहा धारीवाल संचालिका एवं श्रीमती कुसुमजी चौरड़िया शिक्षिका के रूप में अपनी सेवाएँ दे रही हैं। राष्ट्रीय शिक्षा मंत्री श्रीमती संगीताजी पोरवाल एवं वैयावच्च मंत्री श्रीमती सारिकाजी कोलन ने पाठशाला का दौरा कर केन्द्र द्वारा संचालित श्रुत ज्ञान योजना की सामग्री प्रदान की।

रायपुरिया में ज्ञानपीठ केन्द्र एवं पाठशाला प्रारंभ

रायपुरिया। मातृहृदया साध्वीजीश्री कोमललताश्रीजी म.सा. की सुशिष्या साध्वीवर्या अनेकांतलताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा की पावन प्रेरणा एवं निश्रा में यतीन्द्र ज्ञानपीठ का केन्द्र प्रारंभ किया गया। ज्ञानपीठ के केन्द्र के साथ ही यहाँ पर नियमित रूप से श्री राजेन्द्रसूरि जयन्तसेन धार्मिक पाठशाला का भी शुभारंभ किया गया। श्री विजयजी श्रीश्रीमाल पाठशाला संचालक एवं शिक्षक के रूप में अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। श्री पारसजी राठौड़ को केन्द्राध्यक्ष बनाया गया है।

श्री श्रेयांसनाथ राजेन्द्रसूरि जैन ज्ञान मंदिर में ध्वजारोहण

* उज्जैन। राष्ट्रसंत सम्राट आचार्य देवेश श्रीमद् विजयजयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्ती साध्वी भुवनप्रभा श्रीजी म.सा. की शिष्या साध्वी अमृतरसाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा-3 के सान्निध्य में श्री श्रेयांसनाथ राजेन्द्रसूरि जैन ज्ञान मंदिर नयापुरा की भव्य प्रतिष्ठा की द्वितीय वर्षगांठ पर ध्वजारोहण उत्सव हुआ।

त्रिस्तुतिक श्रीसंघ नयापुरा के प्रचार मंत्री राजेन्द्र पगारिया एवं राजेन्द्र पटवा ने बताया कि श्री मूलनायक परमात्मा की ध्वजा के लाभार्थी मोतीलाल सुशील कुमार, कपिल कुमार, नवीन कुमार गिरिया परिवार द्वारा एवं श्री गौतम स्वामीजी की ध्वजा के लाभार्थी रितेशकुमार निलेश कुमार संघवी एवं नवीन कुमार बसंतीलाल गिरिया एवं गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरिश्वरजी म.सा. की ध्वजा के लाभार्थी श्री माणकलाल, राजेश कुमार, अमित चत्तर चपलोद परिवार एवं नरेन्द्रकुमार राजेश कुमार चत्तर परिवार द्वारा ध्वजा चढ़ाई गई। कार्यक्रम की शुरुआत परमात्मा की स्नात्र पूजा से हुई इसके पश्चात् सत्तरभेदी पूजन का आयोजन हुआ। ध्वजारोहण की संपूर्ण विधि विधिकारक हेमंत वेदमुथा मक्सी द्वारा सम्पन्न हुई। इसके पश्चात् साध्वीश्री के प्रवचन हुए। दोपहर में अंगरचना अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन तरुण परिषद के कार्यकर्ताओं द्वारा की गई। शाम को भव्य आरती की गई। इस अवसर पर गिरिया परिवार द्वारा भगवान को चांदी के छत्र अर्पित किये गये। इस अवसर पर श्रीसंघ द्वारा लाभार्थियों का बहुमान किया गया। सम्पूर्ण कार्यक्रम में सुरेश पगारिया, संघ अध्यक्ष कपिल सकलेचा, विजय गादिया, अजीत लुक्कड़, राजेश पगारिया, माणकलाल चत्तर, अमृत सांखला, मांगीलाल डांगी, पुष्पेन्द्र जैन, श्रेणिक बाफना, राजेश चपलोद, राकेश चत्तर, योगेश पगारिया, विजय डांगी, संजय सकलेचा, कांति सकलेचा, राहुल सकलेचा, सौरभ संघवी, पिंटू गादिया, आयुष गादिया एवं महिला परिषद एवं बहु परिषद् का सराहनीय सहयोग रहा।

---

*मैसूर। गुरुदेव श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी महाराज के 37 वें पाटोत्सव के उपलक्ष्य में मैसूर शहर के महावीर भवन में वार्षिक 500 मौन सामायिक बहुमान का कार्यक्रम सफलता पूर्वक आयोजित किया गया।

मैसूर में गुरुदेव के आशीर्वाद से बहनों द्वारा वार्षिक 33000 सामायिक की गई। सामायिक करने वाली बहनों के बहुमान हेतु 5 लक्की ड्रा का आयोजन किया

गया एवं सभी बहनों के लिए विशेष प्रोत्साहन बहुमान प्रदान किया गया। सामायिक करने वाली 70 वर्ष से अधिक उम्र वाली बहनों का विशेष बहुमान किया गया । कार्यक्रम में श्री सुमतिनाथ मंदिर, श्री सुविधीनाथ मंदिर अ.भा. राजेन्द्र नवयुवक परिषद के ट्रस्टीगण, ह्यूमन टच के सदस्यगण उपस्थित थे। सभा का विशेष बहुमान किया गया। – शैलेष धोकड़

साध्वी श्री पूर्णकिरणाजी का कालधर्म

*अहमदाबाद। सौधर्म बृहत्त पोगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन संघ की वयोवृद्ध साध्वीवर्या श्री पूर्णकिरणाश्रीजी म.सा. का 76 वर्ष की उम्र में दिनांक 11.01.2020 को प्रातः 6 बजे अहमदाबाद में कालधर्म हो गया। साध्वीवर्याश्री ने 58 वर्ष के संयम पर्याय में जिनशासन एवं गुरुगच्छ की अनुपम प्रभावना के कार्य किए। 16 वर्ष की आयु में आपने संयम अंगीकार किया और उत्कृष्ट साधना-आराधना की।

11-1-2020 को अहमदाबाद में आपका अन्तिम संस्कार लाभार्थी परिवार द्वारा किया गया। शाश्वत धर्म की ओर से अश्रुपूरित श्रद्धाजंली।

श्री कावड़िया तथा श्री तल्लेरा का निधन

श्री मोहनखेड़ा म्यूजियम। विगत मास में श्री सौबृहत त्रिस्तुतिक जैन श्रीसंघ को मालवा में दो अपूरणीय क्षतियों का सामना करना पड़ा है। कुशलगढ़ के श्री हीरालालजी कावड़िया तथा उज्जैन के श्री रमणलालजी तल्लेरा का दुखद निधन हुआ। दोनों राष्ट्रसंत जैनाचार्य स्व. श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म. के आस्थावान गुरुभक्त थे। दोनों के निधन से त्रिस्तुतिक समाज में शोक छा गया। अ.भा. सौ. त्रि. संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री बाघजीभाई वोरा, वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री शांतिलाल रामानी, राष्ट्रीय महामंत्री श्री सुरेन्द्र लोढ़ा ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि श्री हीरालालजी कावड़िया ने कई धर्मोत्सकों का आयोजन करते हुए छःरि पालक संघ निकाला था। श्री रमणजी तल्लेरा 40 वर्षों से राष्ट्रसंत जैनाचार्यश्री के सान्निध्य में आयोजित श्री नवकार महामंत्र की आराधना में निरंतर जुड़े रहे। आप इसके राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष भी थे। दोनों विभूतियों ने समाज की खूब सेवा की। दोनों को श्रीसंघ की ओर से हार्दिक श्रद्धाजंलियाँ ।

महा निरीक्षक को ज्ञापन प्रस्तुत

इन्दौर । श्री जयंत सेन म्यूजियम मोहनखेड़ा तीर्थ पर विगत दिनों हुई चोरी मामले को लेकर ट्रस्ट मंडल एवं परिषद के पदाधिकारियों के एक प्रतिनिधि मंडल ने इन्दौर शहर कांग्रेस अध्यक्ष श्री विनय बाकलीवाल के नेतृत्व में इन्दौर रेंज के महा निरीक्षक श्री विवेक शर्मा से मुलाकात कर एक ज्ञापन सौंपा । प्रतिनिधिमंडल ने पुलिस महानिरीक्षक से अपराधियों को शीघ्र पकड़ने की मांग की। चर्चा में श्री शर्मा ने स्पष्ट किया कि पुलिस चोरी के मामले का खुलासा करने के लिए प्रतिबद्ध है । हमने आस्था के केन्द्र पर हुई चोरी को प्राथमिकता से हल करने का निर्देश पुलिस अधिकारियों को दिए हैं । पुलिस जांच में कई महत्वपूर्ण सुराग पुलिस को प्राप्त हुए हैं इन सुराग के आधार पर पुलिस वारदात की विवेचना कर रही है । चोरी की वारदात का खुलासा पुलिस की प्राथमिकता में है। प्रतिनिधिमंडल में ट्रस्टी श्री मुकेश जैन, राजेन्द्र भंडारी, सुधीर लोढा, नीरज सुराणा, राजेन्द्र जैन दंगवाड़ा वाला, चिराग भंसाली, नरेन्द्र भटेवरा, नरेन्द्र सुराणा, दिनेश मेहता, नरेन्द्र राठौर उपस्थित थे।

त्रिस्तुतिक समुदाय में हुये विभिन्न कार्यक्रमों में मुनिराज श्री का पदार्पण

त्रिस्तुतिक जैनाचार्य अभिधान राजेन्द्र कोष निर्माता गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वर जी महाराजा के प्रशिष्य पुण्य सम्राट युग प्रभावक गुरुदेव श्रीमद्विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी महाराजा के शिष्य एवं गच्छाधिपति श्री नित्यसेन सूरीश्वरजी महाराज एवं आचार्य भगवंत श्री जयरत्न सूरीश्वरजी महाराज के आज्ञानुवर्ती मुनिराज श्री चारित्ररत्न विजयजी महाराज का त्रिस्तुतिक समुदाय में हुये विभिन्न कार्यक्रमों में पर्दापण हुआ, मुनिराज श्री पाटण से विहार कर गुजरात के उंझा नगर में और राजस्थान के सांचोर नगर में पधारे वहां पर आचार्य भगवंत श्री जयरत्न सूरीश्वरजी महाराज की पावन निश्रा में 31 जनवरी को उंझा नगर में त्रिस्तुतिक जैन संघ उंझा नगर एवं 8 फरवरी को सांचोर निवासी चंदाजी अमीचंदजी कटारिया संघवी परिवार द्वारा नव निर्मित गुरु मंदिरों में गुरुदेव श्रीमद्विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी महाराज की गुरु मुर्ति का प्रतिष्ठा महोत्सव संपन्न हुआ, उसके बाद मुनिराज श्री गुजरात के डीसा नगर में

पधारे वहां पर डिसा में गुरुदेव श्रीमद्विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी महाराजा की पावन प्रेरणा से डीसा पालनपुर हाईवे पर इढाटा (थराद) निवासी दोशी बाबूलाल मणीलाल परिवार निर्मित शंखेश्वर दर्शन के राज राजेन्द्र जयन्तसेन विहार धाम में गच्छाधिपति श्रीमद्विजय नित्यसेन सूरीश्वरजी महाराज की पावन निश्रा में शंखेश्वर पार्श्वनाथ आदि परमात्मा ओर गुरुदेव श्री राजेन्द्र सूरीश्वर जी महाराज आदि की गुरु मूर्ति का दिनांक 13 फरवरी को भव्य अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव संपन्न हुआ, विहार दरम्यान मुनिराज श्री का पालनपुर डीसा घानेरा नेनावा सहित अनेक नगरों में पदार्पण हुआ, 16 फरवरी को मुनिराज श्री का पाटण नगर में पदार्पण हुआ, मुनिराज श्री के पदार्पण प्रसंग पर पाटण नगर में अध्ययन हेतु पाटण के पंचासरा जिनालय के समीप स्थित त्रिस्तुतिक जैन उपाश्रय में विराजमान मुनिराज श्री निपुणरत्न विजयजी महाराज आदि ठाणा एवं नगर में विराजमान विभिन्न समुदाय के श्रमण-श्रमणी भगवंत उपस्थित रहे।

मुमुक्षु सेवंतीभाई बने मुनिराज श्री साध्यरत्न विजयजी

गुजरात के नेनावा नगर में त्रिस्तुतिक जैनाचार्य गुरुदेव श्रीमद्विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी महाराजा के प्रशिष्य युग प्रभावक पुण्य सम्राट गुरुदेव श्रीमद्विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी महाराजा के पट्टधर गच्छाधिपति श्री नित्यसेन सूरीश्वरजी महाराज एवं आचार्य भगवंत श्री जयरत्न सूरीश्वरजी महाराज की पावन निश्रा में फाल्गुन सुदी तृतीया दिनांक 26 फरवरी को मुमुक्षु रत्न थराद (थीरपुर तीर्थ) निवासी श्री सेवंतीभाई नरपतलाल अदाणी का दीक्षा महोत्सव हजारों लोगों की उपस्थिति में संपन्न हुआ, मुमुक्षु रत्न श्री सेवंतीभाई का दीक्षा ग्रहण करने के बाद नूतन मुनि के रुप में उनका नाम मुनिराज श्री साध्यरत्न विजय घोषित हुआ इस दीक्षा महोत्सव का प्रसंग अनुमोदनीय रहा, मुमुक्षु रत्न की भावना अनुसार अर्पण किये जाने वाले श्रमण जीवन के उपकरण की किसी प्रकार की बोली (चड़ावा) नही लगाई गई, नूतन मुनिराज श्री को त्रिस्तुतिक जैन संघ नेनावा एवं नूतन मुनिराज श्री के संसारी परिवार ओर सगे संबंधियों की ओर से तप त्याग ओर आराधना के नियम ग्रहण कर श्रमण जीवन के उपकरण वहोराये गये, मुमुक्षु रत्न ने किसी प्रकार की शोभायात्रा या अन्य कोई अनुष्ठान नहीं कर सादगी पूर्वक दीक्षा का संयम जीवन ग्रहण के पूर्व लिए भाव को साकार किया, इनके भाव को नेनावा त्रिस्तुतिक जैन संघ एवं संसारी परिवार अदाणी नरपतलाल टीलचंदभाई ने सहयोग प्रदान किया, धन्य मुमुक्षु रत्न एवं अनुमोदना इनके भावों की,

जैन विश्व

* गणतंत्र दिवस पर भारत सरकार ने विशिष्ट सेवाओं के लिये घोषित पद्मश्री सम्मान में पाँच जैन श्री विमलकुमार जैन, बिहार (समाजसेवी), श्रीमती मीनाक्षी जैन (शिक्षा व साहित्य) दिल्ली, श्री शांति जैन बिहार (कला), श्री नेमीनाथ जैन (उद्योग) इंदौर, श्री सुधीर जैन, गुजरात (विज्ञान) को सम्मिलित किया है।

* बीजापुर (राता महावीर तीर्थ हथुंडी) में श्री पुण्डरिकस्वामी-गौतमस्वामी आदि की प्रतिमा आचार्यदेव श्री रविरत्नसूरिजी म.सा., पं. वैराग्यरत्नविजयजी म. आदि की निश्रा में भव्य रीती से हुई।

* मदुरै श्री साँचा सुमतिनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वेताम्बर ट्रस्ट मदुरै के तत्वावधान में मदुरै से सकल जैन समाज के श्रावक-श्राविकाओं के साथ ट्रस्ट मण्डल ने मुनिराज श्री हितेशचद्रविजयजी म.सा. मुनिराज श्री दिव्यचन्द्रविजयजी म.सा. के दर्शन वन्दन कर मुनिराज से आगामी वर्ष 2020 का चातुर्मास मन्दिरों की नगरी मदुरै में करने की विनती की। आपने इस हेतु स्वीकृति दी।

* **नई दिल्ली** । अणुव्रत विश्व भारती की ओर से शांति और अंहिसा पर हुए दसवें अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में फ्रांस से प्रवक्ता डॉ. थॉमस डेंफर्न और भारत से सुश्री भारती जैन ने तीन दिन की एक विशेष युवा कार्यशाला 'व्हाट विल ए पीसफुल एंड सस्टेनेबल वर्ल्ड लुक लाइफ ?' आयोजित की।

* **चैन्नई।** अंतरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र के निदेशक साहित्यकार डॉ. दिलीप धींग भगवान महावीर विश्व विद्यालय, सूरत (गुज.) के शोध-परामर्शक मनोनीत किये गये हैं। वे विश्वविद्यालय में मुक्त कला एवं मानविकी संकाय के अंतर्गत जैन दर्शन, प्राकृत भाषा और हिन्दी साहित्य से सम्बन्धित शोध कार्यों में मार्गदर्शन देंगे।

* **जोधपुर।** फेमिना वेलफेयर सोसायटी के तत्वावधान में नवजीवन संस्थान में मकर संक्रांति के उपलक्ष्य में अनाथ व मानसिक रूप से बीमार बच्चों को पालना, फल, बच्चों के कपड़े, तिल के लड्डू , गजक का वितरण किया गया।

* राष्ट्रसंत श्री ललितप्रभजी एवं राष्ट्रसंत पूज्य श्रीचन्द्रप्रभजी सन् 2020 का चातुर्मास हैदराबाद में घोषित हुआ है।

* श्री राजस्थान जैन एसोसिएशन - मदुरै के तत्वावधान में सेम्पटी

गाँव में पलनी मुरूगन भगवान के दर्शन के लिए पैदल जा रहे स्वामी भक्तों के लिए अन्नदानम् सेवा शिविर का आयोजन किया गया है।

* मदुरै नार्थ इन्डियन वेलफेयर एसोसिएशन व श्री मीनाक्षी गौशाला के तत्वावधान में गौशाला प्रांगण में नवम् वर्षगांठ मनाई गई दिनेश सालेचा ने बताया कि कार्यक्रम की शुरुआत सुबह गणपति हवन व गौपूजा करके की गई।

* **चैन्नई।** अंतर्राष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र के निदेशक डॉ. दिलीप धींग की प्रेरणा से आचार्य महाप्रज्ञ और आचार्य नानेश की जन्म शताब्दी (2019-2020) के उपलक्ष्य में कावड़ बनाई गई है। डॉ. महेन्द्र भानावत ने बताया कि मेवाड़ के काष्ठ कलाकार मांगीलाल मिस्त्री द्वारा निर्मित इन कावड़ों में दोनों आचार्यों की जीवन - झाँकी चित्रित है।

* **चैन्नई।** अंतर्राष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र की ओर से प्राकृत भाषा शिक्षण के लिए साप्ताहिक कक्षाएँ दो दशक से आयोजित हो रही हैं। इस वार्षिक पाठ्यक्रम में उत्तीर्ण विद्यार्थियों को राजस्थान विश्वविद्यालय से मान्य अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जयपुर से प्रमाणपत्र दिये जाते हैं। निदेशक डॉ. दिलीप धींग ने बताया कि यहाँ जैन व जैनेतर, हिन्दी व हिन्दीतर भाषियों के अलावा साधु-साध्वी भी प्राकृत सीख रहे हैं। महासचिव डॉ. कृष्णचंद चोरड़िया ने बताया कि वर्ष 2020 के लिए प्रवेश हेतु डॉ. प्रियदर्शना जैन (9840368851) से संपर्क किया जा सकता है। - मीनु चोरड़िया

* छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री ने पर्वतारोही इयासी जैन को एक लाख रुपए प्रोत्साहन राशि देने की घोषणा की।

* **मदुरै।** श्री वासुपूज्य स्वामी जैन कलश मंदिर की तीसरी वर्षगांठ पर मदुरै स्थित अन्नानगर के कलश मंदिर परिसर में भक्ति महोत्सव व ध्वजारोहण सहित धार्मिक अनुष्ठान के साथ स्थापना दिवस मनाया। श्रीसंघ प्रवक्ता दिनेश सालेचा ने बताया कि श्री जैन तीर्थ संस्थान रामदेवरा एवं श्री वासुपूज्य स्वामी जैन कलश मंदिर के संयुक्त तत्वावधान में मदुरै के अन्नानगर स्थित कलश मंदिर का तीसरा वार्षिक स्थापना दिवस व ध्वजारोहण के उपलक्ष्य में मंदिर प्रांगण में महिला मंडल की महिलाओं द्वारा सत्तरभेदी पूजा पढ़ाई गई।

तत्पश्चात नरता भीनमाल निवासी बगदावरमल हरण परिवार द्वारा शुभ मूहूर्त में मंदिर के मुख्य शिखर पर ध्वजारोहण किया एवं साथ ही श्री राजेन्द्रसूरीश्वर व श्री कुशलसूरीश्वर का ध्वजा रोहण लाभार्थी परिवार ने किया।

शाश्वत धर्म के संरक्षक

- शा. ओटमल वेलाजी कांकरिया-सुरा निवासी।
- शा. ताराचंद फुटरमल फौजमल, भानाजी वेदमुथा-आहोर निवासी।
- कटारिया संघवी भवरलाल, उगमचंद, वीरेन्द्र कुमार, राजेन्द्रकुमार, आशीष, गौरव पुत्र पौत्र-तोलाजी, धाणसा निवासी (फर्म-मेन्स एवेन्यु-बाई मिलन, बैंगलौर)
- शा. तिलोकचंद, नरसिंगमल, पुखराज, परखचंद, सांवलचंद, पुत्र, पौत्र प्रतापचंदजी सूरत निवासी।
- संघवी मिश्रीमल, हस्तीमल, समरथमल, हीरालाल, शांतिलाल, दिलीपकुमार जैन, पुत्र-पौत्र कन्नाजी कटारिया-जाखल नि.
- नैनावा श्री जैन श्वेताम्बर सकल संघ, गुरूभक्तगण-नैनावा।
- श्री समकितगच्छीय जैन श्वे. संघ-धानेरा।
- स्व. मायाचंद धुलाजी की स्मृति में धर्मपत्नी धापुबाई, सुपुत्र कुशलराज, भ्राता निहालचंद एवं श्रीमती जड़ावबेन कातरेला बोहरा-आहोर निवासी।
- मेहता तेजराज, जयन्तीलाल, राजेन्द्रकुमार, अरविंदकुमार, पुत्र पौत्र रायचंदजी जसराजजी भूती निवासी।
- मोरखिया चंदुलाल, बाबूलाल, रसिकलाल, महेशकुमार, परेशकुमार अल्पेशकुमार, रूपेश कुमार, पुत्र-पौत्र स्व. मौरखिया नानचंद मूलचंद थाई-थराद निवासी।
- स्व. मुणोत रिखबचंदजी की स्मृति में धर्मपत्नी ढेलीबाई सुपुत्र बाबूलाल, सुमेरमल, अशोक कुमार, रमणिया निवासी।
- स्व. रामाणी शेषमलजी की स्मृति में मांगीलाल, फुटरमल, शांतिलाल, किशोरकुमार पुत्र-पौत्र खुशालजी रामाणी, गुडा बालोवान (फर्म-सूर्यलोक ज्वेलर्स, नैल्लोर)
- श्री राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट, चैन्नई।
- शा. मोहनलाल, पारसमल, सुरेश कुमार, किशोर कुमार, कमलेश कुमार, अरविन्द कुमार पुत्र, पौत्र साकलचंद जेरूपजी भैंसवाडा नि.फर्म-गोल्डन ज्वेलर्स, नेल्लोर।
- स्व. सुगीबाई धर्मपत्नी अचलजी की स्मृति में पुत्र-कांतिलाल, प्रपोत्र-रमेशकुमार बागरा निवासी।
- श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ चौराऊ।
- श्री श्वेताम्बर जैन संघ, सियाणा।
- श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ, थराद।
- दोशी सोमतमल, गुमानमल, सुखराज सांवलजी हस्ते-गुमानमल सांवलजी चेरिटेबल ट्रस्ट, मुम्बई।
- सुशीला बहन की स्मृति में भीमराज, हिमांश कुमार, श्रेणिक कुमार पुत्र पौत्र बेचरदासजी छाजेड़, नैनावा निवासी हाल मु.सांचोर, राज.
- श्री गोडी पार्श्वनाथ जैन देरासर पेढ़ी, सोनारी, सेरी थराद, प्रतिष्ठा प्रसंगे गुरूभक्तों द्वारा।
- स्व. जेठमलजी खुमाजी की स्मृति में, चंदनमल, कैलाशचंद हंसराज, शीतलकुमार, अश्विन कुमार परिवार, बागरा निवासी (राजस्थान फायनेन्स कॉरपोरेशन काकीनाडा)
- श्री विमलनाथ जैन दोशी दहेरासर, थराद।
- श्री सौधर्म बृहत्तपागच्छ जैन संघ, आनन्द (गुजरात)
- श्री जैन श्वे. त्रिस्तुतिक श्री संघ थलवाड (राजस्थान)
- श्री सौधर्म बृहत्तपोगच्छीय जैन संघ जावरा (म.प.)
- श्री सौधर्म बृहत्पोगच्छीय जैन संघ वासणा (गुजरात)
- श्री महाविदेह तीर्थधाम नवागाम, सूरत (गुजरात)
- आहोर निवासी संघवी जुगराज, कांतिलाल, महेन्द्र, सुरेन्द्र, दिलीप, धीरज, संदीप, राज, जैनम पुत्र पौत्र शा. कुन्दनलालजी भुताजी श्रीमाल वर्धमान गोत्रिय परिवार-थाणे (महा.)
- श्री जैन श्वेताम्बर संघ-सामलकोट।
- श्री जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, सूर्यरावपेटा-काकीनाडा (आन्ध्र प्रदेश)
- श्री सिमंधर राजेन्द्र जैन श्वे. मंदिर, मामुलपेट, बेंगलोर।
- श्री मुनिसुव्रत - राजेन्द्र जैन श्वेताम्बर मंदिर, (एवेन्यु रोड बैंगलोर)

- श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, विजयवाड़ा (आ.प्र.)
- शा. अनराजजी छोगालालजी बुरड, सांचोरा वाला,फर्म-सोनू स्टील, सिकन्दराबाद, आ.प्र.
- शा. उत्तम, रमेश, हरीश, खुशालचंदजी, गेबाजी डामराणी, मैंगलवा वाला, फर्म पाक्षाल पावर किंग इलेक्ट्रीकल, हैदाराबाद (आ.प्र.)
- श्री पार्श्वनाथ राजेन्द्रसूरिजी जैन ट्रस्ट, गुंटूर
- कोशिलाव निवासी शा. भूनतमलजी, मगराजजी ललवाणी फर्म-पारस एजेन्सीज, हैदराबाद
- बागरा निवासी शा. शेषमलजी, गुलाबचंदजी फर्म जैन एण्ड कं., एलुर
- शा.अम्बालाल, दलीचन्द, बाबूलाल, शांतिलाल, प्रकाशचंद, नैनमल, उत्तमचंद, रमेशकुमार पुत्र पौत्र चमनाजी बुगामवाला-सुरापुर (कर्नाटका)
- शा. शांतिलालजी देवीचंदजी भंडारी, फर्म-स्वस्तिक ट्रेडिंग कं., हैदराबाद (आ.प्र.)
- स्व. कबदी हेमराजजी पूनमचंदजी की स्मृति में पुत्र नरेन्द्रकुमार दिलीपकुमार, पौत्र विनोद, अमीत, जसवंत, लोकेश और हरेश सायला निवासी, फर्म प्लायवुड सेन्टर, विजयवाड़ा
- मातुश्री सजनबाई स्व. श्री राजमलजी वीरचंदजी सेक्रेटरी पुत्र-पौत्र-प्रपौत्र शाह दिलीपकुमार, सचिनकुमार, सर्वेषकुमार, हार्दिक कुमार, रोशनकुमार, समस्त सेक्रेटरी परिवार कुक्षी (म.प्र.) फर्म- पक्षाल प्रोडक्ट, मूनलाईट रिचार्जेबल टॉर्च के निर्माता।
- जैन संघ - लाखणी
- भीनमाल निवासी श्री शोभालालजी भागचंदजी धोकड़ के पुत्र राजेन्द्रकुमार, पौत्र विक्रम, अभिषेक, परेश द्वारा,फर्म गौतम वस्त्र भंडार, गणेश चौक, भीनमाल जालोर (राज.)
- धाणसा निवासी संघवी स्व. सुखराजजी पिताजी की स्मृति में धर्मपत्नि-शांतिदेवी, पुत्र-सुमेरमल, अशोककुमार श्रीपाल, संजय, आकाश, अमृत
- कटारिया परिवार,फर्म शा. सुखराज पिताजी, विजयवाड़ा (आ.प्र.)
- सौधर्मवृहद तपोगच्छीय जैन श्वे. त्रि. श्री जैन संघ दाधाल
- आहोर निवासी संघवी मोहनलाल, तेजराज, प्रवीणकुमार, यतीन्द्र, राजेन्द्र, आशीष पुत्र-पौत्र वक्तावरमलजी हीराचन्दजी कुहाड़ परिवार आहोर नि. फर्म-राजेन्द्र पेपर्स, बैंगलौर
- रेवतड़ा (राज.) निवासी स्व. दरजमलजी, स्व. उकचन्दजी, स्व. हस्तीमलजी, स्व. तगराजजी की स्मृति में : हिराणी परिवार
- रेवतड़ा (राज.) निवासी स्व. शा. भारतमलजी भगाजी एवं धर्मपत्नी पातीबाई, पुत्र-मांगीलाल, गणपतराज, रमेशकुमार, कैलाशकुमार एवं समस्त संघवी वेदमुथा परिवार
- रेवतड़ा (राज.) निवासी संघवी पारसमल, नेमीचन्द, जितेन्द्र, संजय, रितेश, वेदमुथा परिवार
- थराद निवासी थरू फूलचंद, पानाचंद परिवार द्वारा आचार्यश्री जयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा. के चातुर्मास निमित्त
- स्व. मुनिराज श्री हरिशचंद्रविजयजी म.सा. की पुण्य स्मृति में आहोर नि.मुकेशकुमार गौतम गुलेच्छा, पुत्र पौत्र मोहनलालजी हिम्मतलालजी फर्म-अरविन्द टेक्सटाईल, राजमुद्री
- रेवतड़ा निवासी संघवी सोकलचंद, कानराज, अशोककुमार, अरविन्दकुमार, चन्द्रकान्त, अखिलकुमार पुत्र-पौत्र शा. इन्द्रमलजी भगाजी परिवार फर्मः शा. इन्द्रमलजी सुखराजजी, बैंगलोर
- उज्जैन निवासी शा. श्री चांदमलजी, नवीनकुमार, मुकेशकुमार, अंकितकुमार पुत्र-पौत्र श्री सेवारामजी बाफणा परिवार
- यतीन्द्र भवन जैन धर्मशाला-पालिताणा
- स्व. मातुश्री अमीयाबाई एवं स्व. भाई ओटमलजी की स्मृति में पुत्रवधु प्रसन्नदेवी पुत्र हेमराज पौत्र रोहित, मितेश चत्तरगोत्रा हस्तीमलजी धनाजी परिवार चौराऊ निवासी फर्म-पद्मावती मार्केटिंग-बेंगलौर (कर्नाटक)
- श्री सौधर्म वृहद तपोगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन संघ, सूरत

आचार्य श्री जयरत्नसूरीश्वरजी म. के सान्निध्य में गुरु प्रतिष्ठोत्सव सम्पन्न

मंदसौर नगर में

पुण्य सम्राट के पट्टधर सुविशाल गच्छाधिपति धर्म दिवाकर आचार्य देवेश श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. आदि श्रमण एवं श्रमणीवृंद की पावन निश्रा में

चैत्री ओली जी प्रारंभ-दिनांक 31 मार्च से 9 अप्रेल, धारणा 30 मार्च, पारणा 9 अप्रेल भारत के समस्त श्रीसंघों को मन्दसौर श्रीसंघ की ओर से भाव भरा 'सादर आमंत्रण' जिन महानुभावों को आराधना करने के भाव है वो अपना मोबाइल नं. नाम एवं शहर एवं ओली के वर्ण की समस्त जानकारी निम्नांकित मोबाइल नम्बर (वाट्सअप) पर सूचना देवें । अशोक खाबिया-9993132051, दिलीप कर्नावट-9406620381, नितेश पोरवाल-9425327776 मंदसौर में आयोजित समस्त धार्मिक अनुष्ठान में पधारकर श्रीसंघ को गौरवान्वित करें । आपका आगमन हमारा सौभाग्य ।

आयोजक एवं निमंत्रण द्वारा

* श्री सौधर्मवृहत्तपोगच्छीय जैन श्वेताम्बर त्रिस्तुतिक संघ मंदसौर
* श्री नवलखा पार्श्वनाथ जैन मंदिर समिति मंदसौर
* जैन शिक्षण प्रसार समिति मंदसौर

भारत सरकार पंजीयन क्रमांक 13067/57
Regd. News Paper Under Regn. No. CPMG KA/BG (S) 2005/2006-08
एल/RNP/MP/MANDSAUR/113/18-20
Posting Date at Mandsaur on 3rd Day of Every Month

त्रिवर्षीय शुल्क-400/- वर्ष-67, अंक-03 कुल पृष्ठ कवर सहित 112

पाटण नगर में कलेक्टर एवं एस.पी. गण गच्छाधिपतिश्री नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए ।

पाटण नगर में गच्छाधिपतिश्री के प्रवेश की झलकियाँ